डाक पंजीयन संख्या/643/2016-2018/2016
RNI-MPHIN/2015/62199

नई सोच, नई पहल

पुष्पांजली टुडे

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

वर्ष : 07 अंक : 10 | दिसंबर 2021 | मूल्य: ₹ 30 | पृष्ठ : 44

हर-हर काशी

उत्तरप्रदेश चुनाव

सिंहासन का घमासान

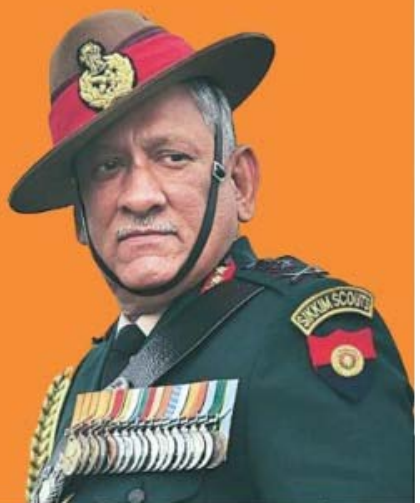

नहीं रहे देश के सीडीएस

संपादक की कलम से

अभी लापरवाही नहीं, मास्क पहनें

अभी कोरोना गया नहीं है बहुत कुछ कम हुआ है हमें लापरवाही बिल्कुल भी नहीं करनी है। नियमों का पालन करना है मास्क जरूर पहनना है और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करना है क्योंकि ओमीक्रॉन नामक एक नया वैरियंट भारत में आ चुका है ओमीक्रॉन के मामले भारत में मिलने लगे हैं जिससे कोरोना फैलने का डर बढ़ गया है इसलिए हमारा यह कर्तव्य है कि हम मास्क अवश्य लगाएं। देश में भी ओमिक्रॉन के मामले सामने आये हैं, वे अधिकांश विदेशों से आये लोगों में ही पाये गये हैं। सरकारें सुनिश्चित करें कि वे संक्रमण विस्तारक न बन पायें। हमारी चिंता सर्दी के मौसम में इसके विस्तार की अनुकूलता को लेकर भी होनी चाहिए क्योंकि इस मौसम में वायरस का फैलना स्वाभाविक है। हमें बचाव के उन तीन उपायों को ही अपनाना होगा, जिनका हमने पिछली दो लहरों के दौरान पालन किया। फिलहाल हमारी सजगता व सतर्कता ही हमारा प्राथमिक उपचार है। इस बीच अच्छी खबर यह है कि सीरम इंस्टिट्यूट ने तीन व उससे अधिक उम्र के बच्चों के लिये अगले छह महीनों में नोवावैक्स कोविड वैक्सीन लॉन्च करने की बात कही है। बेहद तेज गति से फैलने वाले नये कोरोना वायरस ओमिक्रॉन के दक्षिण अफ्रीका में मिलने के बाद इसका दुनिया के 63 देशों में पहुंचना चिंता का विषय है। निस्संदेह, इस बाबत किसी भी तरह की लापरवाही समस्या के जटिल होने का कारण बन सकती है। देखते ही देखते देश के छह राज्यों व दो केंद्रशासित प्रदेशों में इसके वायरस की दस्तक चिंता बढ़ाने वाली है। यह ठीक है कि देश में वयस्क आबादी के पचास फीसदी से अधिक लोगों को दोनों डोज़ लग चुकी हैं, लेकिन चिंता की बात है कि देश में कुछ वयस्कों के अलावा किशोरों व बच्चों का टीकाकरण अभी शुरू नहीं हुआ है।

ऐसे में विशेषज्ञ जहां बच्चों को वैक्सीन लगाने की जरूरत बता रहे हैं, वहीं दोनों टीके लगा चुके लोगों को भी बूस्टर डोज देने की बात कह रहे हैं। विकसित देशों के अध्ययन बता रहे हैं कि जिन लोगों को दो डोज़ वाली वैक्सीन के अलावा अन्य वैक्सीन दी गई, उनकी इम्यूनिटी में ज्यादा वृद्धि हुई है। ऐसे में हमारी कोवैक्सीन मददगार हो सकती है। हालांकि, अभी नये वेरिएंट को लेकर प्रामाणिक अध्ययन आने बाकी हैं, लेकिन इस वायरस के कोरोना संक्रमण और टीकाकरण से हासिल रोग प्रतिरोधकता को बेधने के संकेत हैं, जो चिंता की बात है। लेकिन वैज्ञानिक भरोसा दे रहे हैं कि टीका लगा चुके लोगों को संक्रमण गंभीर असर नहीं करता है और शुरुआती लक्षणों के बाद जल्दी ठीक होने की संभावना होती है। वायरस की संक्रमण दर तेज होने के बावजूद इससे गंभीर रूप से बीमार पड़ने तथा मरने के आंकड़े कम हैं।

बहरहाल, दूसरी लहर के वक्त देश ने संसाधनों के संकट व चिकित्सा तंत्र की नाकामी का जो हाल देखा, उसके चलते सरकार व समाज को सतर्क रहना जरूरी है। ऐसे में महाराष्ट्र, राजस्थान, आंध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक और चंडीगढ़ में इसके मामले प्रकाश में आने के बाद टेस्टिंग, ट्रैकिंग और ट्रीटमेंट की रणनीति को कारगर बनाने की जरूरत है। निस्संदेह वायरस अमेरिका व ब्रिटेन आदि देशों में जिस तेजी से पैर पसार रहा है, उसके चलते सरकारों के सामने नया संकट खड़ा हो गया है। कुछ यूरोपीय देशों में लॉकडाउन लगाने की घोषणा हुई है। वहीं वैक्सीन से हासिल सुरक्षा कवच को भेदने की आशंका से वायरस को लेकर सरकारों के हाथ-पैर फूले हुए हैं। खासकर टीकाकरण के दायरे से बाहर रहने वाले तबके को लेकर ज्यादा फिक्र है। आशंका है कि उनके लिये नये वायरस के संक्रमण से पिछली लहर जैसे घातक परिणाम सामने आ सकते हैं। दक्षिण अफ्रीका में ओमिक्रॉन से बच्चों के बड़ी संख्या में संक्रमित होने से सरकारें व अभिभावक चिंतित हैं, भारत जैसे सघन जनसंख्या घनत्व वाले देश में वायरस की चुनौती ज्यादा बड़ी है। तभी विशेषज्ञ शीघ्र बूस्टर डोज की वकालत कर रहे हैं। जरूरत जनवरी से जारी टीकाकरण अभियान में तेजी लाने की भी है। फिलहाल देश में अन्य वायरस से संक्रमित रोगियों की स्थिति आठ हजार के आसपास है, लेकिन मरने वालों का क्रम भी जारी है। देश में साढ़े तीन करोड़ लोगों के संक्रमित होने और तीन करोड़ चालीस लाख से अधिक का ठीक होना बताता है कि हम इसका मुकाबला मजबूती से कर सकते हैं। लेकिन ध्यान रहे कि हमने सरकारी आंकड़ों के मुताबिक दोनों लहरों में करीब पौने पांच लाख लोगों को खोया भी है।

भरत सिंह चौहान
संपादक

> **बेहद तेज गति से फैलने वाले नये कोरोना वायरस ओमिक्रॉन के दक्षिण अफ्रीका में मिलने के बाद इसका दुनिया के 63 देशों में पहुंचना चिंता का विषय है। निस्संदेह, इस बाबत किसी भी तरह की लापरवाही समस्या के जटिल होने का कारण बन सकती है। देखते ही देखते देश के छह राज्यों व दो केंद्रशासित प्रदेशों में इसके वायरस की दस्तक चिंता बढ़ाने वाली है। यह ठीक है कि देश में वयस्क आबादी के पचास फीसदी से अधिक लोगों को दोनों डोज़ लग चुकी हैं, लेकिन चिंता की बात है कि देश में कुछ वयस्कों के अलावा किशोरों व बच्चों का टीकाकरण अभी शुरू नहीं हुआ है।**

पुष्पांजली टुडे

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष 07, अंक 12, दिसंबर 2021

मूल्य 30 रु, पृष्ठ 44

संरक्षक	बहादुर सिंह चौहान
संपादक	भरत सिंह चौहान
प्रबंध संपादक	शैलेश सिंह कुशवाह
उपसंपादक	अर्पित गुप्ता
	शशिभूषण चौहान (मप्र)
	पुष्पेन्द्र तोमर
	संदीप प्रधान
	प्रदीप नागेन्द्र सिकरवार
	विपिन तोमर
कानूनी सलाहकार	एड. आर. के. जोशी
एडिटिंग	इमरान गौरी
राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी	आर एस रजक

रश्मि चौहान, न्यूज ऐंकर

ब्यूरो प्रमुख

पंकज त्रिपाठी	**मध्य प्रदेश**
राजानल शर्मा	**छत्तीसगढ़**
नरेन्द्र शर्मा	**हरियाणा**
केशव प्रसाद शर्मा	**चंबल संभाग**
ए. के. झा	**बिहार**
अमित कुमार	**जम्मू-कश्मीर (यूटी)**
अमन राय	**बर्दवान पश्चिम बंगाल**
नारायण लाल	**बेंगलुरु**
दीपक रलहन	**पंजाब**
नैनाराम सिरवी	**पाली, राजस्थान**
केवल राम मालवीय	इंदौर
हरिओम चतुर्वेदी	शिवपुरी
राजेश लोधी	रायसेन
रीतेश कटरे	बालाघाट
सुरजीत राजावत	ग्वालियर
नीतेश शर्मा	ग्वालियर
विनोद पाठक	श्योपुर
प्रेमकिशोर शर्मा	आगरा मंडल
शशिकांत खरे	झांसी
सोनू कुमार माथुर	एटा, (उत्तर प्रदेश)
प्रवेन्द्र सिंह	आगरा (उत्तर प्रदेश)
हरिनिवास दुबे	मथुरा (उत्तर प्रदेश)
रूपसिंह	इटावा, (उत्तर प्रदेश)
किरण राठौर	औरैया, (उत्तर प्रदेश)
अरूण शुक्ला	भिण्ड
मोहन मांझी	गोहद
अमित शर्मा	ग्वालियर

कार्यालय

जी. एस. प्लाजा, गोले का मंदिर ग्वालियर मध्य प्रदेश

हेल्पलाईन: 0751-4901403, 8269307478

www.pushpanjalitoday.com, Email-pushpanjalitoday@gmail.com

पुष्पांजली टुडे टीम

सादिक मिर्जा	ऑल इंडिया रिपोर्टर
संतोश सिंह भदौरिया	चम्बल संभाग
गौरव शर्मा	चम्बल संभाग
महेन्द्र शर्मा	चम्बल संभाग
राधा तोमर	अम्बाह
अंकित कुमार	अजीतमल, औरेया
भीमसेन तोमर	अम्बाह
सुनील सिंह तोमर	अम्बाह
ब्रजेश सिंह भदौरिया	फूप
रंजीत बघेल	सेंवढ़ा, दतिया
दीपक कुमार	खेरागढ़, आगरा
छोटे सिंह भदौरिया	मालनपुर
संतोष सिंह भदौरिया	गोरमी
हरिओम परिहार	खनियाधाना
हरिओम चतुर्वेदी	करैरा
अरिमर्दन सिंह भदौरिया	भिण्ड, क्राइम रिपोर्टर
निर्मला	भिण्ड
राहुल तलरेजा	मऊ, इंदौर
शिवकांत ओझा	रौन
आदित्य सिकरवार	पोरसा
वासुदेव मिश्रा	ग्वालियर
रवीना शर्मा	श्योपुर
अमित पाठक	ललितपुर उप्र
चेतना कारले	खरगोन
मुन्ना खान	खरगोन
उमाकांत शर्मा	भिण्ड
विवेक पाण्डेय	भिण्ड
बृजपाल सिंह गुर्जर	मेहगांव

इस अंक में

विजय दिवस.... 08

गृहमंत्री ने किया.... 16

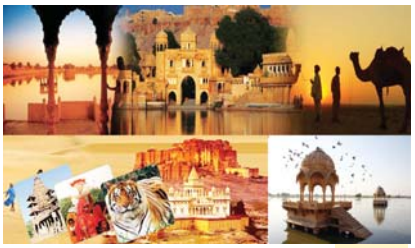

पर्यटन 38

बॉलीवुड में आईं... 39

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान। कंचन प्रिंटिंग प्रेस निम्बालकर का बाड़ा, तेजी की बजरिया नियर पी.एंड.एन. बैंक नया बाजार लश्कर ग्वालियर म.प्र. से मुद्रित तथा दीपू इलेक्ट्रोनिक्स हनुमान मंदिर के पास, गोवर्धन कॉलोनी भिण्ड रोड, गोला का मंदिर जिला ग्वालियर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक भरत सिंह चौहान। (समाचारों के चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार) दूरभाष 8269307478

प्राचीन सनातन संस्कृति और आधुनिकता का अद्भुत संगम

काशी विश्वनाथ कॉरिडोर

देश के बहुसंख्यक हिंदू समाज के बहुत सारे लोगों की यह एक आम धारणा बन गयी थी कि सरकारों के द्वारा वोटबैंक की राजनीति के चलते भारत में सनातन धर्म के पौराणिक प्राचीन मंदिरों व अन्य स्थलों का भी ध्यान नहीं रखा जा रहा है। लेकिन जब केंद्र में मोदी व उत्तर प्रदेश में योगी की सरकार आयी तो कुछ लोगों को लगने लगा था कि अब शायद सनातन धर्म के अनुयायियों व उनके पौराणिक प्राचीन मंदिर व अन्य धर्म स्थलों की उपेक्षा नहीं होगी। केंद्र की मोदी सरकार ने बहुसंख्यक जनसमुदाय की इस बड़ी उम्मीद पर खरा उतरते हुए प्रसाद स्कीम के तहत देश में विभिन्न प्राचीन धर्म स्थलों के जीर्णोद्धार करवाने की एक बेहतरीन शुरुआत की, काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का भव्य निर्माण भी केंद्र सरकार की उस महत्वपूर्ण प्रसाद स्कीम का ही एक हिस्सा है। केंद्र सरकार की प्रसाद स्कीम की इस कड़ी में ही उत्तर प्रदेश के वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर कॉरिडोर के निर्माण का नंबर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वजह से शीर्ष पर आया और अब मोदी के सपनों का काशी का शिवधाम प्राचीन व आधुनिकता के संगम के साथ पूर्ण भव्यता के साथ बनकर पूर्ण हो गया है।

13 दिसंबर 2021 के दिन काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का भव्य, अलौकिक, अकल्पनीय विशाल कार्यक्रम में लोकार्पण हुआ। भगवान शिव के इस प्राचीन दिव्य धाम के भव्य आलौकिक लोकार्पण को दुनिया ने देखा। चुनावी वर्ष में विकास पथ व भगवान भरोसे बैठी भाजपा उत्तर प्रदेश के चुनावों में इस मौके का पूरा लाभ लेना चाहती है। लोकार्पण के समय भाजपा संगठन ने देश के 27 हजार शिवालयों में पूजा-अर्चना करके लोगों को इस कार्यक्रम से जोड़ने का कार्य किया। भाजपा संगठन ने 15,444 मंडलों में 51 हजार स्थानों पर लोकार्पण समारोह का लाईव प्रसारण करवाकर देश के बहुसंख्यक सनातन धर्म के अनुयायियों में भविष्य में अपनी पकड़ और मजबूत करने का प्रयास किया।

शिव धाम के लोकार्पण के इस कार्यक्रम में देश के दिग्गज 500 संतों के अलावा 2500 अतिथि शामिल हुए। गंगा के घाटों पर 11 लाख दीप प्रज्वलित करके भव्य दीपोत्सव मनाया गया, वाराणसी को विशेष रूप से सजाया गया। वाराणसी के हर घर में प्रसाद व दिव्य काशी-भव्य काशी के संबंध में सरकारी पुस्तिका को भेजा जायेगा। लोकार्पण के कार्यक्रम से देश व उत्तर प्रदेश के लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ने के लिए पूरे उत्तर प्रदेश में 13 दिसंबर से मकर संक्रांति 14

महीने भर में आठ दौरों से यूपी के चप्पे-चप्पे को दी सौगातें

उत्तर प्रदेश की सियासी जमीन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बेहद सक्रिय हैं। बीते एक माह में मोदी ने राज्य के आठ दौरों में प्रदेश के हर कोने में जाकर पूरे राज्य को मथ डाला है। इस दौरान उन्होंने राज्य के लोगों को न केवल तमाम विकास योजनाओं की सौगात दी है, बल्कि आस्था, धर्म, समाज के प्रति भी अपनी प्रतिबद्धता जताई है। मोदी के राज्य के दौरे आगे भी जारी रहेंगे। चुनावी मौसम में मोदी के इस अभियान से विरोधी दलों की रणनीति के लिए दिक्कतें हो सकती है। वाराणसी से सांसद होने के कारण उत्तर प्रदेश से प्रधानमंत्री मोदी का विशेष रिश्ता है, लेकिन बीते एक माह में उनकी सक्रियता सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश में ही रही है। उत्तर प्रदेश में फरवरी-मार्च में विधानसभा चुनाव होने हैं, ऐसे में मोदी की इस सक्रियता का अलग महत्व है। मोदी के ये दौरे इसलिए भी अहम हैं, क्योंकि इसमें उन्होंने खेती, किसानी, सिंचाई, खाद, एक्सप्रेस वे, रक्षा से लेकर तमाम परियोजनाओं को पूरा कर समर्पित किया है। इसमें भी हाल का 13-14 दिसंबर का दिव्य व भव्य काशी की परिकल्पना को साकार करने वाले काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का उद्घाटन सबसे अहम है।

विपक्ष की धार को कुंद करने की कोशिश

मोदी के इन धुआंधार दौरों के चलते चुनावी मौसम में योगी सरकार को घेर रहे विपक्ष को कुछ दिक्कतें हो सकती हैं। सबसे ज्यादा असर मीडिया में जगह को लेकर हो सकती है। साथ ही जनता में भी चर्चा में बदलाव आ सकता है। विपक्ष और उसके नेताओं को जो जगह मिलनी चाहिए थी, वह नहीं मिल पाएगी। बीते एक माह में उत्तर प्रदेश में मोदी और योगी के साथ उद्घाटनों की ही चर्चा है। सरकार को घेरने की कोशिश कर रहे विपक्षी दलों को अपनी बातों को प्रभावी ढंग से रखने का मौका ही नहीं मिल पा रहा है। भाजपा की कोशिश है कि चुनावों तक इसी तरह का माहौल बनाए रखा जाए, जिसमें विपक्ष को ज्यादा मौका नहीं मिल पाए।

नए हालात में भी सक्रिय हैं मोदी

मोदी को प्रधानमंत्री बने सात साल हो गए हैं। इस दौरान देश के हर राज्य में चुनाव हुए हैं। उत्तर प्रदेश में भी 2017 में चुनाव हुए थे, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी की इतनी अधिक सक्रियता तब भी नहीं थी। हालांकि उस समय उत्तर प्रदेश में पार्टी ने कोई चेहरा नहीं रखा था। ऐसे में अमित शाह की रणनीति में मोदी के इर्दगिर्द ही चुनावी तामझाम था, लेकिन अब उसके पास मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का चेहरा है, इसके बावजूद मोदी की सक्रियता को काफी अहम माना जा रहा है। इसकी एक वजह यह भी है कि उस समय सरकार कामों की शुरुआत कर रही थी और अब उनको पूरा कर लोगों को समर्पित कर रही थी। इसलिए भी इसका अलग महत्व है। राजनीतिक दृष्टि से भी इसका अलग महत्व है। एक तरह से मोदी खुद ही अभियान का नेतृत्व करते नजर आ रहे हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि उत्तर प्रदेश के चुनावी समीकरणों में कांग्रेस व बसपा का कमजोर होना भाजपा के लिए दिक्कतें बढ़ा सकता है। इसमें भाजपा विरोधी चाहे अनचाहे सपा के साथ आ सकते हैं। इसलिए भाजपा को अपनी ताकत और ज्यादा बढ़ाने की जरूरत है और वह काम सिर्फ मोदी ही कर सकते हैं।

क्या अन्य राज्यों में भी होगी ऐसी रणनीति ?

सबसे अहम सवालों में एक सवाल यह भी है कि प्रधानमंत्री मोदी की उत्तर प्रदेश में जो सक्रियता है, वहा क्या आगे आने वाले अन्य राज्यों के चुनाव में भी होगी? क्योंकि आने वाले चुनाव भी चुनौती भरे होंगे। क्या यह भाजपा की नई रणनीति का हिस्सा है। इस पर भाजपा फिलहाल साफ-साफ कुछ भी नहीं कह रही है। उसका कहना है कि हर चुनाव अलग होता है और रणनीति भी अलग होती है। राजनीति में आमतौर पर मुख्यमंत्री रहते मोदी के गुजरात मॉडल की चर्चा होती रही है, लेकिन अब मोदी ने भव्य व दिव्य काशी के जरिए एक और नई चर्चा शुरू की है।

जनवरी तक पूरे एक महीने तक विभिन्न कार्यक्रम चलेंगे, इन कार्यक्रमों में पार्टी के बड़े जनप्रतिनिधि हिस्सा लेंगे। सबसे अच्छी बात यह है कि इस भव्य प्रोजेक्ट का कार्य पूरा हो चुका है। निर्माण कार्य में लगी मशीनें परिसर से बाहर आ चुकी हैं। इस प्रोजेक्ट की महत्वपूर्ण बात यह है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ खुद निरंतर इस प्रोजेक्ट की निगरानी कर रहे थे। पीएम मोदी का यह ड्रीम

प्रोजेक्ट पूरा होना काशी के लोगों व भगवान बाबा काशी विश्वनाथ के दर्शनार्थियों के लिए किसी सपने के सच होने जैसा है। बाबा काशी विश्वनाथ के दर्शन के लिए निरंतर आने वाले भक्त इस प्रोजेक्ट की भव्यता, आधुनिकता व प्राचीनता के अलौकिक संगम को देखकर अचंभित हो रहे हैं। काशी (वाराणसी) को दुनिया के सबसे प्राचीन नगरों में एक माना जाता है। इस नगरी को सनातन संस्कृति का दुनिया भर में एक प्रमुख केंद्र माना जाता है, वहीं काशी को भारत की धार्मिक राजधानी भी माना जाता है।

काशी विश्वनाथ में कॉरिडोर निर्माण से पहले किसी दर्शनार्थी के लिए काशी विश्वनाथ मंदिर के दर्शन करना एक बहुत बड़ी चुनौती थी। उसको बेहद भीड़भाड़ से

जद्दोजहद करते हुए बेहद तंग गलियों वाले रास्तों पर अव्यवस्थित व्यवसायिक गतिविधियों वाली अतिक्रमण युक्त गलियों से निकल कर जाना होता था। इन तंग गलियों से निकल कर लंबी लाइन में घंटों इंतजार करना होता था। प्रसाद वाले, फूल वाले और सुरक्षा में लगे पुलिस वालों की अव्यवस्थित भीड़ को देखकर दर्शनार्थियों को डर लगता था। लेकिन नवनिर्मित काशी विश्वनाथ कॉरिडोर अब भक्तों को इन सब समस्याओं से मुक्ति दिलायेगा। उसी उद्देश्य के लिए कभी बनारस की तंग गलियों में स्थित बाबा काशी विश्वनाथ मंदिर के इर्द-गिर्द मोदी-योगी सरकार ने बहुत बड़े स्तर पर अधिग्रहण करके बड़े बदलाव किये हैं। प्राचीन व आधुनिकता के अनूठे दिव्य अलौकिक संगम के साथ मोदी-योगी की सरकार ने भव्य काशी विश्वनाथ कॉरिडोर बनाने का कार्य किया है। विश्वनाथ धाम के विस्तारीकरण और सुंदरीकरण परियोजना के तहत 5 लाख 27 हजार 730 वर्ग फीट में भव्य निर्माण किया है। इस प्रोजेक्ट की लागत लगभग 1000 करोड़ है और इसका उद्देश्य बाबा काशी विश्वनाथ मंदिर के आसपास के इलाकों को आधुनिक व प्राचीन के संगम के साथ दोबारा भव्य बनाना था, जिसमें केंद्र व उत्तर प्रदेश सरकार काफी हद तक कामयाब होती नज़र आ रही है। मंदिर के पुनर्निर्माण में भव्यता प्रदान करने के लिए पत्थर वैसे ही लगाए जा रहे हैं जैसे हजारों वर्ष पहले लगाये जाते थे। मुख्य मंदिर परिसर के चार भव्य द्वार होंगे, इनसे आप मंदिर, घाट और शहर की तरफ से आ सकते हैं, लेकिन परिसर में घुसते ही बाबा विश्वनाथ के दर्शन नहीं होंगे, गंगा घाट की तरफ से भी पहले पायदान पर दर्शन नहीं होगा, दर्शन के लिए श्रद्धालु को मंदिर के भीतर आना ही होगा, भव्य परिसर में विश्वानाथ मंदिर के आसपास में खुली जगह बनाई गई है, मुख्य परिसर के बाहर भी एक बड़ा परिसर है जहां शॉपिंग व श्रद्धालुओं के लिए अन्य सुविधाओं की व्यवस्था होगी।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बाबा विश्वनाथ धाम में पर्यावरण संरक्षण का पूरा ध्यान रखा गया है, मंदिर के आंगन में भगवान भोलेनाथ का सबसे प्रिय पौधा रुद्राक्ष लगाया जा रहा है। इसके अलावा पारिजात, अशोक, बेल के पौधे भी अपनी प्राकृतिक हरियाली बिखेरेंगे। बाबा के दिव्य मंदिर के दर्शन के लिए भक्त जब माँ गंगा में श्रद्धा के गोते लगाकर जल लेकर बाबा विश्वनाथ के दरबार की तरफ आस्था से परिपूर्ण अपना एक-एक कदम बढ़ाएंगे, तब श्रद्धालु को दोनों तरफ हरियाली का अद्भुत मनमोहक दृश्य बार-बार शिव धाम आने के लिए प्रेरित करेगा और मानसिक शांति व सुकून प्रदान करेगा।

काशी विश्वनाथ धाम को नया रूप मिला तो करोड़ों गरीबों को भी घर मिले

पीएम नरेंद्र मोदी ने काशी विश्वनाथ कॉरिडोर को राष्ट्र को समर्पित करते हुए प्राचीन नगरी का महत्व बताया और कहा कि यहां सिर्फ डमरू वाले बाबा की ही चलती है। यही नहीं पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि काशी तो अविनाशी है और इसे कोई नुकसान नहीं पहुंचा पाया। पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि आततायियों ने इस शहर पर हमले किए। औरंगजेब ने तलवार के दम पर संस्कृति को कुचलने की कोशिश की। लेकिन भारत की मिट्टी अलग ही है। यहां कोई औरंगजेब आता है तो शिवाजी उठ खड़े होते हैं और जब कोई सालार मसूद आता है महाराजा सुहेलदेव भी जवाब देने आते हैं। उन्होंने कहा कि काशी वह स्थान है, जहां जगदगुरु शंकराचार्य को डोमराजा की पवित्रता से प्रेरणा मिली। यहीं पर तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना की थी और कबीरदास से लेकर रविदास तक की धरती यह काशी बनी। छत्रपति शिवाजी महाराज ने यहां प्रेरणा पाई। जैसे काशी अनंत है, ऐसे ही उसका योगदान भी अनंत है। उन्होंने कहा कि काशी पर औरंगजेब ने अत्याचार किए। यहां मंदिर तोड़ा गया तो माता अहिल्याबाई होलकर ने इसका निर्माण कराया। उनकी जन्मभूमि महाराष्ट्र थी और इंदौर कर्मभूमि था। 250 साल पहले उन्होंने जो किया था, उसके बाद से अब जाकर यह बड़ा काम हुआ है। पूज्य नानकदेव जी काशी आए थे और महाराजा रणजीत सिंह ने 23 मन सोना दान किया था। यही भारत की एकता का सूत्र है। अपने संसदीय क्षेत्र आए पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज का भारत हीनता के विचार से बाहर निकल रहा है। आज का भारत सिर्फ सोमनाथ मंदिर का सौंदर्यीकरण ही नहीं करता बल्कि ऑप्टिकल फाइबर भी बिछा रहा है। एक तरफ केदारनाथ मंदिर का पुनरुद्धार हो रहा है तो वहीं हम इसरो के मिशन भी लॉन्च कर रहे हैं। आज का भारत न सिर्फ बाबा विश्वनाथ धाम को नया रूप दे रहा है बल्कि करोड़ों गरीबों के घर भी बन रहे हैं। आज भगवान राम से जुड़े स्थानों को जोड़ा जा रहा है। करतारपुर कॉरिडोर का निर्माण हुआ है तो हेमकुंड साहिब के दर्शन के लिए रोपवे बनाने की तैयारी है। पीएम नरेंद्र

मोदी ने कहा कि हमारे पुराणों में कहा गया है कि काशी में जैसे ही कोई आता है तो सारे बंधनों से मुक्त हो जाता है। आज आदिकाशी की अलौकिकता में एक अलग ही आभा और स्पंदन है। शाश्वत बनारस में आज अलग ही सामर्थ्य दिख रहा है। कहा जाता है कि जब कोई अलौकिक होता है तो सारी शक्तियां काशी में बाबा के दरबार में आ जाती हैं। ऐसा लग रहा है कि हमारा पूरा चैतन्य ब्रह्मंड इससे जुड़ा हुआ है। बाबा की लीला बाबा ही जानें। उन्होंने कहा कि आज विश्वनाथ धाम अनंत ऊर्जा से भरा हुआ है। उसका वैभव विस्तार ले रहा है। उसकी विशेषता आसमान छू रही है। यहां आसपास जो अनेक प्राचीन मंदिर जो लुप्त हो गए थे, उन्हें भी पुनर्स्थापित किया जा चुका है। बाबा अपने भक्तों की सदियों की सेवा से प्रसन्न हुए हैं। इसलिए उन्होंने आज के दिन हमें यह आशीर्वाद दिया है।

करगिल युद्ध में लिया हिस्सा, 7000 लोगों की बचाई जान, सीमा पार आतंकियों पर प्रहार, शानदार रहा है जनरल रावत का मिलिट्री करियर

माँ भारती के जांबाज वीर सपूत, अदम्य साहस की साक्षात प्रतिमूर्ति थे बिपिन रावत

चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल बिपिन रावत की एक हेलिकॉप्टर दुर्घटना में हुई असामयिक मौत ने पूरे देश को स्तब्ध कर दिया है। आतंकियों को घर में घुसकर मारने वाली सर्जिकल स्ट्राइक के चाणक्य, माँ भारती के जांबाज वीर सपूत, अदम्य साहस की साक्षात प्रतिमूर्ति, देश पर अपना सर्वस्व कुर्बान करने के लिए हर वक्त तत्पर रहने वाले एक महान योद्धा और देश के पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) के पद को सुशोभित करने वाले वीर जनरल बिपिन रावत के असमय निधन ने प्रत्येक देशभक्त भारतीय को झकझोर कर रख दिया। जिस तरह से देश ने 8 दिसंबर 2021 बुद्धवार को माँ भारती की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले इस बहादुर योद्धा को एक आकस्मिक हेलीकॉप्टर दुर्घटना में खो दिया, वह देश के अपूरणीय क्षति है।

उनकी अगुआई में सेना एक साथ दो सरहदों पर तनाव से उपजी असाधारण चुनौतियों का बड़ी कुशलता से सामना कर रही थी। देश के पहले सीडीएस के रूप में उन्होंने भारतीय सेना के आधुनिकीकरण और एकीकरण (थिएटराइजेशन) की भी प्रक्रिया शुरू करवाई। हालांकि ये दोनों कार्य आसान नहीं थे, इनमें कई सारी जटिलताएं थीं। इसलिए ये प्रक्रिया तेजी से नहीं आगे बढ़ पा रही थी, लेकिन अपनी प्रकृति के अनुरूप जनरल रावत एक-एक कर के सभी मुश्किलें दूर करने में लगे हुए थे। उन्होंने ठान रखा था कि बतौर सीडीएस कार्यकाल पूरा होने तक इन दोनों प्रक्रियाओं को एक मुकाम तक जरूर पहुंचा देंगे। जनरल रावत अप्रिय होने का जोखिम उठाकर भी कड़े फैसले लेने के लिए जाने जाते थे। वह खुलकर अपनी बात रखने में यकीन रखते थे।

जनरल बिपिन रावत अपनी रणनीतिक क्षमता, अपने विजन और व्यापक अनुभव की बदौलत कठिन चुनौतियों के बीच सेना का सफलतापूर्वक मार्गदर्शन करते रहे। उन्हें नॉर्थन और ईस्टर्न दोनों कमांड में काम करने का अनुभव था। इसके अलावा वह सदर्न कमांड का भी नेतृत्व कर चुके थे। वह जम्मू कश्मीर और नॉर्थ ईस्ट दोनों जगहों पर काउंटर इंसर्जेंसी ऑपरेशंस का हिस्सा रहे थे और 1987 में सुमदोरॉन्गचू में पीपल्स लिबरेशन आर्मी से हुई झड़प के दौरान उनकी बटालियन अरुणाचल प्रदेश में एलएसी पर तैनात थी। ऐसे साहसी, अनुभव संपन्न और दूरदर्शितापूर्ण जनरल का एक हेलिकॉप्टर दुर्घटना में इस तरह चला जाना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। हालांकि कुछ हलकों से साजिश की आशंका भी व्यक्त की गई है, लेकिन ऐसे संवेदनशील मामलों में किसी भी तरह की कयासबाजी से बचा जाना चाहिए। हां किसी तरह के संदेह के लिए गुंजाइश भी नहीं छोड़ी जानी चाहिए। दुर्घटना के हालात की जांच के आदेश दे दिए गए हैं। घटनास्थल से ब्लैकबॉक्स और वॉयस रिकॉर्डर भी बरामद हो चुके हैं। इसलिए उम्मीद की जानी चाहिए कि जांच में इस मामले का पूरा सच सामने आ जाएगा और ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना की पुनरावृत्ति रोकने के लिए सभी आवश्यक कदम यथाशीघ्र उठाए जाएंगे। फिलहाल पहली जरूरत जनरल बिपिन रावत की जगह किसी अन्य काबिल ऑफिसर को सीडीएस पद पर नियुक्त करने की है ताकि सेना का यह सर्वोच्च पद अधिक समय तक खाली न रहे। अच्छी बात है कि यह प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

यूएन मिशन के भागीदार के रूप में काम करते हुए बचाई 7000 लोगों की जान

बिपिन रावत का जन्म 16 मार्च 1958 को देहरादून में हुआ। सेना के प्रति उनकी रूचि मिलिट्री बैकग्राउंड की वजह से हुई। बिपिन रावत के पिता एलएस रावत भी फौज में थे। वो भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट जनरल के पद पर थे। बिपिन रावत की पढ़ाई लिखाई शिमला के सेंट एडवर्ड स्कूल में हुई। जिसके बाद उन्होंने इंडियन मिलिट्री एकेडमी देहरादून से उन्होंने ग्रैजुएशन किया। उनकी परफोर्मेंस को देखते हुए उन्हें स्वॉर्ड ऑफ ऑनर से सम्मानित किया गया। उसके बाद उन्होंने अमेरिका में पढाई करने का मन बनाया और वो अमेरिका चले गये यहाँ उन्होंने सर्विस स्टाफ कॉलेज में ग्रेजुएट किया। साथ में उन्होंने हाई कमांड कोर्स भी किया फिर अमेरिका से लौटने के बाद रावत ने सेना में जाने का मन बनाया। 1978 के दिसंबर में बिपिन रावत की सेना में एंट्री हुई। उन्हें गोरखा राइफल्स की पांचवीं बटालियन में जगह मिली। यहीं से बिपिन रावत के सैन्य सफर की शुरुआत हुई।

कारगिल युद्ध में लिया हिस्सा

जनरल रावत ने 1999 में पाकिस्तान के साथ हुए कारगिल युद्ध में हिस्सा लिया था। इस युद्ध में भारत को जीत मिली थी। सरकार ने 2001 में उस समय के उपप्रधानमंत्री लाल कृष्ण आडवाणी की अध्यक्षता में कारगिल युद्ध की समीक्षी के लिए ग्रुप ऑफ मिनिस्टर्स का गठन किया था। इस जीओएम ने युद्ध के दौरान भारतीय सेना और वायुसेना के बीच तालमेल की कमी का पता लगाया था। इसी समूह ने चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ की नियुक्ति की सिफारिश की थी। 41 साल के कैरियर में बिपिन रावत को बहादुरी के लिए कई सारे अवॉर्ड मिले हैं। 2008 में कांगो में यूएन पीस कीपिंग ऑपरेशन में इंडियन ब्रिगेड के चीफ रहे। वहां उन्होंने अपने लीडरशिप से काफी सराहना प्राप्त की। उस समय एक बड़ा हादसा हुआ। बिपिन रावत ने समय रहते और अपनी सतर्कता से 7000 लोगों की जान बचाई थी।

साल 2015 में भी हुआ था विमान हादसा

सीडीएस रावत के हेलीकॉप्टर क्रैश होने के ये पहला मामला नहीं है। इससे पहले भी उनका विमान छह साल पहले दुर्घटनाग्रस्त हो चुका है। ये घटना 3 फरवरी 2015 की है। उस वक्त बिपिन रावत थल सेना अध्यक्ष नहीं बने थे। बिपिन रावत सेना की नगालैंड के दिमापुर स्थित 3-कोर के हेडक्वार्टर के प्रमुख का पद संभाल रहे थे। दिमापुर से रावत अपने चीता हेलिकॉप्टर में सवार होकर निकले,

लेकिन कुछ ऊंचाई पर उनके चॉपर का नियंत्रण खो गया और हेलिकॉप्टर क्रैश हो गया। बताया जाता है कि हादसे के पीछे इंजन फेल होने का कारण था। आई थी। उस वक्त सेना ने अपने आधिकारिक बयान में कहा था कि हेलिकॉप्टर जमीन से कुछ मीटर की ऊंचाई तक ही पहुंच पाया था। इसी दौरान सिंगल इंजन के इस चॉपर में कुछ गड़बड़ी आ गई और इसके दोनों पायलटों का नियंत्रण छूट गया। लेकिन क्रैश में किसी की भी जान जाने की खबर नहीं आई थी। इस घटना में भी वायुसेना ने उच्चस्तरीय जांच बिठाई थी।

देश के 27वें थल सेनाध्यक्ष

जनरल विपिन रावत सितंबर 2016 में भारतीय सेना के वाइस चीफ बने थे। रावत ने जनरल दलबीर सिंह के रिटायर होने के बाद भारतीय सेना की कमान 31 दिसंबर 2016 को संभाली थी। दिसंबर 2016 में भारत सरकार ने जनरल बिपिन रावत से वरिष्ठ दो अफसरों लेफ्टिनेंट जनरल प्रवीन बक्शी और लेफ्टिनेंट जनरल पीएम हारिज को दरकिनार कर भारतीय सेना प्रमुख बना दिया। जनरल बिपिन रावत गोरखा ब्रिगेड से निकलने वाले पांचवे अफसर हैं जो भारतीय सेना प्रमुख बनें।

बॉर्डर पार दहशतगर्दों पर करारा जवाब

जनरल बिपिन रावत के नेतृत्व में सेना ने सीमा पार जाकर आतंकी शिविरों को ध्वस्त कर कई आतंकियों को ढेर किया था। मणिपुर में हुए एक आतंकी हमले में 18 सैनिक शहीद हुए थे। इसके जवाब में सेना के कमांडों ने म्यांमा की सीमा में दाखिल होकर हमला किया था। इस हमले में एनएससीएन के कई आतंकी मार गिराए गए थे। यह अभियान चलाया था 21 पैरा ने, जो थर्ड कॉर्प्स के तहत काम करता था। उस समय थर्ड कॉर्प्स के कमांडर बिपिन रावत ही थे। इसके अलावा जम्मू कश्मीर के उरी स्थित सेना के ब्रिगेड हेडक्वार्टर पर आतंकियों ने हमला किया, जिसमें 19 सैनिक शहीद हो गए थे। इसके बाद सीमा पार जाकर आतंकी शिविरों पर स्ट्राइक का फैसला लिया गया। इस पर सेना ने 28-29 सितंबर की रात पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में जाकर आतंकी शिविरों पर करारा प्रहार किया। जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद के खिलाफ सेना ने जनरल बिपिन रावत के नेतृत्व में ही ऑपरेशन आल आऊट की शुरुआत की थी। इस ऑपरेशन में घाटी में छिपे आतंकियों को चुन-चुन कर मारा गया। जनरल बिपिन रावत ने घाटी में ऐसी रणनीति तैयार की जिसमें आतंकी फंसकर रह गए। आतंकी बुरहान वानी समेत हिज्बुल, लश्कर, जैश के टॉप कमांडर ढेर किया गया।

अब अगला सीडीएस कौन होगा?

जनरल बिपिन रावत के निधन के बाद सबसे बड़ा सवाल ये है कि देश का अब अगला सीडीएस कौन होगा? पीएम मोदी अक्सर सरप्राइज देकर चौंकाने के लिए जाने जाते हैं और सरकार किसे अगला चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ चुनेगी ये तो कोई नहीं जानता। लेकिन संभावनाएं जरूर व्यक्त की जा रही हैं। पद इतना अहम है और किसी वरिष्ठ और अनुभवी अधिकारी को ही इसके लिए चुना जा सकता है। देश के मौजूदा आर्मी चीफ जनरल मनोज मुकुंद नरवणे जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्हें कश्मीर और पूर्वोत्तर भारत में काउंटर इंजसर्जेंसी ऑपरेशन का जबरदस्त अनुभव है। जनरल बिपिन रावत के निधन के बाद चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ के पद के लिए जनरल एमएम नरवणे की दावेदारी सबसे मजबूत दिख रही है। सीडीएस के तौर पर वरिष्ठता के तौर पर हाल के दिनों में रिटायर होने वाले नामों को देखें तो एडमिरल करमवीर जो कि फॉर्मर नेवी चीफ हैं। इसके अलावा एयर चीफ मार्शल बीएस धनोवा जो कि रिटायर्ड एयर फोर्स चीफ हैं। उनके अलावा अगर कोई और भी होता है। कौन नया सीडीएस होगा या फिर कोई अंतरिम सीडीएस होगा जो उनका पदभार संभालेगा उसकी भी संभावनाएं बनती है। सेना के तीनो प्रमुख अंगों की बात करें तो साल 2016 के मई के महीने में तत्कालीन रक्षा मंत्री मनोहर पार्रिकर ने लेफ्टिनेंट जनरल डीबी शेकतकर की अगुवाई में 11 सदस्यों की एक एक्सपर्ट कमेटी बनाई थी। इस कमेटी का उद्देश्य सैन्य क्षमता को बढ़ाना और रक्षा खर्च को संतुलित करने के अपायों को सुझाना था। 2016 में ही दिसंबर के महीने में शेकतकर कमेटी ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुक की। इस रिपोर्ट में कई प्रकार के सैन्य सुधारों की बाते की गई, मसलन इंजीनियरिंग कोर का आकार घटाना, गोली बारी की ट्रेनिंग का खर्च सिम्युलेटर की मदद से कम करने की बात कही गई। इसके साथ ही इस रिपोर्ट में चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ यानी सीडीएस के पद के गठन की सिफारिश भी की गई। 20 अप्रैल, 2020 को दिल्ली में हुई एक हाई लेवल मीटिंग में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शेकतकर कमेटी की सिफारिशों का रिव्यू भी किया था। इस मीटिंग में सीडीएस जनरल बिपिन रावत, आर्मी चीफ जनरल एमएम नरावने, नेवी चीफ एडमिरल करमबीर सिंह, एयर चीफ मार्शल आर के एस भदौरिया, रक्षा सचिव अजय कुमार और डीआरडीओ चेयरमैन जी सतीश रेड्डी शामिल थे। किसी सेना प्रमुख को सीडीएस बनाए जाने पर आयु सीमा का नियम बाधा न बने, इसलिए सीडीएस पद पर रहने वाले अधिकारी अधिकतम 65 साल की आयु तक इस पद पर काम कर सकेंगे। सेना प्रमुख अधिकतम 62 साल की आयु या 3 वर्ष के कार्यकाल तक अपने पद पर रह सकते हैं। इसके लिए केंद्र सरकार ने सेना के नियम 1954, नौसेना (अनुशासन और विविध प्रावधान) विनियम 1965, सेवा की शर्तें और विविध विनियम 1963 और वायु सेना विनियम 1964 में संशोधन किया है।

क्या होता है सीडीएस का रोल

जनरल बिपिन रावत ने जनवरी 2020 को देश के पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ का पद ग्रहण किया। वो 31 दिसंबर 2019 को भारतीय सेना के पद से रिटायर हुए थे। सीडीएस फोर स्टार जनरल होंगे जिनकी सैलरी सर्विस चीफ (आर्मी चीफ, नेवी चीफ, एयरफोर्स चीफ) के बराबर होती है। पहले इसे पांच स्टार देने पर विचार हो रहा था। लेकिन फील्ड मार्शल को ही पांच स्टार मिलता है। ऐसा होने से ये प्रिंसिपल सेक्रेटरी से भी ऊपर हो जाता। बाद में चार स्टार जनरल की रैंकिंग देने पर सहमति बनी। सीडीएस के पास सेक्रेटरी लेवल की पावर होती है। उनके पास फाइनेंशियल पावर होती है और वह फाइल सीधे रक्षा मंत्री को भेज सकते हैं उन्हें डिफेंस सेक्रेटरी के जरिए जाने की जरूरत नहीं होती। सीडीएस बनने के बाद अपने पद से मुक्त होने के बाद कोई सरकारी पद नहीं लिया जा सकता है। साथ ही पदमुक्त होने के बाद पांच साल तक बिना इजाजत के कोई प्राइवेट जॉब जॉइन नहीं कर सकते। सीडीएस के पास सेनाओं में किसी कमांड का नियंत्रण नहीं होता। वो सेनाओं के बीच कमांड एंड कंट्रोल के ढांचे में सबसे ऊपर हैं। उनकी पहुंच सीधे रक्षा मंत्री तक होती है। जरूरत पड़ने पर रक्षा मंत्री से जमीनी टुकड़ियों तक कम समय में इनपुट पहुंचाना और वहां से कम से कम समय में मंत्रालय तक इनपुट पहुंचे सीडीएस उसे सुनश्चित करते हैं।

कई बड़े सम्मान मिले

जनरल बिपिन रावत को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए परम विशिष्ठ सेवा मेडल दिया गया था, उन्हें उत्तम युद्ध सेवा मेडल, अति विशिष्ठ सेवा मेडल, युद्ध सेवा मेडल, सेना मेडल, विशिष्ठ सेवा मेडल जैसे बेहद महत्वपूर्ण सम्मानों से समय-समय पर सम्मानित किया गया था, उन्हें स्वॉर्ड ऑफ़ ऑनर से भी सम्मानित किया गया था। जनरल बिपिन रावत ने अपने बुलंद हौसलों के दम पर उत्तराखंड के पौड़ी जनपद के छोटे से सैण गांव से दिल्ली के ताकतवर सत्ता के गलियारों रायसीना हिल्स तक का सफर पूर्ण स्वाभिमान के साथ तय किया था। उनको 31 दिसंबर 2016 को सेनाध्यक्ष नियुक्त किया गया था, जनरल रावत को 30 दिसंबर 2019 को देश का पहला चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) नियुक्त किया गया था। इस भूमिका में जनरल रावत ने सशस्त्र बलों के तीन विंग भारतीय सेना, भारतीय वायु सेना और भारतीय नौसेना के बीच बेहतर तालमेल पर ध्यान केंद्रित करते हुए उनकी समस्याओं व आधुनिकीकरण पर विशेष ध्यान दिया, जनरल रावत को देश की सेनाओं के आधुनिकीकरण का शिल्पकार माना जाता है, वह सैन्यबलों को अत्याधुनिक हथियारों से सुसज्जित करने के लिए लगातार कार्य कर रहे थे। जनरल बिपिन रावत की पत्नी मधुलिका रावत आर्मी वेलफेयर से जुड़ी हुई थीं, वो आर्मी वुमन वेलफेयर एसोसिएशन की अध्यक्ष भी थीं, बिपिन रावत अपने पीछे दो बेटी कृतिका व तारिणी को छोड़कर गए हैं, दोनों बेटियों पर अचानक से दुखों का पहाड़ टूट गया, उन्होंने मां-बाप को एक साथ खो दिया है, ईश्वर उन्हें दुख की इस घड़ी से लड़ने की शक्ति प्रदान करें।

विजय दिवस की 50वीं वर्षगांठ,

जब भारत ने पाक को चटाई थी धूल, मां भारती के वीरों की विजयगाथा

16 दिसंबर का दिन सैनिकों के शौर्य को सलाम करने का दिन है। पूरे देश में 16 दिसंबर को विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन 1971 में भारत ने पाकिस्तान के दांत खट्टे किए थे। भारत ने पाकिस्तान पर जीत का जश्न मानाया था। इस ऐतिहासिक जीत की खुशी आज भी हर देशवासी के मन को उमंग से भर देती है। विजय दिवस वीरता और शौर्य की मिसाल है। 1971 के युद्ध में भारतीय सैनिकों ने बड़े पैमाने पर कुर्बानियां दीं। करीब 3900 भारतीय सैनिक वीरगति को प्राप्त हो गए थे जबकि 9851 घायल हो गए थे। 16 दिसंबर का दिन देश के जवानों की वीरता, शौर्य, अदम्य साहस और कुर्बानी की कहानी को बयां करती है।

विजय दिवस क्यों मनाया जाता है?

विजय दिवस 1971 के युद्ध में पाकिस्तान पर भारत की जीत के कारण मनाया जाता है। इस युद्ध के अंत के बाद 93 हजार पाकिस्तानी सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया था। 1971 के युद्ध में भारत ने पाकिस्तान को करारी शिकस्त दी थी। इसके बाद पूर्वी पाकिस्तान स्वतंत्र हो गया, जो आज बांग्लादेश के नाम से जाना जाता है। पूर्वी पाकिस्तान (आज बांग्लादेश) में पाकिस्तानी सेना के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल एएके नियाजी ने भारत के पूर्वी सैन्य कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया था। 16 दिसंबर की शाम जनरल नियाजी ने आत्मसमर्पण के कागजों पर हस्ताक्षर किए। भारत युद्ध जीता। हर साल इस दिन को हम विजय दिवस के रूप में मनाते हैं।

16 दिसंबर की सुबह क्या हुआ?

जनरल जैकब को मानेकशॉ का मैसेज मिला कि आत्मसमर्पण की तैयारी के लिए तुरंत ढाका पहुंचें। उस समय जैकब की हालत बिगड़ रही थी। भारत के पास केवल तीन हजार सैनिक और वे भी ढाका से 30 किलोमीटर दूर। वहीं, दूसरी तरफ पाकिस्तानी सेना के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल एएके नियाजीनियाजी के पास ढाका में 26 हजार 400 सैनिक थे। भारतीय सेना ने युद्ध पर पूरी तरह से अपनी पकड़ बना ली। भारत के पूर्वी सैन्य कमांडर जगजीत अरोड़ा अपने दलबल समेत एक दो घंटे में ढाका लैंड करने वाले थे और युद्ध विराम भी जल्द समाप्त होने वाला था। जैकब के हाथ में कुछ भी नहीं था। जैकब जब नियाजी के कमरे में घुसे तो वहां सन्नाटा छाया हुआ था। आत्मसमर्पण का दस्तावेज टेबल पर रखा हुआ था।

नियाजी की आंखों में आंसू

शाम के साढ़े चार बजे लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा हेलिकॉप्टर से ढाका हवाई अड्डे पर लैंड किए। अरोड़ा और नियाजी एक टेबल के सामने बैठे और दोनों ने आत्मसमर्पण के दस्तावेज पर दस्तखत किए। नियाजी ने अपना रिवॉल्वर जनरल अरोड़ा के हवाले कर दिया। नियाजी की आंखों में आंसू आ गए। स्थानीय लोग नियाजी की हत्या पर उतारू नजर आ रहे थे लेकिन भारतीय सेना के वरिष्ठ अधिकारियों ने नियाजी को सुरक्षित बाहर निकाला। उधर, इंदिरा गांधी संसद भवन के अपने दफ्तर में एक टीवी इंटरव्यू दे रही थीं। तभी जनरल मानेक शॉ ने उन्हें बांग्लादेश में मिली शानदार जीत की खबर दी। इंदिरा गांधी ने लोकसभा में शोर-शराबे के बीच घोषणा की कि युद्ध में भारत को जीत मिली है। इंदिरा गांधी के बयान के बाद पूरा सदन जश्न में डूब गया।

कृषि कानून वापसी

मोदी की मजबूरी या मास्टरस्ट्रोक

लंबे समय से जिस कानून को लेकर सड़क से लेकर संसद तक घमासान मचा हुआ था, आखिरकार उन तीन कृषि कानूनों के अंत का ऐलान हो ही गया। दिल्ली की सीमाओं पर जारी किसान आंदोलन के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज तीनों कृषि कानूनों को निरस्त करने का ऐलान किया। देश के नाम संबोधन में पीएम मोदी ने कहा कि सरकार ने तीनों कृषि कानूनों को वापस लेने का फैसला किया है। कुछ लोग इसे जहां मोदी की मजबूरी कह सकते हैं तो कुछ सियासत में मास्टरस्ट्रोक भी मान सकते हैं। यह सच है कि अगले साल पांच राज्यों उत्तर प्रदेश, पंजाब, गोवा, मणिपुर और उत्तराखंड में विधानसभा चुनाव हैं और किसान आंदोलन का कहीं उलटा असर न हो जाए, भाजपा को इसका डर जरूर सता रहा होगा।

विधानसभा चुनाव से ठीक पहले पीएम मोदी के इस ऐलान के कई मायने हैं। किसान आंदोलन से प्रभावित चुनावी राज्यों में मुख्यतौर पर उत्तर प्रदेश और पंजाब हैं। पंजाब को छोड़कर उत्तर प्रदेश में भाजपा की सरकार है। कृषि कानूनों को लेकर जिस तरह से प्रदर्शनकारी किसान डटे हुए थे, ऐसे में उत्तर प्रदेश में भाजपा को सबसे अधिक नुकसान होने की संभावना थी। मगर कानूनों की वापसी के बाद भाजपा की राह जरूर आसान होगी। कृषि कानूनों को आधार बना जो सियासी पार्टियां भाजपा पर हमला करने को आतुर थीं, अब उन्हें अपनी रणनीति में बदलाव करने की जरूरत होगी। कांग्रेस से लेकर टीएमसी और सपा-बसपा को भी अब नया हथियार तलाशना होगा क्योंकि आज के ऐलान से मोदी ने किसानों की नाराजगी वाला सियासी हथियार छीन लिया। उत्तर प्रदेश में कृषि कानूनों की वापसी के बाद से सियासी समीकरण से लेकर हवा के रुख में भी बदलाव देखने को मिल सकता है। कृषि कानूनों की वजह से किसान आंदोलन ने भाजपा की सिरदर्दी बढ़ा रखी थी। पश्चिम उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा खतरा महसूस हो रहा था, क्योंकि यहां किसान आंदोलन का सबसे अधिक असर दिख रहा है। भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ किसानों के विरोध को देखते हुए अखिलेश यादव ने अपना बड़ा दांव चला था और जयंत चौधरी की पार्टी

संग चुनाव लड़ने का ऐलान किया था। उम्मीद थी कि भाजपा की नाराजगी का असर सपा गठबंधन को होगा और जाट से लेकर कई जातियों का वोट सपा में ट्रांसफर होगा, मगर ऐन वक्त पर पीएम मोदी ने कृषि कानूनों को वापस लेकर पासा पलट दिया है। ऐसे में सपा प्रमुख अखिलेश यादव को फिर से अपनी रणनीति बदलने पर पीएम मोदी ने मजबूर कर दिया है। इस तरह से देखा जाए तो पीएम मोदी ने मजबूरी को मास्टरस्ट्रोक में बदल दिया।

इस फैसले को एक तरह से देखा जाए तो पंजाब में भारतीय जनता पार्टी ने अपने खिलाफ हवा के रुख को मोड़ने की कोशिश की है। पंजाब में किसानों के भीतर कृषि कानूनों को लेकर सरकार के प्रति काफी गुस्सा है। इसी गुस्से को भांपते हुए अकाली दल ने भाजपा से नाता तोड़ लिया था। अब जब चुनाव नजदीक आ रहे हैं तो भाजपा को भी इस बात का डर है कि कहीं किसान आंदोलन उसे पंजाब की सत्ता से महरूम न कर दे। यही वजह है कि कृषि कानूनों की वापसी के बाद पंजाब के सियासी समीकरण भी बदलेंगे। अब तक किसानों की नाराजगी की डर से ही कैप्टन अमरिंदर सिंह भी भाजपा से अलग-अलग चल रहे थे, मगर अब जब कानून को खत्म कर दिया गया है, ऐसे में उम्मीद की जा रही है कि कैप्टन तो भाजपा के साथ आएंगे ही, साथ ही साथ अकाली को भी भाजपा संग गठबंधन में कोई ऐतराज नहीं होगा। अगर ऐसा होता है तो कांग्रेस को फिर से अपनी रणनीति बदलनी होगी और नए सिरे से चुनावी पिच पर खेलना होगा। इसके अलावा, कृषि कानूनों और किसान आंदोलन की वजह से जहां अब तक भाजपा और मोदी सरकार बैकफुट पर नजर आ रही थी, जिस तरह से विपक्ष समेत किसान नेताओं को हमले करने का मौका मिला था, कृषि कानूनों को निरस्त कर उन सबको एक ही झटके में पीएम मोदी ने खत्म कर दिया। अब न तो किसान नेता सरकार का विरोध कर पाएंगे और न ही अब विपक्षी पार्टियां चुनावा में हथियार के रूप में किसानों की नाराजगी का फायदा उठा पाएंगे। इस तरह से देखा जाए तो केंद्र सरकार ने भले ही मजबूरी में ही यह फैसला लिया, मगर यह उसका चुनावी राज्यों में मास्टरस्ट्रोक साबित हो सकता है।

हर साल लगेगा किसानों का मेला, महापंचायत भी रहेगी जारी

भारतीय किसान यूनियन के नेता राकेश टिकैत ने कहा है कि महापंचायत का आयोजन समय-समय पर होता रहेगा। तीन कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों के आंदोलन का सफलतापूर्वक संचालन करने के बाद टिकैत ने यह बात कही। उन्होंने हर साल 10 दिन का किसान आंदोलन मेला आयोजित करने की भी कही।

किसानों के मुद्दे पर होती रहेगी बातः टिकैत ने उन्होंने कहाकि हर साल 10 दिन का किसान आंदोलन मेला आयोजित किया जाएगा। वहीं किसानों के मुद्दे पर बात करने के लिए समय-समय पर महापंचायत भी होगी। टिकैत ने इस दौरान आंदोलन के दौरान सरकार पर दबाव बनाने के लिए मीडिया की भूमिका की भी तारीफ की। गौरतलब है कि आंदोलन के सफलतापूर्वक खत्म होने के बाद किसान दिल्ली बॉर्डर से अपने घर पहुंचने लगे हैं। बड़ी संख्या में किसान धरनास्थल को खाली कर चुके हैं। अब किसान 15 जनवरी को एक समीक्षा बैठक करेंगे। संयुक्त किसान मोर्चा ने अपने बयान में कहाकि अगर सरकार अपने वादों को पूरा नहीं करती है तो हम अपना आंदोलन फिर से शुरू करेंगे। इससे पहले 19 नवंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस बात की घोषणा की थी कि सरकार तीन कृषि कानूनों को वापस ले लेगी। इसके बाद 29 नवंबर को शीतकालीन सत्र के पहले दिन संसद के दोनों सदनों में प्रक्रिया पूरी करने के बाद इन कानूनों को वापस ले लिया गया। हालांकि किसानों ने इसके बाद भी आंदोलन खत्म करने से इंकार कर दिया था।

राकेश टिकैत ने खुद को किया साबित?

नए कृषि कानून के खिलाफ किसान आंदोलन खत्म हो गया है। इस आंदोलन के माध्यम से राकेश टिकैत ने यह साबित कर दिया है कि वह भी अपने पिता चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत की तरह बड़ा आंदोलन चलाने की काबिलियत रखते हैं। पिता महेंद्र सिंह टिकैत अपनी जिद्द के बल पर किसी भी सरकार को बैकफुट पर खड़ा कर दिया करते थे। नया कृषि कानून वापस हो गया है, इससे किसे फायदा होगा, किसको नुकसान, यह तो समय ही बताएगा, लेकिन इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि साल भर से अधिक समय तक चले आंदोलन में कई उतार-चढ़ाव देखने को मिले। आंदोलनकारियों में जहां सत्ता पक्ष के प्रति तल्खी दिखाई दी तो विपक्ष ने भी खूब सियासी रोटियां सेंकी। ख़ैर अंत भला तो सब भला। आंदोलन के दौरान भले ही सरकार और आंदोलनकारियों के बीच के कई विवाद देखने को मिले हों लेकिन आंदोलन का समापन बहुत खूबसूरत तरीके से हुआ। किसान नेता, मोदी सरकार के खिलाफ किसी तरह की कोई रार लेकर नहीं गए हैं। बात राकेश टिकैत की की जाए तो वह अब मोदी सरकार का गुणगान कर रहे हैं। वह आंदोलन खत्म होने को ना अपनी जीत मान रहे हैं, ना भारत सरकार की हार। टिकैत ने कह दिया है कि उनका चुनाव से कोई वास्ता नहीं है। वह पश्चिमी यूपी में सौहार्द का वातावरण बनाने की भी कोशिश कर रहे हैं। टिकैत, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से भी मिलकर किसानों की समस्या पर चर्चा करना चाहते हैं, जिसे लोकतंत्र में किसी तरह से गलत नहीं कहा जा सकता है। किसान देश की रीढ़ की हैं। हाँ, टिकैत को इस बात का दुख जरूर है कि यूपी के किसान पंजाब और हरियाणा के किसानों की तरह आंदोलन चलाने की कुव्वत नहीं रखते हैं। भारतीय किसान यूनियन के नेता राकेश टिकैत ने अपना आगे का प्लान भी सेट कर दिया है। उनका पूरा जोर किसानों की समस्याएं सुलझाने पर रहेगा।

कौन करेगा यूपी फतह

उत्तर प्रदेश में होने वाले विधानसभा चुनावों की सियासी बिसात पर तमाम नेता और दल अपनी-अपनी जातीय गोटियां बिछाने में लगे हैं। किसी को दलितों की चिंता है तो किसी को पिछड़ों की, कोई ब्राह्मणों के लिए परेशान है तो कोई ठाकुरों को मना रहा है। पश्चिम में जाट अलग ही तान छेड़े हुए हैं। अबकी चुनाव में काफी कुछ नया भी हो रहा है। पीएम नरेन्द्र मोदी यूपी में ताबड़तोड़ दौरे कर रहे हैं और एक के बाद एक कई सौगातें योगी के राज्य उप्र को दे रहे हैं और विपक्ष पर जमकर निशाना साध रहे हैं। तो वहीं कांग्रेस भी जमकर रैलियां और सभाएं कर रही हैं प्रियंका गांधी के आने से यूपी में कांग्रेस काफी मजबूत दिख रही है। और प्रियंका ने महिलाओं को ध्यान में रखकर जिस तरह से चुनावी घोषणा पत्र बनाया है और उनका नामा बेटूं हूं लड़ सकती हूं भी महिलाओं में काफी लोकप्रिय हो रहा है। तो वहीं अखिलेश यादव की सभाएं में अपार जनसमूह उमड़ रहा है जिससे समाजवादी पार्टी भी काफी प्रसन्न है अखिलेश भी जमकर कांग्रेस और बीजेपी पर निशाना साध रहे हैं। बसपा की नजर दलित वोट बैंक पर है।

उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव का बिगुल बज चुका है। सत्तारुढ़ बीजेपी अपनी सत्ता को बरकरार रखने की जद्दोजहद कर रही है तो विपक्षी दलों के नेता सत्ता की चाबी अपने कब्जे में लाने को योगी सरकार के खिलाफ लगातार कौतुहल पैदा कर रहे हैं। सम्पूर्ण विपक्ष ने योगी सरकार को सत्ता से बेदखल करने के लिए मोर्चा खोल रखा है, लेकिन राजनीति के जानकार आश्चर्य व्यक्त कर रहे हैं कि क्यों विपक्षी दलों के नेता जनता के बीच अपना एजेंडा आगे बढ़ाने की बजाए बीजेपी द्वारा सेट किए गए एजेंडे पर ही आगे बढ़ रहे हैं। हालात यह हैं कि बीजेपी हिन्दू कार्ड खेल रही है तो विपक्ष भी हिन्दू-हिन्दू कर रहा है। बीजेपी नेता मंदिर-मंदिर परिक्रमा कर रहे हैं। हिन्दू धर्मगुरुओं की शरण में जा रहे हैं तो यही राह कांग्रेस और काफी हद तक समाजवादी पार्टी ने भी पकड़ रखी

है। इस बार अल्पसंख्यकों के वोट पाने के लिए कोई नेता मुस्लिम धर्मगुरुओं की चौखट पर नहीं दिखाई दे रहा है। न ही मुस्लिम वोट बैंक को हथियाने के लिए अल्पसंख्यकों के सम्मेलन आयोजित कराए जा रहे हैं। इस बार नेतागण दरगाहों में चादर चढ़ाते भी नहीं दिखाई दे रहे हैं। गैर बीजेपी दलों के नेताओं की बेरूखी से सियासी मौसम में भी मुस्लिम उलेमाओं और धर्मगुरुओं की मांग काफी घट गई है। ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के नेता असद्दुदीन ओवैसी जरूर अपवाद हैं जो मुस्लिम वोटों की खुल कर सियासत करने में लगे हैं।

ऐसा लगता है कि अबकी बार के विधानसभा चुनाव में किसान बड़ा फैक्टर रहने वाला है। अबकी बार एक नया ट्रैंड यह भी देखने को मिला कि कांग्रेस-समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी तक ने नवरात्रों में ही अपने चुनावी सभाओं का शंखनाद किया है। प्रियंका गांधी से लेकर अखिलेश यादव, मायावती और जयंत चौधरी तक ने अपने चुनावी शंखनाद की शुरुआत नवरात्र के महीने से करके हिन्दू वोटरों को बड़ा संदेश देने की कोशिशें की हैं। सूबे में चुनावी मंच चाहे अखिलेश यादव का हो, प्रियंका गांधी का या फिर बसपा सुप्रीमो मायावती का, सभी मंचों पर प्रमुखता से जो मुस्लिम चेहरे या मुस्लिम प्रतीक पहले दिखाई देते थे, वो इस बार लगभग गायब हैं। प्रियंका गांधी मंच पर बाबा विश्वनाथ के चंदन के साथ हुंकार भरती हैं। भाषण की शुरुआत के पहले दुर्गा सप्तशती के मंत्र पढ़ती हैं। समाजवादी पार्टी के गठन से लेकर पिछले विधानसभा तक की चुनावी जनसभाओं और सपा के पोस्टरों में कई मुस्लिम चेहरे और मुस्लिम टोपी लगाए नेता नजर आते थे, लेकिन अब सब नदारद हो गया है। इस बार सपा नेताओं की तस्वीर हो या खुद नेता मौजूद हों मुस्लिम प्रतीक वाली टोपी नजर नहीं आती है। हिन्दू वोटरों के बीच गलत मैसेज न जाए इसलिए आजम खान जैसे पुराने समाजवादी नेता के पक्ष में खड़े होने से पार्टी परहेज कर रही है। ऐसा ही हाल कांग्रेस की सभाओं का भी है, कांग्रेस की सभाओं में भी मुसलमान तो दिखते हैं लेकिन वह अपनी मुस्लिम पहचान को बढ़ावा देने के चक्कर में नहीं रहते हैं।

सी-वोटर का सर्वेः यूपी में बीजेपी को मिल सकती है सत्ता, पंजाब में फेरबदल !

उत्तर प्रदेश में एक बार फिर भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) की सरकार बन सकती है तो समाजवादी पार्टी से उसे उच्छी टक्कर मिल सकती है। एबीपी और सी वोटर के ताजा सर्वे के मुताबिक, मायावती की अगुआई वाली बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) के प्रदर्शन में सुधार होता नहीं दिख रहा है तो प्रियंका गांधी की कड़ी मेहनत के बाजवूद कांग्रेस सिंगल डिजिट में सिमट सकती है। सी वोटर के ताजा सर्वे में कहा गया है कि 403 सीट वाली यूपी विधानसभा में बीजेपी 212 से 224 सीटें जीत सकती है तो समाजवादी पार्टी 151 से 163 सीटों पर कब्जा कर सकती है। बीएसपी को 12 से 24 सीटें सीटें मिल सकती हैं। वहीं कांग्रेस महज 2-10 सीटों पर सिमट सकती है। यूपी में बीजेपी को 40 फीसदी सीटें मिल सकती हैं तो समाजवादी पार्टी को 34 फीसदी वोट मिलने की संभावना जताई गई है। बीएसपी को 13 फीसदी और कांग्रेस को 7 फीसदी वोट मिलने की संभावना है

पंजाब में कांग्रेस के हाथ से छिनेगी सत्ता?

सी वोटर के सर्वे के मुताबिक पंजाब में कांग्रेस के हाथ से आम आदमी पार्टी सत्ता छीन सकती है। कांग्रेस को 34 फीसदी वोट मिल सकते हैं तो आम आदमी पार्टी को 38 फीसदी वोट मिलने की संभावना जताई गई है। अकाली दल गठबंधन को 20 फीसदी तो बीजेपी को 3 फीसदी वोट मिल सकते हैं। पंजाब में कांग्रेस को 39-34 सीटें मिल सकती हैं तो अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी पहली बार दिल्ली के बाहर इस राज्य में 50 से 56 सीटें जीत सकती है। अकाली दल गठबंधन को 17 से 23 सीटें और बीजेपी को 0 से 3 सीट मिल सकती है।

उत्तराखंड में कांटें की टक्कर

सी वोटर के ताजा सर्वे के मुताबिक, उत्तराखंड में बीजेपी और कांग्रेस में कांटे की टक्कर हो सकती है। बीजेपी को 33 से 39 सीटें मिल सकती है तो कांग्रेस को 29 से 35 सीटें मिलने का अनुमान लगाया गया है। अन्य के खाते में 0 से 1 सीट जा सकती है। यहां बीजेपी को 40 फीसदी वोट शेयर मिल सकता है तो कांग्रेस को 36 फीसदी वोट मिलने की संभावना है। आप को यहां 13 फीसदी वोट मिल सकते हैं।

गोवा में फिर बीजेपी को मिल सकती है सत्ता

सी वोटर के सर्वे के मुताबिक, गोवा में एक बार फिर बीजेपी को सत्ता मिल सकती है। पार्टी यहां 17 से 21 सीटें जीत सकती है तो कांग्रेस 4-8 सीटों पर सिमट सकती है। आम आदमी पार्टी को 5-9 सीटें मिल सकती हैं तो अन्य के खातों में 6 से 10 सीटें जा सकती हैं। गोवा में बीजेपी 30 फीसदी वोट शेयर पर कब्जा कर सकती है तो कांग्रेस को 20 फीसदी वोट मिल सकते हैं। आप को 24 फीसदी वोट मिलने की संभावना है।

मणिपुर में बीजेपी कांग्रेस में टक्कर

सी वोटर के सर्वे के मुताबिक, मणिपुर की 60 सदस्यों वाली विधानसभा में बीजेपी को 29 से 33 सीटें मिल सकती हैं तो कांग्रेस 23 से 27 सीटों पर कब्जा कर सकती है। एनपीएफ को 2-6 और अन्य को 0-2 सीटें मिल सकती हैं। मणिपुर में बीजेपी को 38 फीसदी वोटशेयर मिल सकता है तो कांग्रेस को 34 फीसदी सीटें मिल सकती हैं। एनपीएफ को 9 फीसदी तो अन्य को 19 फीसदी वोट मिलने की संभावना जताई गई है।

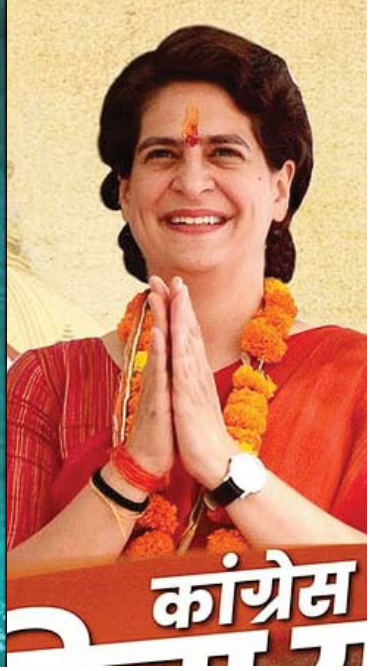

यूपी में कांग्रेस का मास्टर स्ट्रोक

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की ओर से चालीस फीसदी सीटों पर महिलाओं को टिकट देने की प्रियंका गांधी की घोषणा ने न सिर्फ विधानसभा चुनावों बल्कि 2024 तक होने वाले सभी विधानसभा चुनावों और लोकसभा चुनाव के लिए भी कांग्रेस का सियासी एजेंडा तय कर दिया है। प्रियंका की इस घोषणा से तीन बातें साफ हैं। पहली ये कि जब विधानसभा चुनाव में महिला सशक्तिकरण कांग्रेस का मुख्य मुद्दा होगा तो पार्टी की ओर से मुख्यमंत्री का चेहरा भी कोई महिला ही हो सकती है, क्योंकि बसपा प्रमुख मायावती खुद को महिला मुख्यमंत्री के उम्मीदवार के रूप में पेश करेंगी और ऐसा होने पर कांग्रेस के सामने किसी महिला को आगे करने की सियासी मजबूरी होगी। क्योंकि प्रियंका गांधी से बड़ा कोई दूसरा नाम कांग्रेस में नहीं है, इसलिए इसकी संभावना भी है कि अगर यह मुद्दा महिलाओं में आकर्षण पैदा करने में कामयाब हुआ तो देर-सवेर प्रियंका गांधी को मुख्यमंत्री का चेहरा बनाने की घोषणा पार्टी कर सकती है या फिर उन्हें विधानसभा का चुनाव लड़ाकर यह संदेश दे सकती है।

प्रियंका की आज की घोषणा से दूसरा संकेत यह है कि उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में जहां भाजपा सपा और बसपा का फोकस सामाजिक समीकरण साधने पर है, वहीं प्रियंका की अगुआई में कांग्रेस ने महिला कार्ड चलकर चुनाव का फोकस बदल दिया है और कांग्रेस का सारा जोर प्रदेश की आधी आबादी को अपने साथ जोड़कर देश के सबसे बड़े सूबे में अपनी लिए नई संभावनाएं तलाशने पर होगा। इस तरह कांग्रेस भाजपा के हिंदू ध्रुवीकरण और सपा बसपा के जातीय ध्रुवीकरण के कार्ड को महिला सशक्तिकरण के दांव से तोड़ेगी। तीसरी बात ये कि अगर उत्तर प्रदेश में कांग्रेस को इस मुद्दे का फायदा मिला तो न सिर्फ 2022 और 2023 में होने वाले विधानसभा चुनावों में बल्कि 2024 के लोकसभा चुनावों में भी कांग्रेस महिला सशक्तिकरण और महिला सुरक्षा के मुद्दे को प्रमुख चुनावी मुद्दा बना सकती है। मुमकिन है इसके लिए कांग्रेस

यूपीए सरकार द्वारा राज्यसभा में पारित किए गए महिला आरक्षण विधेयक को लोकसभा में लाकर पारित कराने के लिए भी दबाव बनाकर उसे मुद्दा बनाए। किसी भी चुनाव में किसी भी दल की जीत में सबसे ज्यादा योगदान महिलाओं के समर्थन का होता है। इंदिरा गांधी के जमाने में कांग्रेस को देश में महिलाओं का एकमुश्त समर्थन हासिल था, जो बाद में धीरे-धीरे घटता चला गया। 2004 में सोनिया गांधी के नेतृत्व में भी कांग्रेस को महिलाओं का खासा समर्थन मिला था, जो 2009 तक जारी रहा। गुजरात में नरेंद्र मोदी और बिहार में नीतीश कुमार की जीत के पीछे महिलाओं का समर्थन बड़ी वजह माना गया। उड़ीसा में नवीन पटनायक, तेलंगाना में टीआरएस की जीत का भी बड़ा आधार उन्हें महिलाओं का समर्थन मिलना रहा। कभी आंध्र प्रदेश में एनटीआर और बाद में चंद्रबाबू नायडू को भी महिलाओं का भरपूर समर्थन मिला। प. बंगाल में जब तक महिलाओं का समर्थन वाममोर्चे के साथ रहा उसकी जीत सुनिश्चित रही। लेकिन बाद में ममता बनर्जी ने महिलाओं के बीच अपनी अलग जगह बनाई और महिलाओं की ताकत की बदौलत ममता और तृणमूल इसी साल हुए विधानसभा चुनावों तक अजेय बनी हुई हैं। भारतीय राजनीति के इस यथार्थ को प्रियंका गांधी ने समझ लिया है। इसीलिए उन्होंने उत्तर प्रदेश में लगातार महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण का सवाल उठाया और उन्नाव, हाथरस, लखीमपुर जहां भी महिला उत्पीड़न का कोई मामला सामने आया प्रियंका ने उसे हर तरह से उठाया। अब कांग्रेस की तरफ से चालीस फीसदी विधानसभा सीटों पर महिला प्रत्याशी उतारने की घोषणा से प्रियंका गांधी ने महिला सशक्तिकरण के मुद्दे को नई धार दे दी है। कांग्रेस के इस दांव के दबाव में भाजपा, सपा और बसपा को भी कुछ इसी तरह के कदम उठाने होंगे।

राजस्थान की रैली में मोदी सरकार पर बरसे राहुल गांधी

मैं हिंदू हूं, लेकिन हिंदुत्ववादी नहीं

राजस्थान में कांग्रेस की महंगाई के खिलाफ महारैली में राहुल गांधी ने मोदी सरकार पर जमकर तीर चलाए। रैली को संबोधित करते हुए कहाकि देश को जनता नहीं चला रही है। तीन चार पूंजीपति चला रहे हैं और प्रधानमंत्री उनका काम कर रहे हैं। इस दौरान राहुल गांधी ने कहाकि देश की राजनीति में दो शब्दों की टक्कर चल रही है। एक एक शब्द है हिंदू और दूसरा शब्द है हिंदुत्ववादी। उन्होंने कहाकि देश में महंगाई की वजह हिंदुत्ववादी हैं। साथ ही राहुल गांधी महंगाई के लिए भी केंद्र सरकार पर निशाना साधा। इस दौरान कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी के अलावा राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, अजय माकन, मल्लिकार्जुन खड़गे समेत कई दिग्गज कांग्रेसी मौजूद रहे।

हिंदू और हिंदुत्ववाद की परिभाषा बताई

इस दौरान राहुल गांधी ने कहा कि वह हिंदू और हिंदुत्ववादी के बीच के अंतर को स्पष्ट करना चाहते हैं। राहुल गांधी ने कहाकि मैं हिंदू हूं, लेकिन हिंदुत्ववादी नहीं हूं। उन्होंने कहाकि महात्मा गांधी हिंदू थे, लेकिन गोडसे हिंदुत्ववादी था। राहुल ने कहाकि कुछ भी हो जाए हिंदू सत्य को ढूंढता है। उन्होंने कहाकि महात्मा गांधी ने ऑटोबायोग्राफी लिखी माई एक्सपेरिमेंट विद ट्रुथ। सारी जिंदगी सच को जानने में बिताई और अंत में एक हिंदुत्ववादी ने छाती में गोली मार दी। राहुल गांधी ने कहा कि देश में हिंदुत्ववादियों का राज है, हिंदुओं का नहीं। उन्होंने कहाकि देश में हिंदू रहते हैं, लेकिन हिंदुत्ववादी देश को चला रहे हैं। हमें एक बार फिर इन हिंदुत्वादियों को बाहर निकालना है, हिंदुओं का राज लाना है।

कहा-हिंदुत्ववादी सत्ता ढूंढता है

राहुल गांधी ने कहाकि हिंदुत्ववादी पूरी जिंदगी सत्ता ढूंढने में लगा देता है। सत्ता के लिए वह कुछ भी कर देता है। उसका रास्ता सत्याग्रह नहीं, सत्ताग्रह है वह सत्ता के लिए किसी को मार देगा, कुछ भी कर देगा। राहुल ने कहाकि हिंदू डर का सामना करता है और एक इंच पीछे नहीं हटता। कांग्रेस नेता ने इस मौके पर भगवान शिव का भी उदाहरण दिया। उन्होंने कहाकि हिंदू शिवजी की जैसे अपने डर को निगल लेता है। वहीं हिंदुत्ववादी अपने डर के आगे झुक जाता है, डर के आगे मत्था टेकता है। हिंदुत्ववादी को डर के चलते उसके अंदर नफरत आती है। हिंदू डर का सामना करता है इसलिए उसके दिल में प्यार रहता है। राहुल ने इस मौके पर गीता का भी उदाहरण दिया। उन्होंने कहाकि गीता में लिखा है सत्य की लड़ाई लड़ो। गीता में कृष्ण ने यह नहीं कहाकि अपने भाइयों को सत्ता के लिए मारो, अपने भाइयों को सच के लिए मारो। 3000 साल में हिंदू दबाया नहीं गया, कभी नहीं दबाया जा सकता।

मोदी ने किसानों को पीछे से चाकू मारा

नरेंद्र मोदी और उनके तीन चार उद्योगपतियों ने देश को बर्बाद कर दिया। किसानों का कर्जा माफ कर दिया क्योंकि किसानों को कर्जामाफी की जरूरत है। मोदी ने किसानों की छाती में चाकू मार दिया। वो भी पीछे से मारा, क्योंकि मोदी हिंदुत्ववादी हैं। हिंदू अगर मारता है तो आगे से मारता है, लेकिन हिंदुत्ववादी ने पीछे से मारा। और जब हिंदू सामने खड़ा हो गया तो हिंदुत्ववादी ने कहा, 'मैं माफी मांगता हूं।' राहुल ने कहाकि आज देश की एक प्रतिशत आबादी के हाथ में 33 प्रतिशत धन है। वहीं 50 परसेंट आबादी के हाथ में मात्र 6 फीसदी धन। उन्होंने कहाकि हिंदुस्तान का 90 परसेंट कॉरपोरेट प्रॉफिट 20 कंपनियों को जाता है।

ओमिक्रोन वेरिएंट का खतरा

कोरोना

भारत में गिर रहा है मास्क का उपयोग

ओमिक्रॉन वैरिएंटः बढ़ते संक्रमण के बाद भी लोग नहीं कर रहे कोविड प्रोटोकॉल का पालन

देश में लगातार कोरोना वायरस के नए स्वरूप ओमिक्रॉन के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। इसके बावजूद भारत में सामाजिक दूरी के अनुपालन में कोताही देखने को मिल रही है। लोकल सर्किल के एक सर्वे में यह निष्कर्ष सामने आया है। हाल ही में लोकल सर्किल ने सर्वे से यह पता लगाने की कोशिश की क्या ओमिक्रॉन के बाद लोग सजग हुए हैं। सर्वे के नतीजे कहते हैं कि देश में टीका लगवा चुके लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही है और रोजाना आने वाले संक्रमण के मामले 10,000 से नीचे आ गए हैं। ऐसी स्थिति में लोग सामाजिक दूरी को लेकर कोताही बरतने लगे हैं। इसके उलट महामारी से बचाव का एकमात्र और पक्का उपाय मास्क पहनना और सामाजिक दूरी का अनुपालन करना ही है। दुनियाभर के वैज्ञानिकों और महामारी से जुड़े विशेषज्ञों ने ओमिक्रॉन को लेकर चिंता जताई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने इसे चिंता वाला स्वरूप बताया है। कुछ ही सप्ताह में दुनिया के 60 से अधिक देशों में ओमिक्रॉन के मामले आ चुके हैं।

भारत में कोरोना वायरस के संक्रमण के मामलों में रोजाना गिरावट आ रही है, लेकिन साथ ही मास्क के उपयोग में भी कमी देखी जा रही है. जानकार कह रहे हैं कि यह चिंताजनक है और कभी भी स्थिति को बदल सकता है.सोमवार को भारत में संक्रमण के 7,350 नए मामले सामने आए और कुल सक्रिय मामलों की संख्या 91,456 हो गई. यह 18 महीनों में सक्रिय मामलों की सबसे कम संख्या है. लेकिन जहां एक तरफ संक्रमण के मामले गिर रहे हैं वहीं मास्क पहनने

में आई तेज गिरावट को लेकर चिंताएं उठ रही हैं. साथ ही दुनिया भर में तेजी से फैल रहे वायरस के नए वेरिएंट ओमिक्रॉन से संक्रमण के मामले भारत में भी बढ़ते जा रहे हैं. एक बार फिर कई राज्यों में चुनाव आने वाले हैं और राजनीतिक रैलियों में लोगों को बिना मास्क पहने या मास्क को अपनी ठोढ़ी पर पहने एक दूसरे के पास खड़े या बैठे देखा जा सकता है. अप्रैल 2021 में भी ऐसा ही कुछ हुआ था जिसके बाद डेल्टा वेरिएंट ने भारत में तबाही मचा दी थी. हालांकि उस समय के बाद अब मामले काफी कम हो चुके हैं, लेकिन ओमिक्रॉन से संक्रमण के मामले बढ़ रहे हैं. इसके अलावा वायरस के जितने सीक्वेंस की जेनोमिक जांच की गई है उनमें से तीन प्रतिशत नए वेरिएंट के ही पाए गए हैं. बाकी सब सीक्वेंस डेल्टा वेरिएंट के निकले. एक यूनिवर्सल वैक्सीन स्वास्थ्य एजेंसियां लोगों को लगातार मुंह ढकने के लिए कह रही हैं. नीति आयोग के सदस्य वीके पॉल ने हाल ही में एक समाचार वार्ता में कहा, ÷मास्क के इस्तेमाल का गिरता हुआ ग्राफ हमें महंगा पड़ सकता है. मास्क एक यूनिवर्सल वैक्सीन है, यह हर वेरिएंट पर असर करती है इंस्टिट्यूट ऑफ हेल्थ मेट्रिक्स एंड इवैल्यूएशन के डाटा के मुताबिक सार्वजनिक स्थानों पर मास्क पहनने के स्तर में गिरावट आई है और यह मार्च में देखे गए स्तर तक पहुंच गया है. अनुमान है कि इस समय मास्क सिर्फ 59 प्रतिशत लोग पहन रहे हैं, जो कि लगभग मार्च के स्तर जितना ही है. दूसरी लहर के बाद मास्क का इस्तेमाल बढ़ गया था. मई में यह 81 प्रतिशत तक पहुंच गया था.

स्वर्ण रेखा पर फोर लेन एलीवेटेड सड़क सहित ग्वालियर को मिलीं सौगातें

सिंधिया के प्रयासों से मिली बड़ी सौगात

ग्वालियर। ग्वालियर शहर में स्वर्ण रेखा पर बहुप्रतीक्षित एलीवेटेड रोड़ सहित जिले को विकास कार्यों की बड़ी-बड़ी सौगातें मिली हैं। केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गड़करी ने लगभग 514 करोड़ 68 लाख रूपए लागत की जिले की चार सड़क परियोजनाओं को मंजूरी दे दी है। केन्द्रीय नागर विमानन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की पहल पर भारत सरकार के सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जिले की इन सड़कों को सीआरएफ (केन्द्रीय सड़क निधि योजना) में शामिल कर लिया गया है।

नागर विमानन मंत्री सिंधिया ने ग्वालियर जिले की इन महत्वपूर्ण सड़क परियोजनाओं को मंजूर करने के लिये केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गड़करी के प्रति हृदय की गहराईयों के साथ धन्यवाद व्यक्त किया है। साथ ही केन्द्रीय सड़क निधि योजना के तहत जिले की इन सड़कों सहित मध्यप्रदेश को कुल 1814 करोड़ रूपए लागत से 23 सड़कों की मंजूरी देने के लिये केन्द्रीय मंत्री श्री गड़करी के प्रति आभार जताया है। केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा ग्वालियर शहर में स्वर्ण रेखा नदी पर ट्रिपल आईटीएम से महारानी लक्ष्मीबाई समाधि स्थल तक लगभग साढ़े 6 किलोमीटर

लम्बाई में फोर लेन एलीवेटेड सड़क निर्माण के लिये 406 करोड़ रूपए से अधिक राशि मंजूर की गई है। ग्वालियर शहर में स्वर्णरेखा पर एलीवेटेड सड़क और अंचल की महत्वपूर्ण सड़कों के निर्माण के लिये केन्द्रीय नागर विमानन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया विशेष रूप से प्रयासरत थे। इस संबंध में उन्होंने केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गड़करी को इन सड़कों का महत्व रेखांकित करते हुए समय-समय पर पत्र लिखे। साथ ही उनसे संपर्क भी करते रहे। इसके फलस्वरूप ग्वालियर जिले को 514 करोड़ रूपए से अधिक लागत की इन सड़कों की मंजूरी मिल गई है। केन्द्रीय नागर विमानन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि ग्वालियर शहर में स्वर्णरेखा पर आधुनिकतम एलीवेटेड सड़क के निर्माण से शहर की यातायात व्यवस्था सुदृढ़ होगी। साथ ही शहर की सुंदरता बढ़ेगी और लोगों को उच्च तकनीक के साथ बने आकर्षक सड़क मार्ग पर चलने की सुविधा मिलेगी ग्वालियर जिले को 514 करोड़ रूपए की लागत से अधिक की सौगातें मिलने पर जिले के प्रभारी एवं जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट, सांसद विवेक नारायण शेजवलकर, ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) भारत सिंह कुशवाह सहित अन्य जनप्रतिनिधियों एवं जिले के नागरिकों ने केन्द्रीय सड़क राजमार्ग मंत्री नितिन गड़करी और केन्द्रीय नागर विमानन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के प्रति आभार व्यक्त किया है।

ग्वालियर को स्वच्छ व व्यवस्थित बनाने में सहभागी बने

ग्वालियर। जब हमारा ग्वालियर स्वच्छ होगा, सुंदर होगा एवं शहर में व्यवस्थित यातायात होगा तो इसकी चर्चा पूरे वैश्विक पटल पर होगी और इसकी हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है कि अपने ग्वालियर को स्वच्छ व व्यवस्थित ग्वालियर बनाएं। इसके लिए हम सभी स्वच्छता के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझें और शासन व नगर निगम द्वारा दी जा रही सौगातों का पूर्ण रूप से उपयोग करें, कंपू क्षेत्र के नागरिक अपने वाहन आज से प्रारंभ हुई इस मल्टी लेवल पार्किंग में ही लगाएं। उक्ताशय के विचार केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने आज पुराना बस स्टैंड कंपू पर नगर निगम ग्वालियर द्वारा 3 करोड़ 93 लाख से अधिक की लागत से बनाई गई मल्टी लेवल पार्किंग के लोकार्पण अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किए।

नगर निगम ग्वालियर द्वारा कंपू क्षेत्र में सुगम एवं व्यवस्थित यातायात के लिए मल्टी लेवल पार्किंग का निर्माण किया गया है जिसका लोकार्पण आज केंद्रीय मंत्री श्री सिंधिया द्वारा किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता जिले के प्रभारी मंत्री तुलसीराम सिलावट ने की। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रुप में प्रदेश सरकार के राज्य मंत्री सुरेश धाकड़, पूर्व विधायक रमेश अग्रवाल उपस्थित रहे। इस अवसर पर

संभागीय आयुक्त एवं निगम प्रशासक आशीष सक्सेना, कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह, पुलिस अधीक्षक अमित सांघी एवं नगर निगम आयुक्त किशोर कन्याल सहित निगम अधिकारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री श्री सिंधिया ने क्षेत्र के नागरिकों से कहा कि ग्वालियर शहर ऐतिहासिक एवं प्राचीन शहर है यह शहर अकूत विरासत अपने में समेटे हुए हैं इस शहर की वैश्विक स्तर पर चर्चा हो इसके लिए हम सभी को शहर को सुंदर, व्यवस्थित एवं साफ बनाए रखना होगा। केंद्रीय मंत्री श्री सिंधिया ने कहा कि ग्वालियर शहर के नए मानचित्र के लिए पिछले काफी समय से मैं प्रयासरत हूं और इसके लिए सरकार द्वारा ग्वालियर में नया हवाई अड्डा, नया रेलवे स्टेशन एवं शहर के नागरिकों की सुविधा के लिए स्वर्णरेखा नाले पर एलिवेटेड रोड बनाया जा रहा है। इसके साथ ही शहर में व्यवस्थित यातायात के लिए स्थानीय स्तर पर भी अनेक सुविधाएं नागरिकों को प्रदान की जा रही है नागरिकों से आग्रह है कि वह इन सुविधाओं का पूर्ण लाभ उठाएं और अपने शहर को व्यवस्थित बनाएं। इस अवसर पर प्रभारी मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि शहर में यातायात की समस्या के निराकरण के लिए निरंतर कार्य किए जा रहे हैं तथा यह सौगात ग्वालियर के लिए बड़ी सौगात है यहां वाहन पार्क होने से क्षेत्र में यातायात की समस्या कम होगी।

पुलिस जवानों को बेहतर आवास सुविधा मुहैया कराने के लिए सरकार दृढ़ संकल्पितः नरोत्तम मिश्रा

ग्वालियर मजदूर को पसीना सूखने से पहले उसकी मजदूरी मिल जानी चाहिए। इसी भाव के साथ प्रदेश सरकार दीन-दुखियों और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के कल्याण के लिये काम कर रही है। साथ ही दिन-रात मेहनत करने वाले पुलिस जवानों को आवास सहित अन्य सुविधायें मुहैया करा रही है। इस आशय के विचार प्रदेश के गृह, जेल, संसदीय कार्य एवं विधि विधायी मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्र ने व्यक्त किए। डॉ. मिश्र सोमवार को यहाँ पुलिस (रेडियो) जोन कम्पू परिसर में पुलिस के अराजपत्रित अधिकारी एवं आरक्षक आवास गृहों के लोकार्पण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा सरकार सभी पुलिस जवानों को बेहतर आवास सुविधा मुहैया कराने के लिये दृढ़ संकल्पित है।मुख्यमंत्री पुलिस आवास योजना के तहत पुलिस रेडियो जोन कम्पू परिसर में लगभग 10 करोड़ 42 लाख रूपए की लागत से निर्मित पुलिस आवास गृहों का गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्र ने लोकार्पण किया। इनमें अराजपत्रित पुलिस अधिकारियों के एक दर्जन और पुलिस आरक्षकों के लिये बनाए गए 48 आवास गृह शामिल हैं। सुसज्जित आवासीय परिसर में बाउण्ड्रीवॉल, छायादार वृक्ष, हर आवास में पाइप लाईन के जरिए गैस कनेक्शन सहित अन्य सुविधायें मुहैया कराई गई हैं। साथ ही परिसर में भू-जल संरक्षण की

व्यवस्था भी की गई है। गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्र ने कहा कि कोरोना की दोनों लहरों के दौरान पुलिस जवानों ने अपनी जान की परवाह न कर हम सभी की रक्षा के लिये पूरे समर्पण व सेवा भाव के साथ अपने कर्तव्य का निर्वहन किया है। प्रदेश सरकार के गृह विभाग को पुलिस जवानों की इस कर्तव्यनिष्ठा पर गर्व है। आरंभ में गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्र एवं वरिष्ठ जनप्रतिनिधि वेदप्रकाश शर्मा ने विधि विधान के साथ कन्या पूजन, पट्टिका का अनावरण कर एवं फीता काटकर दोनों आवासीय परिसरों का लोकार्पण किया। पुलिस महानिरीक्षकश्री अविनाश शर्मा ने स्वागत उदबोधन दिया और अत्याधुनिक पुलिस आवास बनवाने के लिये गृह मंत्री के प्रति आभार जताया। लोकार्पण कार्यक्रम में अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक चंबल राजेश चावला, पुलिस उप महानिरीक्षक ग्वालियर राजेश हिंगणकर एवं पुलिस अधीक्षक रेडियो विनायक शर्मा सहित अन्य पुलिस अधिकारी एवं पुलिस जवान व उनके परिजन मौजूद थे।

साइबर सेल ने 30 दिन में 31 मोबाइल ट्रेस किए, लोगों के खिले चेहरे

ग्वालियर। क्राइम ब्रांच की साइबर सेल ने 30 दिन में अलग-अलग स्थानों से गायब हुए 31 मोबाइल ट्रेस करने का दावा किया है। बरामद मोबाइलों की कीमत पुलिस ने पांच लाख 34 हजार रुपये बताई है। एसपी अमित सांघी ने बरामद मोबाइलों को शिकायतकर्ताओं को बुलाकर वापस किए। मोबाइल मिलने पर लोग खुश हो गए। दो लोग तो ऐसे थे, जो कि मोबाइल गुम होने के बाद दोबारा ले भी नहीं पाए थे। गौर करने वाली बात यह है कि प्रतिदिन चार से पांच मोबाइल गायब होने की सूचना साइबर सेल में दर्ज होती है। एएसपी राजेश दंडौतिया ने साइबर सेल को निर्देशित किया था कि गुम होने वाले मोबाइलों को ट्रेस कर बरामद करने की कार्रवाई में तेजी लाएं। ट्रेस होने के बाद मोबाइल कहां एक्टिव हैं, उस मोबाइल को बरामद करने के लिए संबंधित थाने की पुलिस से मदद ली जा सकती है। क्राइम ब्रांच थाना प्रभारी डीपी गुप्ता व साइबर सेल प्रभारी एसआइ रजनी सिंह ने बताया कि जब्त मोबाइल एपल कंपनी से लेकर सभी कंपनियों के हैं। यह मोबाइल कमलाराजा अस्पताल

में पदस्थ चिकित्सक, किसान, छात्र, मजदूर एव दुकान चलाने वाली महिला के थे।

जल का उपभोग नहीं, उपयोग करें: तोमर

ग्वालियर। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि जल ईश्वर और प्रकृति द्वारा दी गई सबसे बड़ी विरासत है। इसलिये हमें इस जीवनदायी विरासत का उपभोग नहीं, उपयोग करना चाहिए। श्री तोमर शनिवार को ग्वालियर में राष्ट्रीय जल सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। यहाँ भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंधन संस्थान में आयोजित हो रहे राष्ट्रीय जल सम्मेलन में केन्द्रीय मंत्री श्री तोमर ने कहा कि जल, हवा और सूर्य ताप प्रकृति के उपहार हैं। अगर हम प्रकृति के इन उपहारों के साथ अनावश्यक छेड़छाड़ करेंगे तो असंतुलन पैदा होगा और मानव समाज के साथ-साथ सभी प्राणियों को इसके दुष्परिणाम भुगतने होंगे। इसलिए हम सबकी सामूहिक जवाबदेही है कि हम प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में अपना योगदान दें। उन्होंने कहा गिरता हुआ जल स्तर विशेष चिंताजनक है। इसलिए हमें न केवल खुद पानी सहेजना है बल्कि लोगों को भी इसके लिये जागरूक करना है। केन्द्रीय मंत्री तोमर ने इस मौके पर यह भी कहा कि डायबिटिक फुड्स के बढ़ते चलन के कारण चिंताजनक परिस्थितियां बन रही हैं। खुशी की बात है कि भारत सरकार के प्रस्ताव पर संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2023 को मिलिट्स ईयर घोषित किया है। इससे मिलिट्स फूड को बढ़ावा मिलेगा। जल पुरूष के नाम से

विख्यात राजेन्द्र सिंह ने इस अवसर पर कहा कि देश में 90 भू-सांस्कृतिक केन्द्र हैं। भारत के कृषि विश्वविद्यालयों को चाहिए कि इन भू-सांस्कृतिक केन्द्रों और एग्रो क्लायमेटिक जोन में किसानों को ऐसी फसलें लेने के लिये जागरूक करें जो कम पानी में अधिक पैदावार देती हैं। एग्रो क्लायमेटिक जोन के अनुसार फसलें बोने पर केवल 40 प्रतिशत पानी के साथ उत्पादन लिया जा सकता है। उन्होंने फसल चक्र और वर्षा चक्र के ठीक से योग करने का काम भारत के कृषि विश्वविद्यालय करें। कार्यक्रम में तेलंगाना वाटर रिसोर्स संस्था के चेयरमेन प्रकाश राव, तमिलनाडु से जल यात्रा लेकर आए गुरूस्वामी, आंध्रप्रदेश से पधारे जल योद्धा सत्यनारायण कुलसेठी तथा डॉ. संजय सिंह व मानसिंह राजपूत सहित अन्य जल योद्धा मौजूद थे।

नागरिकों की भागीदारी स्वच्छता के लिये जरूरी

ग्वालियर। नागरिकों की भागीदारी स्वच्छता के लिये जरूरी' जीवाजी यूनिवर्सिटी के अटल सभागार आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में ग्वालियर सांसद श्री विवेक नारायण शेजवलकर ने सभागार में उपस्थित शहर के नागरिकों में उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि हम सबने ठाना है ग्वालियर को स्वच्छता में नम्बर एक स्थान पर लाना है। उन्होंने कहा कि स्वच्छता हमारे अंदर है बस उसे समाज में लेकर जाना है। जिस प्रकार हम अपने घर को साफ व स्वच्छ रखते हैं उसी प्रकार हमें अपने कॉलोनी व शहर को स्वच्छ रखना है।

ग्वालियर पूर्व विधायक श्री सतीश सिकरवार ने इस अवसर पर सभी को स्वच्छता की शपत दिलाई। साथ ही कहा कि हम अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भी समझें तो हम अपने ग्वालियर को स्वच्छता में अव्वल ला सकते हैं। शहर का प्रत्येक नागरिक शहर को अपना घर समझे तभी हमारा शहर स्वच्छ हो सकता है। नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कन्याल ने निगम द्वारा स्वच्छता सर्वेक्षण 2022 की तैयारियों को लेकर स्वच्छता के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों को प्रजेंटेशन के माध्यम से सभी को अवगत कराया कि उन्होंने स्वच्छता के लिए क्या-क्या तैयारियां की हैं, नगर निगम क्या करने जा रहा है, नगर निगम आपसे क्या अपेक्षा रखता है तथा अच्छी रैक आने पर क्या फायदा होगा आदि बिंदुओ पर प्रजेंटेशन दिया। उन्होंने बताया कि केदारपुर लैंडफिल साइड को चालू कर लिया गया है तथा शहर में 7 कचरा ट्रांसफर स्टेशन में से 5 चालू हो चुके हैं एवं दो को एक सप्ताह में चालू कर लिया जाएगा। डोर टू डोर कचरा संग्रहण 100 प्रतिशत किया जा रहा है। इसके साथ ही स्वच्छता के लिए जरूरी नये वाहन खरीदें हैं, जिसमें 5 वाटर कैनन मशीन में से 3 आ चुकी हैं। डेरियों से गोबर संग्रहण किया जा रहा है।

पर्यावरण के प्रदूषण से जगत ग्रस्त

आज सम्पूर्ण पर्यावरण में हो रहे नुकसान से त्राहि-त्राहि कर रहा है। एक तरफ कोरोना की त्रासदी ने सम्पूर्ण विश्व को बुरी तरह प्रभावित किया है। कोरोना काल में सम्पूर्ण जगत की हालत खराब हो गई है विश्व के लोग इस महामारी से त्राहि-त्राहि कर रहे हैं इसने अमेरिका जैसे शक्ति सम्पन्न राष्ट्र भी घुटने के बल खडे कर दिये। चीन के छोटे से शहर से होते हुए संपूर्ण विश्व को एक लहर, दूसरी लहर मे घातक चपेट में ले लिया अब तीसरी लहर की चेतावनी ने दुनिया को डरा दिया है। इस बीमारी मे सबसे ज्यादा कमी ऑक्सीजन की महसूस की गई ऑक्सीजन की कमी को पूरा करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक है वृक्ष । वृक्षों की अंधाधुंध कटाई ने हमारे पर्यावरण के तंत्र को बुरी तरह क्षतिग्रस्त कर दिया है।

शैलेश सिंह कुशवाह
(प्रबंध संपादक)
वरिष्ठ पत्रकार ग्वालियर मध्य प्रदेश

पर्यावरण को सबसे ज्यादा नुकसान प्रदूषण से हुआ है। प्रदूषण मानव निर्मित प्रदूषण भी बहुतायत मे है ? मनुष्य की लापरवाही का दुष्परिणाम सम्पूर्ण जीव जगत को भुगतना पड़ रहा है।

पर्यावरण के प्रमुख प्रदूषक तत्व विद्यमान हैं जिसमें दृश्य प्रदूषण धूल, धुआ, गैस कचरा, सीवर के अपशिष्ट पदार्थ औद्योगिक कचरा । अदृश्य प्रदूषक जहरीली गैस, बैक्टीरिया, विषेले रसायन जैसे घातक अवयव हमारे वातावरण को और अधिक प्रदूषित कर रहे हैं इससे हवा को अधिक जहरीला बना रहे हैं।

इस महामारी में प्रदूषण का भी अहम रोल रहा है जहां जहां हवा जहरीली रही वहा- वहां कोरोना का कहर भी ज्यादा रहा । आज पूरे विश्व में प्रदूषण का जहर बहुतायत मे घुलता जा रहा है इसका एक उदाहरण हमारे देश की राजधानी दिल्ली मे भी देखा गया प्रदूषण की मात्रा इतनी अधिक बढ़ गई कि दिल्ली सरकार को लोगों को जागरुक करने के लिए करोडो रुपये का विज्ञापन करना पड़ा. इससे भी काम नही चला तो सुप्रीम कोर्ट में दिल्ली सरकार एवं केन्द्र सरकार को फटकार लगाई कि दिल्ली के लोगों को शुद्ध हवा अर्थात् ऑक्सीजन मिले इसके लिए दोनों सरकार क्या काम कर रही है शीघ्र अवगत कराऐं। प्रदूषण तभी जड़ से समाप्त होगा जब सरकारी तंत्र के साथ आमजन भी इसमें अपनी सहभागिता निभाए। प्रदूषण देश दुनिया में इस प्रकार हावी है कि प्रदूषण से संसार त्राहिमाम् त्राहिमाम कर रहा है। प्रदूषण की भयावहता इतनी अधिक हो गई है कि लोगों को सांस लेने के लिए शुद्ध ऑक्सीजन लेना भी दूभर हो गया है भारत की राजधानी दिल्ली भी इस दिशा में बढ़ रही है देश की राजधानी में धूल धुआ और अन्य अपशिष्ट पदार्थों का प्रभाव खतरनाक स्तर से ऊपर पहुंच गया है जिससे लोग सांस में घुटन महसूस कर रहे हैं दीपावली के समय यह मंजर और अधिक घातक हो गया था जिस कारण दिल्ली में सांस के रोगियों की संख्या में भारी इजाफा हुआ इसके लिए केंद्र सरकार दिल्ली सरकार और सुप्रीम कोर्ट को भी संज्ञान लेना पड़ा सुप्रीम कोर्ट ने तो दोनों सरकारों को भी आड़े हाथों लिया आप इस बात से अंदाजा लगा सकते हैं कि देश में प्रदूषण की स्थिति कितनी गंभीर है आज अगर इस दिशा में ठोस कदम नहीं उठाया गया तो आने वाले समय में समस्या और अधिक विकराल रूप धारण करेंगी इसलिए हम सबको इस दिशा में सार्थक प्रयास करने की आवश्यकता है इसके लिए सरकारी तंत्र की जिम्मेदारी के साथ साथ आम नागरिक की जिम्मेदारी भी है कि वह अपने देश की आबोहवा को सुधारने में अपनी अहम भूमिका निभाई जाए ताकि देश के लोगों को शुद्ध ऑक्सीजन मिले और आने वाली पीढ़ी को शुद्ध वातावरण मिल सके।आओ हम सब मिलकर प्रयास कर जल, जंगल जमीन को प्रदूषण मुक्त बनाऐं अपने परिवेश को स्वच्छ बनाहे. अपनी धरा को स्वच्छ बनाऐं विश्व को प्रदूषण मुक्त बनाए।

ग्वालियर दुर्ग को मिला गौरव भी इतिहास के अध्यायों में सिमट कर रह गया

डॉ. सुरेश सम्राट
वरिष्ठ संपादक, लेखक
9406502099

शेरशाह सूरी द्वारा स्थापित सूर-वंश का नाश होते ही, ग्वालियर दुर्ग को सत्ता के एक केन्द्र के रूप में मिला गौरव भी इतिहास के अध्यायों में सिमट कर रह गया। अकबर के सत्तारूढ़ होते ही ग्वालियर चंबल क्षेत्र की दिशा और दशा ही बदल गई। हुमांयू की मृत्यु के बाद अकबर सन् 1556 में गद्दी पर बैठा। उस समय उसके अधीन कोई खास इलाका नहीं था। इसी वर्ष पानीपत की दूसरी लड़ाई में उसने हेमू को पराजित करके, आगरा, दिल्ली और पंजाब को जीत लिया। सन् 1561 आते-आतें उसने मध्यभारत में ग्वालियर और चंबल क्षेत्र के साथ राजस्थान में अजमेर तक राज्य का विस्तार कर लिया। अकबर द्वारा ग्वालियर दुर्ग पर कब्जा करने के बाद इस दुर्ग पर सन् 1754 तक मुगलों की ही हुकूमत रही। इस दौरान मुगलों ने ग्वालियर दुर्ग का उपयोग कैद खाने के रूप में किया। शाही खानदान के कई लोगों का कत्ल हुआ। जिनकी चीखें इतिहास में दर्ज हैं।

अकबर के दौर की ग्वालियर से जुड़ी एक और बड़ी घटना है इतिहासकार अबुल फजल की आंतरी के निकट हत्या। अबुल फजल न केवल अकबर के नवरत्नों में शामिल था वरन् अकबर उसे अपना सबसे प्रिय मित्र और सलाहकार मानता था, अबुल फजल की हत्या ने अकबर को हिलाकर रख दिया। कई तरह की कड़ी कार्रवाई और जांचों के बावजूद अकबर जीते जी इस हत्याकाण्ड के आरोपियों को पकड़ नहीं सका। इस प्रकार अकबर के नवरत्नों में दो रत्नों का संबंध ग्वालियर से रहा। एक तानसेन का जन्म ग्वालियर में हुआ। और दूसरे अबुल फजल की मृत्यु ग्वालियर क्षेत्र में हुई।

ग्वालियर के सूफी संत मौहम्मद गौस का 10 मई 1563 (14 रमजान हि. 970) को आगरा में निधन हुआ। यद्यपि उनके निधन की तिथि पर विवाद है तथा बाकी तिथि इस तिथि से पूर्व की हैं। लेकिन यह निर्विवाद है कि उनका शव ग्वालियर लाया गया। मौहम्मद गौस के निधन के बाद भी उनके बेटे और सज्जादनशीन शाह अब्दुला से अकबर के संबंध बने रहे। शाह अब्दुल्ला की देख-रेख में ही गौस के मकबरे का निर्माण हुआ, जो सूफी संस्कृति और स्थापत्य कला की दृष्टि से आज भी ग्वालियर के पर्यटन-स्थल के रूप में जाना जाता है।

अकबर के शासन के शुरू में कुछ समय तक ग्वालियर का राजनीतिक महत्व बना रहा। लेकिन मुहम्मद गौस के निधन के बाद ग्वालियर की पहचान विशाल मुगल सल्तनत के एक छोटे से भू-भाग के रूप में रह गई। उधर इस क्षेत्र में मुगल सल्तनत को चुनौती देने वाली शक्तियां भी नहीं रहीं। इसके विपरीत ग्वालियर चम्बल क्षेत्र की स्थानीय छोटी-बड़ी शक्तियों ने अकबर की अधीनता स्वीकार करने में ही अपनी भलाई समझी। आगे चलकर तो स्थिति यहां तक बिगड़ी कि सत्ता और 'संगीत' का कई सदियों तक केन्द्र बिन्दु रहने वाला ग्वालियर दुर्ग, महज मुगलों के इस्तेमाल के लिए एक कारागार बनकर रह गया। यह अलग बात है कि इस कारागार में जहांगीर के बेटे और शाहजहां के पुत्र और पौत्र को चीख-चीखकर प्राण देने पड़े।

अकबर द्वारा सन् 1579-80 में अपने विस्तृत साम्राज्य को 15 सूबों में बांटा। इस व्यवस्था में ग्वालियर और चंबल क्षेत्र आगरा और अजमेर के सूबों में बंट गया। प्रशासनिक इकाइयों में सूबे के बाद सरकार और महालों की व्यवस्था की गई। ग्वालियर को सरकार का दर्जा मिला। इसके अन्तर्गत अलापुर, सरसेनी, खाड़ोली, बदरेंटा, चिनौर, अनहोन, जखोदा, सिलावली, सरबन्दा सहित कुल तेरह महाल बनाए गए। प्रत्येक पर प्रधान के रूप में मुकद्दम के अलावा कानूनगो तथा अन्य अमले की नियुक्ति की गई। ग्वालियर-चंबल क्षेत्र का वह इलाका जो

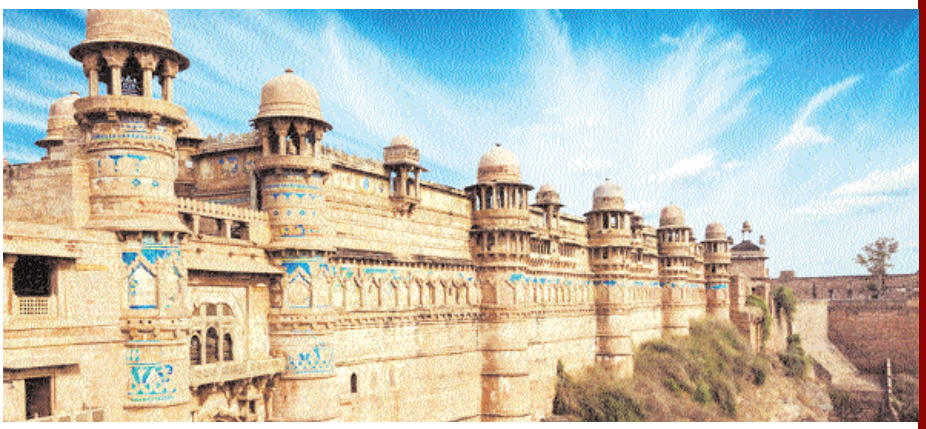

आगरा सूबे में शामिल नहीं था उसे अजमेर सूबे में शामिल किया गया। चम्बल क्षेत्र में इन दिनों सूबों की संस्कृति से जुड़े अवशेष अब भी देखने को मिल जाते हैं।

सन् 1602 आते-आते अकबर की सल्तनत और मजबूती इतनी बढ़ गई कि उत्तर भारत और लगभग पूरा राजस्थान उसमें समा गया। उस समय ग्वालियर जैसे छोटे से भूभाग की सल्तनत की दृष्टि में क्या अहमियत रह गई होगी, इसका अनुमान लगाया जा सकता है। ग्वालियर के तोमर-राजवंश के वंशज भी अकबर की सेना में शामिल होकर, उसके सामंत हो गए थे। ऐसे में ग्वालियर को सल्तनत के प्रशासन के जरिए जो शासन मिला, उससे ग्वालियर राष्ट्रीय धारा से जुड़ा। ग्वालियर और उसके आसपास स्थानीय सत्ता जैसी स्थितियां लगभग समाप्त हो गईं। लेकिन बुन्देलखंड में यह स्थिति नहीं थी। इसके विपरीत, आगरा के निकट होने के कारण अकबर के काल में ग्वालियर क्षेत्र की जन-संस्कृति के विकास को एक नया आयाम मिला। उस दौर में एक ओर ब्रजभूमि का तो दूसरी ओर बुन्देलखंड का जन-जीवन ग्वालियर के निकट तेजी से आना शुरू हुआ। इसके ग्वालियर क्षेत्र का रहन-सहन ही नहीं, बोली और भाषा भी प्रभावित हुई। अकबर के काल से पूर्व इस क्षेत्र की जिस भाषा को ग्वालियरी भाषा जैसो विशिष्ट और स्थानीयता से जुड़ा नाम प्राप्त था, उसमें ब्रज और बुन्देली, बोलियां घुलने-मिलने लगीं। एक ओर ग्वालियर से जुड़े मुरैना क्षेत्र की ग्वालियरी भाषा पर ब्रज का, तो भिण्ड की बोली पर बुन्देली और श्योपुर की बोली पर राजस्थानी बोलियों का प्रभाव पड़ने लगा। यह प्रभाव इतना जबर्दस्त था कि मुरैना, भिण्ड, श्योपुर और दतिया क्षेत्र के घरों में बोली जाने वाली बोलियों का अन्तर्भेद आज भी स्पष्ट देखा जा सकता है।

इस प्रकार अकबर का काल ग्वालियर के राष्ट्रीय धारा से जुड़ने का काल कहा जा सकता है। लेकिन बुन्देलखंड के बारे में यह बात नहीं कही जा सकती। उस क्षेत्र में स्थानीय सत्ताधीशों में पारिवारिक विग्रह की स्थिति बनी हुई थी। मुगल सल्तनत जहां इससे अपना हित साध रही थी, वहीं राजपरिवारों के असंतुष्ट परिजन अपना-अपना लाभ सोच रहे थे। बुन्देलखंड में ऐसे ही एक असंतुष्ट थे वीर सिंह बुन्देला। उनके कारण इस क्षेत्र में स्थिति तेजी से गर्म हो रही थी। उन्हीं दिनों सम्राट अकबर और शहजादा सलीम के बीच भी तनाव बढ़ रहा था। शहजादा सलीम अपनी निरंतर बढ़ती महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति में अबुल फजल ही अकबर को गलत जानकारियां देकर दोनों के बीच गलतफहमियां बढ़ा रहा था। इस प्रकार अपने-अपने स्तर पर शहजादा सलीम और वीर सिंह बुन्देला एक जैसा तनाव झेल रहे थे। ऐसी स्थिति में वीर सिंह बुन्देला को अपने लिए शहजादा सलीम के जरिए आशा की किरण दिखाई दी।

ग्वालियर के निकट बड़ौनी के बागी जागीरदार वीर सिंह बुन्देला की महत्वाकांक्षा बुन्देलखण्ड क्षेत्र के राजा मधुकर शाह का राज्य प्राप्त करने की थी तथापि वह इस स्थिति में नहीं था कि अपने बल पर इस महत्वाकांक्षा की पूर्ति कर सके। इसीलिए वह मुगलों का सहयोग प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील था। सन् 1595 में वीर सिंह ने इसी उद्देश्य से झेलसा के जागीरदार अब्दुर्रहीम खानखाना से उस समय ग्वालियर के निकट भेंट की, जब खानखाना दक्षिण के अभियान पर जाते हुए ग्वालियर से गुजर रहा था। लेकिन खानखानी ने वीर सिंह की कोई भी मदद करने से साफ इंकार कर दिया। तब वीर सिंह ने सीधे शहजादा सलीम से मिलने की ठान ली। इसके लिए शरीफ खां ईरानी के रूप में उसे एक सूत्र भी मिल गया। शरीफ खां, सलीम का बचपन का दोस्त और वफादार कृपा पात्र था। इसी के माध्यम से सन् 1602 में वीर सिंह ने सलीम से भेंट की और जल्दी ही वह सलीम की नजरों में चढ़ गया। वीर सिंह ने जब सलीम को अपनी समस्या बताई तब सलीम ने उस पर विश्वास करते हुए एक खतरनाक काम सौंपा। सलीम ने वीर सिंह से कहा कि जल्दी ही अबुल फजल बुंदेलखंड के उस मार्ग से गुजरने वाला है, जो तुम्हारे इलाके में पड़ता है। यदि तुम उसे मार्ग में ही खत्म कर दो तो हम तुम पर सभी प्रकार की कृपा करेंगे। वीर सिंह बुन्देला ने ठीक वैसा ही किया।

इन्वेस्टर्स मीट से बदलेगी बालाघाट की तस्वीर

● पुष्पांजली टुडे ब्यूरो

प्रकृति ने बालाघाट जिले को जल, खनिज एवं वन संपदा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कराया है। बालाघाट जिले में प्रदेश का सर्वाधिक धान पैदा होता है। इस जिले में उपलब्ध संसाधनों पर आधारित उद्योग लगाने एवं उनमें निवेश की अच्छी संभावना है। इससे यह जिला तेजी से विकास की ओर अग्रसर होगा। उद्यमी यहां पर आयें और उद्योग लगाने के लिए अधिक से अधिक राशि का निवेश करें। उद्यमियों को हम सारी सुविधायें उपलब्ध करायेंगें। यह बातें मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने 18 अगस्त को बालाघाट में आयोजित इन्वेस्टसर्स मीट में उपस्थित उद्यमियों को वर्चुअल संबोधित करते हुए कही।

रितेश कटरे
ब्यूरो चीफ बालाघाट

बालाघाट जिले में नये उद्योग लगाने एवं निवेश को प्रोत्साहित करने के मकसद से 18 अगस्त को शुभारंभ लान नवेगांव-बालाघाट में आयोजित इन्वेस्टर्स मीट में मध्यप्रदेश शासन के औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन मंत्री राजवर्धन सिंह दत्तीगांव एवं आयुष मंत्री रामकिशोर ÷नानो÷ कावरे, मध्यप्रदेश शासन के पूर्व कृषि मंत्री एवं वर्तमान विधायक एवं मध्यप्रदेश अन्य पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष गौरीशंकर बिसेन, सांसद डॉ ढालसिंह बिसेन, पूर्व विधायक रमेश भटेरे, कलेक्टर दीपक आर्य, अपर कलेक्टर विवेक कुमार, मायल के सीएमडी मुकुंद चौधरी, अन्य प्रशासनिक अधिकारी, गणमान्य अतिथि एवं मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, उड़ीसा एवं पश्चिम बंगाल के उद्यमी उपस्थित थे। इस इन्वेस्टर्स मीट में उद्यमियों से जिले में निवेश को लेकर एवं उन्हें शासन से मिलने वाली सुविधाओं पर विस्तार से चर्चा की गई। इस अवसर पर कृषि विभाग, कृषि महाविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्र बड़गांव द्वारा धान की प्रदर्शनी लगाई गई थी। इसके अलावा मत्स्योद्योग, मैंगनीज आधारित उत्पादों, वन उत्पाद एवं हाथकरघा वस्त्रों की प्रदर्शनी लगाई गई थी। देखा जाए तो बालाघाट जिले में प्रचुर मात्रा में बांस पाया जाता है। शासकीय भूमि के अलावा नीजी भूमि पर भी बांस की खेती की जा रही है। यहां पर बांस से जुड़े उद्यम भी लगाये जा सकते है। बालाघाट जिले में सुगंधित एवं अच्छी गुणवत्ता का चावल भी होता है। इस जिले में राईस मिल उद्योग के लिए भी अच्छी संभावनायें है। यह जिला अब बाघ (टाईगर) के नाम से भी अपनी अलग पहचान बना रहा है। इस जिले में पर्यटन के क्षेत्र में उद्योग लगाये जा सकते है। यदि सरकार रूचि दिखाएं तो बालाघाट जिला निरंतर आगे बढ़ सकता है और तरक्की कर सकता है। इसके लिए सरकार बालाघाट जिले में उद्योग लगाने एवं निवेश करने के इच्छुक उद्यमियों को हर संभव मदद करे । आज बालाघाट जिले में इन्वेस्टर्स मीट का आयोजन कर अच्छी पहल की गई है। यह इन्वेस्टर्स मीट बालाघाट जिले के विकास के मामले में मील का पत्थर साबित होगी।

मध्यप्रदेश बीमारू राज्य की श्रेणी से बाहर आकर अब विकसित राज्य में आ गया: राजवर्धन सिंह

मध्यप्रदेश शासन के औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन मंत्री राजवर्धन सिंह दत्तीगांव ने इस अवसर पर उद्यमियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार की उद्योगों को प्रोत्साहन देने की नीति के कारण मध्यप्रदेश बीमारू राज्य की श्रेणी से बाहर आकर अब विकसित राज्य में आ गया है। प्रदेश सरकार उद्यमियों को निवेश के लिए प्रोत्साहित करने नई नीतियां बना रही है। बालाघाट जिले में उद्यमियों ने बांस, एथेनाल, मैंगनीज एवं राईस मिल उद्योग लगाने के लिए प्रस्ताव दिये है। जिले में इन उद्योगों के लगने से यहां के युवाओं को रोजगार मिलेगा। उन्होंने कहा कि बालाघाट में आयोजित इस इन्वेस्टर्स मीट का प्रदेश एवं देश के उद्यमियों को संदेश है कि, बालाघाट आईये और यहां पर निवेश करिये। उन्होंने बालाघाट जिले में एथेनाल उद्योग के लिए मिले प्रस्तावों पर प्रसन्नता व्यक्त? करते हुए कहा कि भोपाल में भी शीघ्र ही ऐथेनाल उद्योग के लिए प्रदेश स्तरीय इन्वेस्टर्स मीट का आयोजन किया जायेगा।

उद्योग लगने से यहां के युवाओं को रोजगार मिलेगा: रामकिशोर नानो कावरे आयुष मंत्री

मध्यप्रदेश शासन के आयुष मंत्री श्री रामकिशोर ÷नानो÷ कावरे ने इस अवसर पर उद्यमियों को संबोधित करते हुए कहा कि आज का दिन बालाघाट जिले के लिए गौरव का दिन है। प्रदेश शासन की नीतियों के तहत उद्यमियों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इस जिले में मैंगनीज प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। मैगनीज आधारित उद्योग लगने से यहां के युवाओं को रोजगार मिलेगा। जिले में एक उत्पाद योजना के अंतर्गत चिन्नौर की खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

स्थानीय संसाधनों पर आधारित उद्योगों के लिए लाभ होगा: डॉ ढालसिंह बिसेन सांसद

सांसद डॉ ढालसिंह बिसेन ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा कि बालाघाट जिले में अधोसंरचना का तेजी से विकास हो रहा है। इससे उद्यमियों को बहुत मदद मिलेगी। बालाघाट एवं तिरोड़ी में रैक पाईंट बन गया है। इससे स्थानीय संसाधनों पर आधारित उद्योगों के लिए लाभ होगा।

जिला तेजी से विकास करेगा - गौरीशंकर बिसेन विधायक- विधायक श्री गौरीशंकर बिसेन ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा कि जिले में उपलब्ध खनिज, वन एवं राईस पर आधारित उद्योगों के लगने से इस जिले के विकास को गति मिलेगी और यह जिला तेजी से विकास करेगा।

फैरो एलाय का हब बनेगा बालाघाट जिला

बालाघाट जिला अब फैरो एलाय का हब बनने की ओर अग्रसर हो रहा है। इन्वेस्टर्स मीट में लगभग 2200 करोड़ रुपये का निवेश फैरो एलाय उद्यम में करने के लिए उद्यमियों ने प्रस्ताव दिया है। इन उद्योगों के प्रारंभ होने पर बालाघाट जिला फैरो एलाय का सबसे बड़ा उत्पादक बन जायेगा। फैरो एलाय के लिए श्री अमर अग्रवाल ने 133 करोड़ रुपये, रायपुर के श्री निकेत खंडेलवाल ने 155 करोड़, रायपुर के उमंग जुनेजा ने 150 करोड़ रुपये, रायगढ़ के श्री संदी डे ने 225 करोड़ रुपये, वर्धमान पंश्चिम बंगाल के श्री तेजपाल सिंह ने 112 करोड़ रुपये, श्री विपिन अग्रवाल ने 110 करोड़ रुपये, श्री संदीप गोयनका ने 112 करोड़ रुपये, श्री अजय खंडेलवाल ने 190 करोड़ रुपये, श्री हर्ष त्रिवेदी ने 269 करोड़ रुपये, श्री तपन खंडेलवाल ने 111 करोड़ रुपये, श्री शंकर केवलानी ने 100 करोड़ रुपये, श्री पार्थ सिंघल ने 126 करोड़ रुपये, श्री विनय कुमार राधेश्याम बाटड़ ने

105 करोड़ रुपये का उद्यम लगाने के लिए सहमति दी है। इस मीट में एथेनाल बायोफ्यूल के लिए श्री सी एस तिवारी ने 800 करोड़ रुपये, श्री अतुल वैद्य ने 212 करोड़ रुपये, आयुषी जैन ने 800 करोड़ रुपये, सुगर मिल के लिए श्री सम्राट सिंह सरस्वार ने 125 करोड़ रुपये, केमिकल उत्पादन के लिए श्री अंकित अग्रवाल ने 200 करोड़ रुपये, स्टील एवं उसके उत्पाद के लिए श्री बालकृष्णा सिंह ने 120 करोड़ रुपये का उद्यम लगाने की सहमति दी है। इसके अलावा 32 अन्य उद्यमियों ने 280 करोड़ रुपये के लघु उद्यम लगाने के प्रस्ताव दिये है।

मायल के सीएमडी श्री मुकुंद चौधरी ने फैरो एलाय उद्यम के लिए जिले में उपलब्ध मैगनीज उद्यमियों को सुगमता से प्रदाय किया जा सके इसके लिए हर संभव मदद करने का आश्वासन दिया। बालाघाट जिले के ग्राम बोडुन्दाकला में 305 एकड़ उद्योगों के लिए चिन्हित की गई है और शासन द्वारा यहां पर 52 एकड़ जमीन 220 केव्ही का विद्युत उपकेन्द्र बनाने के लिए आबंटित कर दी है। यहां पर विद्युत उपकेन्द्र का काम शीघ्र प्रारंभ होने जा रहा है।

नवागत कलेक्टर ने इन्वेस्टर्स मीट को लेकर बैठक

बालाघाट जिले के पुर्व कलेक्टर दीपक आर्य के स्थानांतरण पश्चात नवागत कलेक्टर में उपलब्ध खनिज, वन एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों पर डा गिरिश कुमार मिश्रा ने इन्वेस्टर्स मीट में प्राप्त प्रस्ताओं को गति प्रदान करने बैठक ली। 18 अगस्त 2021 को इन्वेस्टर्स मीट का आयोजन किया गया था। इस मीट में फैरो मैंगनीज ईकाई, बायो फ्यूल एथेनाल, राईस इंडस्ट्री एवं अन्य उद्यमों में निवेश के लिए उद्यमियों की ओर से लगभग 4500 करोड़ रुपये के प्रस्ताव दिये गये है। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने 29 अगस्त को बालाघाट प्रवास के दौरान बालाघाट जिले में निवेश के लिए तैयार उद्यमियों को हर संभव मदद करने का आवश्वासन दिया है। 18 अगसत 2021 की बालाघाट इन्वेस्टर्स मीट में प्राप्त निवेश के प्रस्ताओं को गति प्रदान करने एवं अब तक इस दिशा में हुई प्रगति की समीक्षा के लिए आज 12 सितम्बर को मध्यप्रदेश शासन के आयुष मंत्री श्री रामकिशोर ÷नानो÷ कावरे की अध्यक्षता में जिले के अधिकारियों एवं उद्यमियों की बैठक का आयोजन किया गया था। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित इस बैठक में पूर्व कलेक्टर श्री दीपक आर्य, कलेक्टर डॉ गिरीश कुमार मिश्रा, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री विवेक कुमार, पूर्व विधायक श्री रमेश भटेरे, श्रीमती मौसम हरिनखेड़े, एमआईडीसी के कार्यकारी निदेशक श्री सी एस धुर्वे, एमपीईबी के अधीक्षण यंत्री श्री एम ए कुरैशी, लोक निर्माण विभाग के कार्यपालन यंत्री श्री राजीव श्रीवास्तव, बालाघाट चेंबर्स आफ कामर्स के अध्यक्ष श्री अभय सेठिया, उद्यमी श्री आशिष त्रिवेदी, श्री हर्ष त्रिवेदी, श्री अतुल वैद्य एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे। आयुष मंत्री श्री कावरे ने बैठक में अधिकारियों एवं उद्यमियों से कहा कि इन्वेस्टर्स मीट में जिले में निवेश संबंधी जो भी प्रस्ताव उद्यमियों की ओर से प्राप्त हुए हैं, वह धरातल पर भी नजर आना चाहिए। यह केवल इन्वेस्टर्स मीट बनकर न रह जाये, बल्कि उसके परिणाम भी सामने आने चाहिए। निवेश के इच्छुक उद्यमियों को जमीन आबंटन से लेकर अन्य अनुमतियां व अधोसंरचना उपलब्ध कराने में कितनी प्रगति हुई इसकी नियमित रूप से समीक्षा होना चाहिए। इसके लिए उद्यमियों एवं अधिकारियों की एक समिति बनाकर हर 15 दिनों में बैठक आयोजित की जाये और इस दिशा में हुई प्रगति की समीक्षा की जाये। शासन स्तर पर संबंधित विभाग के मंत्री स्तर पर जो कुछ भी समस्यायें आयेंगी उनके निराकरण के लिए मैं स्वयं भोपाल में प्रयास करूंगा। मंत्री श्री कावरे ने कहा कि उद्यमियों को आबंटन के लिए जो जमीन चिन्हित की गई है वहां पर सड़क बनाने का काम किया जायेगा। प्रथम चरण में बोडुन्दाकला एवं खापा में सड़क निर्माण के लिए प्रयास किया जायेगा। उन्होंने लघु उद्योगों के अंतर्गत राईस मिलर्स के लिए कनकी में में क्लस्टर्स बनाने कहा।

जिले में निवेश को प्रोत्साहित किया जायेगाः कलेक्टर

कलेक्टर डॉ गिरीश कुमार मिश्रा ने बैठक में बताया कि उद्यमियों को जिला स्तर से जो सुविधायें दी जा सकती हैं, उन पर तत्परता से कार्य किया जायेगा और जिले में निवेश को प्रोत्साहित किया जायेगा। उद्योगों के लिए चिन्हित जमीन तक पहुंचे के लिए सड़क एवं अन्य अधोसंरचना निर्माण के लिए भी सार्थक प्रयास किये जायेंगें। बैठक में बताया गया कि बालाघाट जिले में उद्योग स्थापना के लिए लैंड बैंक भी बनाया गया है। इसमें जिले के 39 ग्रामों की लगभग 1216 हेक्टेयर जमीन को चिन्हित किया गया है। यह चिन्हित जमीन उद्यमियों को उद्योग लगाने के लिए शासन की नीति के अनुरूप आबंटित की जायेगी।

इन्वेस्टर्स मीट में प्राप्त प्रस्ताओं का सपना होगा साकार!

जिले के विकास के लिए तथा रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य के साथ किये गये इन्वेस्टर्स मीट में प्राप्त प्रस्ताओं पर अमल किया जाएगा या फिर इसे भी खानापूर्ति के साथ बदलते समयानुसार कागजों में सिमटा दिया जाएगा। एक ओर जिले का युवा अब इसी आस में आस लगाए बैठा है कि जिले में उद्योग होंगे, कंपनीया होगी, कारखाने होंगे और हमें उन कंपनियों में, उद्योगों में, कारखानों में प्रर्याप्त मानदेय के साथ रोजगार मिलेगा। शासन के मंत्री विधायक सांसद और यहां तक प्रशासनिक अधिकारियों ने भी जिले के विकास पर मुहर लगा दी है। सबसे बड़ी बात यह है कि लगने वाले उद्योगों में कच्चा माल बालाघाट जिले में ही उपलब्ध हो जाएगा। इसके बड़े फायदे यह है कि ट्रांसपोर्टर के साथ एक ही सामग्री के लिए अनेक बार लगने वाला टेक्स का पैसा बच जाएगा। फिलहाल जिले के विकास के लिए आयोजित इन्वेस्टर्स मीट मील का पत्थर साबित होगी या फिर इन्वेस्टर्स मीट तास के पत्तों की तरह ढह जाएगी।

स्वयं को बेहतरीन बनाइए!

● पुष्पांजली टुडे ब्यूरो

डॉ. माध्वी बोरसे
लेखिका, राजस्थान (रावतभाटा)

एक जिंदगी है, दूसरे जन्म का हमें कोई पता नहीं! इतना तो पता है कि हमें इस जिंदगी को प्रसन्नता पूर्वक, सकारात्मक सोच के साथ, अच्छे व्यवहार के साथ और प्रेम से व्यतीत करनी चाहिए! जिंदगी में उतार-चढ़ाव, मुश्किल परेशानी तो आती ही रहेगी! अगर दुख नहीं होगा फिर हमें सुख में आनंद कैसे आएगा, अगर रोना नहीं आएगा तो फिर हंसने में खुशी कैसे होगी, जिंदगी बहुत ही सरल सी नहीं हो जाएगी?

चलिए जिंदगी में कोई भी बाधा आए, परेशानियां आए, तकलीफ आए , उस पर अपनी सारी ऊर्जा अपनी परेशानियों पर लगाने की जगह हमें यह याद रखना चाहिए की अब हमने क्या सीखा और अपनी ऊर्जा हम अपने आप को बेहतर बनाने में लगाएं! जी कहना बहुत ही आसान है, लिखना भी, पर जिंदगी में रोना, हार मान जाना यह उससे भी ज्यादा आसान है, मुश्किल है, तो बाद में यह सोचना कि हमने अपने समय को, रोने में, किसी पर इल्जाम लगाने में, और जिंदगी को पहचानने में कितना वक्त जाया कर दिया है। अगर इसी तरह जिंदगी जीनी है तो क्यों ना मुश्किल का सामना पहले ही कर लिया जाए। जब भी हम बहुत ही खुशी में हो, बहुत गुस्से में हो, कोई निर्णय ना ले, पर उस ऊर्जा को कोई ना कोई कार्य करने में व्यतीत करें, हमारा कार्य जरूर सफल होगा। इस जिंदगी में, अगर हम देखें, तो हम पाएंगे कि हमने यह जीवन, अनुभव पाने, कुछ नया सीखने और अपने आप को बेहतरीन बनाने के लिए ही लिया है! बेहतर बनने का मतलब यह नहीं, लोग हमारी सराहना करें, इसका मतलब यह है कि, हम अंदर से अपने आप को प्रसन्नता से भरा हुआ महसूस करें, संतुष्ट महसूस करें, ऊर्जावान महसूस करें और बहुत ज्यादा आत्मबल स्वयं में हो।

उम्मीद कभी ना छोड़िए, अपने आप को हर क्षेत्र में बेहतर बनाइए, जिसमें आप प्रश्न महसूस करते हैं।

खेलकूद, संगीत, नृत्य, शिक्षा या कोई अविष्कार करके! स्वयं को पसंद करें, स्वयं से प्रेम करें, सबसे पहले स्वयं का सम्मान करें, अपना काम समय पर करें, लोगों को खुश करने की जगह, पहले स्वयं की खुशी का भी ध्यान रखें, बस जरूरी यह है कि हमारी वजह से किसी को शारीरिक या मानसिक तकलीफ ना हो, पर इसकी वजह अगर यह है कि आप उनके पसंद का कार्य नहीं करते, विषय नहीं लेते या वस्त्र नहीं पहनते, विवाह नहीं करते, तो उन्हें नजरअंदाज करते हुए आगे बड़े! आपकी जिंदगी में किसी भी तरह की दखलअंदाजी करने का, किसी को भी अधिकार नहीं है, इसलिए मत करने दीजिए।

खुद को बेहतर बनाने के लिए कंफर्टेबल, स्वतंत्र रखना बहुत जरूरी है आप को बेहतर बनाने के लिए जरूरत है कि हम स्वयं पर ध्यान दें क्योंकि कोई भी हमें बेहतर बनने से रोक नहीं रहा है! दूसरों से तुलना करना, कंपटीशन करना, जलना, लड़ना, उनके बारे में बुराइयां करना, छोड़ दीजिए! इस तरह की सोच आपको आगे बढ़ाने की जगह पीछे की ओर धकेलती है, कमजोर बनाता है और बेहतर व्यक्ति बनने से रोकती है।

स्वयं को बेहतर बनाने के लिए यह भी जरूरी है की हम यह पूरा ध्यान रखे कि हमारी संगति कैसी है, संगति ज्यादातर बुरी अच्छी नहीं होती है, पर हम जिस भी तरह का इंसान बनना चाहते हैं, हमारे जो भी लक्ष्य है वह हमारे दोस्तों से मिलते हो ना कि जुदा हो फिर भी हमें बहुत से रिश्ते बचपन से ही मिले हैं, हमारे साथ है तो उनमें अच्छाइयों को परखने की कोशिश करें, उनकी अच्छाइयों को अपने अंदर उतारे, उनकी अच्छाइयों का कारण पूछे और जिंदगी को सही नजरिए से देख कर और बेहतर बनाएं।

ना बैठे अपनी परेशानियों को लेकर,

बेहतर बनना ही तो हमारा लक्ष्य है,
चलो बनाते हैं हर दिन को बेहतर,
इसी मैं हमारा बेहतर भविष्य है!

एटा में यातायात जागरुकता अभियान में लोगों को किया जागरूक

● पुष्पांजली टुडे ब्यूरो, एटा

एटा पुलिस महानिदेशक, उ.प्र. लखनऊ के निर्देशानुसार यातायात जागरुकता माह के रुप में मनाया गया। जिसका समापन आज वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एटा श्री उदय शंकर सिंह द्वारा बहुउद्देशीय हॉल पुलिस लाइन एटा में लगे यातायात जागरुकता कैम्प में उपस्थित लोगों को यातायात नियमों से सम्बन्धित जानकारी देकर किया गया। इस माह में जनसाधारण तथा स्कूल के बच्चों को यातायात नियमों की जानकारी दी गयी तथा यातायात नियमों का उल्लघंन करने वालों के विरुद्ध कार्यवाहियां भी की गईं। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एटा द्वारा समस्त उपस्थित लोगों, पुलिस अधिकारियों/कर्मचारियों से अपील की गयी कि वे अपने वाहन पर सही नम्बर प्लेट लगायें, अपने वाहन से सम्बन्धित समस्त कागजात जो चैकिंग के दौरान जांच किये जाते हैं उनको अपने साथ रखें, शराब पीकर गाड़ी न चलायें, ओवर स्पीड से बचें, तथा हेलमेट धारण कर ही मोटर साईकिल पर चलें ताकि दुर्घटना तथा अन्य कार्यवाही से बचा जा सकें इस दौरान अपर पुलिस अधीक्षक अपराध एटा श्रीमती स्नेहलता, क्षेत्राधिकारी ट्रैफिक श्रीमती कमलेश त्रिवेदी, क्षेत्राधिकारी सदर श्री राघवेंद्र सिंह राठौर, क्षेत्राधिकारी श्री विक्रांत द्विवेदी, प्रतिसार निरीक्षक पुलिस लाइन एटा श्री हरपाल सिंह, प्रभारी यातायात श्री बचान सिंह एवं अन्य पुलिस बल उपस्थित रहा।

साइबर सेल ने चलाया जागरूकता अभियान

● पुष्पांजली टुडे ब्यूरो

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा चलाया जा रहा साइबर जागरूकता अभियान माह के प्रथम बुधवार को आयोजित किया जाता है। इसी क्रम में आज दिनांक 01.12.2021 को दिल्ली पब्लिक स्कूल शिकोहाबाद रोड एटा में जाकर साइबर क्राइम सेल एटा द्वारा शिक्षक तथा छात्र एवं छात्राओं को साइबर क्राइम के बारे में एवं साइबर क्राइम से कैसे बचें इसके बारे में जागरूक किया गया। उनके द्वारा बताया गया कि इंटरनेट के इस्तेमाल के दौरान किस तरह से सावधानी बरतें। साइबर क्राइम/आनलाइन ठगी से बचने के लिए कुछ सावधानियां रखनी अति आवश्यक हैं। साइबर क्राइम अथवा किसी भी प्रकार की आनलाइन धोखाधड़ी से बचने के लिए जरूरी है कि प्रत्येक उपयोगकर्ता इंटरनेट का इस्तेमाल करते समय फर्जी एप्स/लिंक्स के प्रति सतर्क रहे। ताकि वह धोखाधड़ी का शिकार न हों। इसी तरह आगे भी माह के प्रथम बुधवार को अलग-अलग जगह जाकर साइबर क्राइम सेल द्वारा लोगों को जागरूक किया जाएगा।

बी एल भाटी बने आई एफ डब्ल्यू जे संगठन के निर्विरोध रानी उपखंड अध्यक्ष

सर्व समिति से निर्विरोध अध्यक्ष पद के नाम की घोषणा

● पुष्पांजली टुडे, नेनाराम सिरवी, पाली

आईएफडब्ल्यूजे प्रदेश अध्यक्ष उपेन्द्र सिंह राठौड़ के आदेशानुसार व पाली जिला अध्यक्ष अरूण जोशी के निर्देशानुसार पत्रकार संघ रानी के वार्षिक चुनाव 4 दिसंबर 2021 को चुनाव पर्यवेक्षक राजीव अग्रवाल विक्रमसिंह के अध्यक्षता में रानी स्थित ब्रह्माकुमारी आत्मज्योति भवन के सभागार में संपन्न हुए। । जिसमें सर्वसम्मति से बाबूलाल भाटी रानी को 2 वर्ष के लिए निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया। साथ ही पूर्व अध्यक्ष बशीरुद्दीन चढवा को पाली जिला अध्यक्ष अरुण कुमार जोशी के निर्देशानुसार आईएफडब्ल्यू जे संगठन पाली जिले में वरिष्ठ उपाध्यक्ष के पद पर नाम की घोषणा की गई। इस अवसर पर संगठन के परामर्शदाता राजकमल पारीक ने पत्रकारिता को लेकर बताया कि पत्रकार लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहलाता है। पत्रकार लोकतंत्र का चौथा स्तंभ वह समाज में पत्रकारों की अलग ही भूमिका होती हैं इसलिए आप अपनी कलम सकारात्मक रूप से चलाएं। उन्होंने कहा कि पत्रकार की पत्रकारिता लोगों की सोच को भी परिवर्तन करती हैं। इसलिए पत्रकारिता समाज को दिशा देने का काम करती हैं। वरिष्ठ पत्रकार गोंडवा टाइम्स के संपादक हिम्मत मालवीय ने पत्र और पत्रकारिता को लेकर विस्तृत जानकारी दी।उन्होंने कहा कि मीडिया समाज को अनेक

प्रकार से नेतृत्व प्रदान करता है इसमें समाज की विचारधारा प्रभावित होती हैं मीडिया समाज के विभिन्न वर्गों के हितों का रक्षक भी होता है। कार्यक्रम में ब्रह्मकुमारी की संचालिका सोनू बहन ने पत्रकारिता को लेकर बताया कि पत्रकारिता निष्पक्ष रुप से ही सही परिपेक्ष में प्रस्तुत करनी चाहिए लोकतंत्र में पत्रकार और पत्रकारिता दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं । समारोह के अंत में ब्रह्माकुमारी की संचालिका सोनू बहन ने आए हुए पत्रकारों का सम्मान किया गया । चुनाव पर्यवेक्षक राजीव अग्रवाल ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष बाबूलाल भाटी को उपखंड क्षेत्र की शीघ्र ही नई कार्यकारिणी को गठित करने के निर्देश दिए एवं पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।इस अवसर पर पत्रकार नरेंद्र बुनकर, हिमांशु फ्लोड, भेराराम बंजारा,महिपाल रावल, हितेश गुप्ता,मगराज चौहान, चौथा राम किरवा, अरविंद गोयल खौड,ओपाराम खौड़,भीमराज पारंगी, मांगीलाल घांची घेनड़ी,विकास शर्मा,नेनाराम चौधरी, आदि उपस्थित थे।

खाटू श्याम बाबा की महिमा

हर साल लाखों श्रद्धालु करते हैं बाबा खाटूश्यामजी के दर्शन

● उमाकान्त शर्मा पुष्पांजली टुडे संवाददाता।

राजस्थान के जयपुर शहर से 80 किलोमीटर दूर स्थित सीकर जिले के रिंगस के पास खाटूश्यामजी दरबार में देश के कोने कोने से प्रति वर्ष लाखों श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं। वैसे तो माह की एकादशी को बहुत भीड़ देखने को मिलती है खाटू श्याम जी को एकादशी का दिन बहुत प्रिय है।फिर भी यहाँ पर प्रतिदिन भी काफी संख्या में लोग दर्शन करने आते है।खाटूश्यामजी की महिमा अनादिकाल से ही है परंतु महाभारत काल से भगवान श्री कृष्ण के वरदान से कलयुग में श्री श्याम की अनंत महिमा है।खाटूश्यामजी के नामों की महिमा एवं वर्णन की विस्तृत जानकारी-

श्रीश्याम

श्री कृष्ण ने बर्बरीक को शीश दान मांगने की वजह भी बताई। उन्होंने कहा कि युद्ध आरम्भ होने से पूर्व युद्धभूमि पूजन के लिए तीनों लोकों में सर्वश्रेष्ठ क्षत्रिय के शीश की आहुति देनी होती है। इसलिए ऐसा करने के लिए वे विवश थे। बर्बरीक ने उनसे प्रार्थना की कि वे अन्त तक युद्ध देखने के इच्छुक हैं और अपना नाम उन्हें देने की प्रार्थना की। श्री कृष्ण ने उनकी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली। श्री कृष्ण इस बलिदान से प्रसन्न होकर बर्बरीक को युद्ध में सर्वश्रेष्ठ वीर की उपाधि से अलंकृत किया।साथ ही अपना नाम श्याम भी उन्हें दिया।

कलियुग के अवतारी

भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें श्याम नाम देने के साथ ही यह भी वरदान दिया कि वे कलियुग में पूजे जाएंगे। इसलिए उन्हें कलियुग का अवतारी भी कहा जाता है। अभी कलियुग चल रहा है और ऐसे में श्याम बाबा भक्तों की आस्था के केंद्र है। हर साल लाखों की संख्या में भक्त बाबा के दरबार में आकर हाजिरी लगाते है।

लीले का अश्वार

श्याम बाबा को लीले का अश्वार कहा जाता है। दरअसल, वीर बर्बरीक के पास नीले रंग का घोड़ा था। नीले रंग को स्थानीय भाषा में लीला भी कहा जाता है। इस लिए उन्हें नीले के अश्वार या लीले के अश्वार कहा जाता है।

लखदातार

श्याम बाबा की महिमा निराली है। कहा जाता है कि जिस पर श्याम बाबा की कृपा होती है, वह हर तरह से संपन्न हो जाता है। इस मान्यता के चलते श्याम बाबा को लखदातार कहा जाता है। यही वजह है कि श्याम बाबा के भक्तों में जहां सामान्य व्यक्ति भी है तो अमीर से अमीर। श्याम जी के मेले में पश्चिम बंगाल, आसाम, महाराष्ट्र, पंजाब, गुजरात आदि से बड़ी संख्या में भक्त

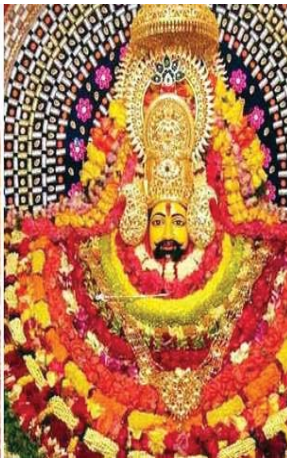

आते है।

हारे का सहारा

जब सब जगह से निराश व्यक्ति श्याम बाबा की भक्ति में लीन हो जाता है तो उसके समस्त दुख और पाप समाप्त हो जाते है। इसलिए श्याम बाबा को हारे का सहारा कहा जाता है।

खाटू नरेश

श्याम बाबा खाटू के शासक है। इसलिए उन्हें खाटू नरेश कहते है।

मोरछड़ी धारक

श्याम बाबा को चूंकि भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त है। इसलिए श्रीकृष्ण की प्रिय वस्तु मोरपंखी, बांसुरी भी उनको प्रिय है। मोरछड़ी रखने के कारण उन्हें मोरछड़ी धारक कहा जाता है।

बर्बरीक

महाभारत के समय अत्यधिक बलशाली गदाधारी भीम के पुत्र घटोत्कच का विवाह नाग कन्या मौरवी या मौर्वी से हुआ था। घटोत्कच और मौरवी की संतान बर्बरीक हुई। जो आगे चलकर श्याम के नाम से प्रसिद्ध हुए।

मोर्वी नंदन

मौर्वी (कामनकंता) की संतान होने के कारण बर्बरीक यानि श्याम बाबा को मौरवी नंदन या मौर्वी नंदन कहा जाता है। खाटू श्याम मेले के दौरान मौर्वी नंदन के जैकारे खूब गूंजते है।

तीन बाण धारी

बर्बरीक अपने दादा और पिता की तरह वीर यौद्धा थे। वीर बर्बरीक के पास तीन बाण ऐसे थे जिससे वे संपूर्ण ब्रह्माण्ड को जीत सकते थे। इस लिए श्याम बाबा को तीन बाणधारी कहा जाता है। उनके जैसा संपूर्ण लोक में को धनुर्धर न तो था और न ही आज तक हुआ है।

शीश के दानी

महाभारत युद्ध के दौरान जब बर्बरीक अपनी मां से आशिर्वाद लेने पहुंचे तब मां ने उनसे हारे पक्ष का साथ देने का वचन लिया। यानि जिसकी युद्ध में हार होगी, वे उसकी तरफ से लड़ेंगे। भगवान श्रीकृष्ण सर्वव्यापी थे। उन्होंने पता था कि हार कौरवों की होनी है, ऐसे में बर्बरीक उनकी तरफ से युद्ध लड़ेंगे तो? स्थि?ति बदल सकती है। ऐसे में उन्होंने ब्राह्मण का वेश धारण किया और फिर शीश मांग लिया। बर्बरीक ने अपना शीश दान कर दिया। इस कारण श्याम बाबा को शीश का दानी कहा जाता है।

स्वदेशी जागरण मंच अर्थ चिंतन 2021 कार्यक्रम सम्पन्न

बेरोजगारी एवं बेकारी दूर करने के लिए स्वदेशी जागरण मंच का मंथन जारी

महेंद्र शर्मा, रिपोर्टर ग्वालियर संभाग, पुष्पांजली टुडे

स्वदेशी जागरण मंच द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर अर्थ चिंतन 2021 इन पवित्र उद्धेश्यो को लेकर किया कि भारत मै कोई गरीबी रेखा के नीचे न रहे,उसकी मूलभूत आवश्यकताए रोटी कपड़ा,मकान, बच्चों की पड़ाई और परिवार की बीमार होने पर दबाई आदि मूल भूत आवश्यकताए पूरी हो सके। अर्थ चिंतन में निम्न चिंतको विषेसज्ञ मनीषियो ने अपने अपने बिचार सांझा किये। स्वदेशी जागरण मंच की प्रेरणा से आयोजित इस कार्यक्रम में विभिन्न केंद्रीय मंत्रियों , नीति आयोग के उपाध्यक्ष सहित अनेक विद्वानों ने भाग लिया । कार्यक्रम का प्रारम्भ करते हुए एसोसिएशन आफ इंडियन यूनिवर्सिटी की महामंत्री श्रीमति (प्रो .) पंकज मित्तल ने आने वाले समय में गाँवों से भारी मात्रा में शहरों की ओर पलायन से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों की तरफ ध्यान दिलाया । स्वदेशी शोध संस्थान के प्रमुख एवं कार्यक्रम के मुख्य आयोजक प्रो . भगवती प्रकाश शर्मा (कुलपति - गौतम बुद्ध यूनिवर्सिटी) ने भारत की कृषि , एम.एस.एम.ई. , प्राकृतिक संसाधन , युवा शक्ति और उसकी उद्यमिता में अंतर्निहित संभावनाओं की ओर संकेत करते हुए कहा कि भारत में न केवल रोजगार की भावी चुनौतियों से निपटने की क्षमता है , बल्कि इनके बल पर भारत दुनिया में सिरमौर बन सकता है । सबको गरीबी से बाहर निकालते हुए और हर हाथ को काम देते हुए यह उपलब्धि प्राप्त की जा सकती है । पर्यावरण की रक्षा आधारित ग्रीन मैन्यूफेक्चरिंग के बल पर वर्ष 2030 तक 10 ट्रिल्यन डॉलर अर्थव्यवस्था का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है । केंद्रीय श्रम एवं रोजगार व पर्यावरण मंत्री श्री भूपेन्द्र यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर पर्यावरण के पेरिस समझौते की प्रस्तावना में ÷ माता पृथ्वी ÷ शब्द डाला गया । आज लाइफ बनाम लाइफ स्टाईल के द्वन्द का विश्व सामना कर रहा है । छठी आई.पी.सी.सी. की रिपोर्ट में कहा गया है कि विकास का वर्तमान तरीका यदि जारी रहा तो पृथ्वी के समक्ष भारी संकट खड़ा हो जाएगा । उन्होंने कहा कि पर्यावरण चुनौती से निपटने के लिए हमें ग्रीन एनर्जी पर जाना होगा , भूमि के मरुस्थलीकरण को रोकना होगा तथा भूमि को वापिस उर्वर बनाना होगा । इस दिशा में सरकार तेजी से काम कर रही है । इसके अलावा सरकार घरेलू कामगारों सहित समस्त असंगठित क्षेत्र का डेटा संग्रह कर रही है । एक नई पहल करते हुए यह डेटा उद्योग संस्था आधारित व श्रम कौशल आधारित होगा जिससे कि उद्योगों में श्रम की माँग के अनुसार आपूर्ति की जा सके । इसके लिए 400 ट्रेड को चिन्हित किया गया है । इसके अलावा प्लेटफॉर्म आधारित क्षेत्र के श्रमिकों को भी इसमें सम्मिलित किया जाएगा , जैसे कि डिलीवरी बॉय या उबर के ड्राइवर । सरकार ईज आफ डूइंग बिज़नस से लेकर श्रमिक की आर्थिक सामाजिक सुरक्षा तक के सभी विषयों पर काम कर रही है । सड़क परिवहन मंत्री श्री नितिन गड़करी ने कहा कि कृषि को बहुउपयोगी बनाना होगा । सीरीकल्चर से ओरगेनिक साड़ी , कालीन , ऑरगेनिक कॉटन , बांस से गृह निर्माण सामग्री खाद्य पदार्थ , गाय के गोबर से पेंट , गाय की देसी नस्लों की घर वापसी कर उनका दूध उत्पादन बढ़ाना , सामुद्रिक अर्थव्यवस्था , वन अर्थव्यवस्था , खाद्य तेल आयात बिल घटाने , गन्ने व चावल से ईथनोल बनाकर तेल आयात बिल घटाने की अनेक योजनाओं के बारे में बताया । देश की 18 प्रतिशत तटीय जनसंख्या मछली पालन से 7 लाख करोड़ रू . का लक्ष्य कैसे प्राप्त कर सकती है , इसका विवरण देते हुए बताया कि मछुआरों की सोसायटी बनाकर उनको मछली पकड़ने के बड़े ट्राले देने पर सरकार कार्य कर रही है ताकि वे समुद्र में छोटी नाव से 10 नोटिकल माईल की बजाए बड़े ट्रालों से 100 नोटिकल माईल तक भीतर जा सकें । साथ ही बांस उत्पादन से प्रति एकड़ दो लाख रू . की आमदनी देने वाली बांस अर्थव्यवस्था योजना की जानकारी दी । नीति आयोग के उपाध्यक्ष डॉ . राजीव कुमार ने कहा कि पर्यावरण चुनौतियों से निपटने के लिए हमारे पास केवल 15 वर्ष ही बचे हैं , अतः तेजी से काम करना होगा । अन्यथा समुद्र तल इतना बढ़ जाएगा कि बंगलादेश जैसे देश तो डूब ही जाएँगे और देश की तटीय आबादी को भारी संकट का सामना करना पड़ेगा । देश की 30 प्रतिशत सम्पदा मात्र 1 प्रतिशत लोगों के हाथ में चली गई है , इस कारण आर्थिक विषमता बढ़ गई है । अतः असमानता को दूर करना बड़ी चुनौती है । कृषि को रसायन मुक्त करके प्रदूषण को रोकना होगा , इसके लिए गाय आधारित प्रकृतिक खेती ही एकमात्र उपाय है । देश में 30 लाख किसान ऐसी खेती कर रहे हैं । स्वदेशी को ÷ भारत छोड़ो आंदोलन की तरह एक जन अभियान बनाना होगा , तभी यह सम्भव है । अमूल के प्रबंध निदेशक श्री आर.एस.सोढ़ी ने पशुपालन के क्षेत्र में वर्ष के 365 दिन कम लागत में रोजगार की असीम संभावनाएँ बताई । उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र 1.20 लाख करोड़ के निवेश से गाँव से बिना पलायन करे 1.2 करोड़ रोज़गार उत्पन्न किए जा सकते हैं । देश में 8 लाख करोड़ रू . के दूध बाज़ार का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है । उन्होंने कहा कि सरकार पुराने तरीके से ही कृषि में भारी निवेश कर रही है किंतु पशुपालन में बहुत कम निवेश करती है , जबकि कृषि जी.डी.पी. में पशुपालन का भारी योगदान है । आई.एस.आई.डी. के निदेशक प्रो . नागेश कुमार ने भी कार्यक्रम में अपने विचार रखें । देश - विदेश में भारी मात्रा में बड़े स्क्रीन लगाकर स्वदेशी के कार्यकर्ताओं , प्रबुद्ध नागरिकों नें अर्थ चिंतन के इस कार्यक्रम को देखा व अपने सुझाव दिए तथा प्रश्न भी पूछे । कार्यक्रम का संयुक्त रूप से संचालन प्रो . (श्रीमति) पंकज मित्तल एवं विश्वकर्मा स्किल यूनिवर्सिटी के कुलपति श्री राज नेहरू एवं धन्यवाद ज्ञापन स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय सह संयोजक श्री अजय पत्की ने किया।

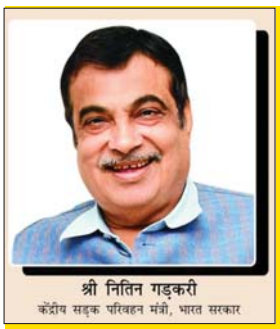

श्री नितिन गड़करी
केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री, भारत सरकार

श्री भूपेन्द्र यादव
केंद्रीय श्रम-रोजगार मंत्री, भारत सरकार

डॉ. राजीव कुमार
उपाध्यक्ष, नीति आयोग

आचार्य बालकृष्ण
पतांजलि आयुर्वेद

श्री जी.आर. चिंताला
चैयरमेन, नाबार्ड

श्री श्रीधर वेंबू
चैयरमेन, जोहो कॉरपोरेशन

श्री रूपेन्द्र एस. सोढ़ी
प्रबंध निदेशक, अमूल

इंदिरा नगर का नाम ओड समाज के नाम से संपूर्ण भारत में जाना जाएगा

भक्ति से मनुष्य का जन्म मरण का चक्र समाप्त हो जाता हैः संत श्री सिद्धा रामेश्वरम महास्वामीजी

● पुष्पांजली टुडे, नेनाराम सिरवी, पाली

निकटवर्ती जिला मुख्यालय से लगभग 8 किलोमीटर दूरी पर स्थित इंदिरा नगर में दो दिवसीय स्वर्गीय हसाराम ओड मूर्ति अनावरण समारोह का आयोजन किया गया। समाजसेवी धर्माराम ओड ने बताया कि सांपा ग्राम पंचायत सरपंच श्रीमती धापू देवी ओड के धर्म पति स्वर्गीय हसाराम ओड के मूर्ति अनावरण समारोह में ओड समाज के देश प्रदेश से जनप्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इंदिरा नगर में दो दिवसीय धार्मिक समारोह में भजन गायक रमेश माली गजेंद्र राव आशा प्रजापति मधुबाला राव मोहित राज मनीष परिहार मनोज रिया एंड पार्टी दिल्ली राजू पंडित एंड पार्टी द्वारा एक से एक बढ़चढ भजनों की प्रस्तुति दी गई। स्वर्गीय हसाराम के मूर्ति अनावरण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ओड समाज के धर्मगुरु संत श्री इमडी सिध्दारामेश्वरम. महास्वामी के सानिध्य में विधि विधान से पूजा अर्चना कर धार्मिक कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। ओड समाज देश से दक्षिण भारत के तमिलनाडु कर्नाटक उड़ीसा आंध्र प्रदेश केरल सहित राजस्थान प्रदेश के अलग-अलग जिलों से समाज बंधुओं ने हिस्सा लिया। ओड समाज के धर्मगुरु के सानिध्य में आयोजित कार्यक्रम में समाज बंधुओं का स्वर्गीय हसाराम ओड परिवार के नेतृत्व में राजस्थानी रीति रिवाज एवं परंपरा के अनुसार साफा पुष्प माला पहनाकर मोमेंटो देकर भव्य अभिनंदन किया गया। ओड समाज के धर्मगुरु धर्म द्वारा प्रवचन के दौरान समाज को संबोधन में बताया कि भक्ति से मनुष्य का जन्म मरण का चक्र समाप्त हो जाता है। समाज के धर्मगुरु ने संपूर्ण भारत में ओड समाज को एक बताया उन्होंने समाज को शिक्षा के प्रति बढ़ावा देने के लिए जोर दिया और ओड समाज भारत के हर कोने कोने में फैला हुआ है। लेकिन अलग अलग नाम से जाना जाता है । लेकिन संपूर्ण भारत में ओड समाज एक हैं और एक ही रहेगी।

कार्यक्रम में दक्षिण भारत के सामाजिक संगठन धार्मिक संस्थाएं सहित जनप्रतिनिधि समाजसेवियों ने धार्मिक समारोह में हिस्सा लिया। दक्षिण भारत से आए हुए समाज के वरिष्ठ जनप्रतिनिधियों ने समाज को संबोधन में कहा कि इंदिरा नगर का नाम भारत के हर कोने कोने ओड समाज के नाम से जाना जाएगा। इंदिरा नगर राजस्थान के पाली जिले में ही नहीं बल्कि दक्षिण भारत में इंदिरा नगर ओड परिवार के नाम से जाना जाएगा । धार्मिक समारोह के मुख्य आयोजक कर्ता सरपंच ग्राम पंचायत सांपा धापू देवी ओड समाजसेवी धर्माराम ओड एवं ओड परिवार के नेतृत्व में इंदिरा नगर की आवाज को भारत के हर कोने कोने में पहुंचाया गया। कार्यक्रम में महा प्रसादी का आयोजन किया गया। जिसमें इंदिरा नगर सहित सैकड़ों लोगों ने प्रसादी ग्रहण की। कार्यक्रम में दक्षिण भारत सहित राजस्थान प्रदेश के समाजसेवियों द्वारा समाजसेवी धर्माराम ओड सरपंच ग्राम पंचायत सांपा धापू देवी ओड राहुल ओड सचिन ओड द्वारा किया गया आयोजक को लेकर भूरी भूरी प्रशंसा की गई।कार्यक्रम में पाली पंचायत समिति विकास अधिकारी मोहनलाल चौधरी सहित अलग-अलग ग्राम पंचायत के सरपंच समाजसेवी जनप्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम के अंत में समाजसेवी धर्माराम ओड पित्र शक्ति के यादगार में भावुक पल को नमन करते हुए मातृशक्ति और पित्र शक्ति को सब शक्तियों से महान शक्ति बताकर संपूर्ण ग्रामवासी इंदिरा नगर का आभार जताया जिन्होंने कार्यक्रम के सफल बनाने में योगदान दिया

खेरवा में स्वस्थ भारत मिशन ग्रामीण अंतर्गत केस केड मॉडल आधारित ब्लॉक स्तरीय दिया प्रशिक्षण

● पुष्पांजली टुडे ब्यूरो

पाली। निकटवर्ती खेरवा ग्राम पंचायत मुख्यालय पर स्वस्थ भारत मिशन ग्रामीण के अंतर्गत ओडीएफ प्लस पर तीन दिवसीय कलस्टर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया । प्रशिक्षण शिविर के दौरान पाली ब्लाक के ग्राम पंचायत वडेर वास लांबिया सांपा। भांगेसर सोड़ावास बाणियाबास बोमाडडा के ग्राम पंचायत सरपंच ग्राम विकास अधिकारी एवम् पंचायत कार्मिकों ने प्रशिक्षण शिविर में लिया हिस्सा। पाली ब्लॉक के ग्राम पंचायत मनिहारी गुंदोज खेरवा में आयोजित ओडीएफ प्लस प्रशिक्षण शिविर में दक्ष प्रशिक्षक व राज्य संदर्भ व्यक्ति पारसमल जीनगर वह जिला संदर्भ व्यक्ति दुर्गाराम देवासी व खेरुतिया ने प्रशिक्षण शिविर में स्थानीय सरपंच ग्राम विकास अधिकारी सहित विभिन्न ग्राम पंचायत के सरपंच ग्राम विकास अधिकारी पंचायत कार्मिकों को स्वस्थ भारत मिशन ग्रामीण के अंतर्गत शिविर के दौरान विस्तार से जानकारी दी। जिला परिषद मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्वेता चौहान के आदेश के अनुसार के केस केड मॉडल आधारित तृतीय एवं चतुर्थ प्रशिक्षण का आयोजन पाली ब्लॉक के गुंदोज मनिहारी एवं खेरवा में तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में ठोस एवं कचरा प्रबंधन हेतु सोख्ता गड्ढा मैजिक पीट-लीच एवं वर्मी कंपोस्ट ढांचे के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया । खेरवा सरपंच संतोष कंवर राणावत के सानिध्य में ओडीएफ प्लस पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया । खेरवा ग्राम पंचायत मुख्यालय पर ओडीएफ प्लस तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर को सफल बनाने में सरपंच संतोष कंवर राणावत ग्राम विकास अधिकारी जितेंद्र पांडे पंचायत कार्मिक भरत सिंह राणावत पंचायत कार्मिक लक्ष्मण राम पंचायत कार्मिक सलमा बानो आदि ने सराहनीय सेवाएं दी

मैं सिद्धार्थनगर हूँ

महापुरुषों की जन्मभूमि,
विश्व-शांति का प्रारंभिक सफ़र हूँ ।
भगवान गौतम बुद्ध की नगरी,
मैं सिद्धार्थनगर हूँ ।
बच्चों की गूंजती किलकारियाँ,
युवाओं के संतुष्टि का शहर हूँ ।
अनेक धर्मों की फूलों से गुथी हुई माला,
मैं सिद्धार्थनगर हूँ ।
धन-धान्य से सम्पन्न,
प्रेम का प्रवाहित नहर हूँ ।
काला नमक की उर्वरा भूमि,
मैं सिद्धार्थनगर हूँ ।
तोड़ने से नहीं टूटती,
एकता की परिभाषा का ऐसा असर हूँ ।
जिन्दगी की डगर दंगों से दूर,
मैं सिद्धार्थनगर हूँ ।

महेन्द्र कुमार, मद्धेशिया जनपद
सिद्धार्थनगर (उत्तर प्रदेश)

(कविता) जो हमेशा हंसतर रहती है

दिन की यह शुरुआत है, नई नई सी बात है
खास मेरे अल्फाज़ है, खास मेरे जज़्बात है
दिल के बादल में बिजली बनकर चमकी थी
आज के ही दिन वो पागल धरती पर टपकी थी
हाँ पागल ही है वो, जो हमेशा हँसती रहती है
अपने हर गम को हँसी से ढकती रहती है
यूं तो हमेशा आने के बहाने वह बनाती है
पर देख मुझे वो रोता रात को भी चली आती है
यूं तो हम दोनों में नहीं कुछ भी सेम है
पर कहते हैं ना दोस्ती में यह रूल तो बैन है
मेरे हर गुस्से को हंसकर वह सह जाती है
बस उसकी यही अदा यारों मुझको भाती है
उसके साथ बीता मेरा हर पल अनमोल है
दोस्ती की बंजर ज़मीन में आई वो बारिश घनघोर है
थोड़ी मासूम थोड़ी पागल थोड़ी सी वो झल्ली है
पर दिल है उसका आईना इस बात की तसल्ली है
तेरे जन्मदिन पर यही दुआ मेरी रहेगी
जो खुशियाँ तेरी थी वो तेरी होकर रहेगी
जिंदगी की हर खुशी हर मुस्कान पर तेरा हक है
भगवान जी तेरे साथ कुछ बुरा करें इस पर मुझे शक है
तुझे हर खुशी मिले, गम का कहीं कोई निशान ना हो
तेरी मुस्कान ही है, तेरी शान और यह शान तेरी कम ना हो!

पिंकी गोयल
स्टेशन रोड, श्योपुर

भिंड जिले के विद्यालयों में अनियमितताएं

● पुष्पांजली टुडे, विवेक पाण्डेय, भिण्ड

विगत कुछ दिनों से पुष्पांजलि टुडे संवाददाता भिण्ड विवेक पाण्डेय के द्वारा जिले में संचालित शासकीय माध्यमिक एवं प्राथमिक विद्यालयों में विजिट किया गया तो पाया गया कि भिण्ड जिले में संचालित अधिकतर विद्यालयों में काफी अनियमितताएं देखने को मिली कहीं पर विद्यालय में शिक्षक समय पर नहीं आते हैं तो कहीं पर शिक्षक अल्टरनेटली विद्यालय में पहुंच रहे हैं कहीं पर तो यह भी देखने को मिला है कि शिक्षक 15 दिन या 1 महीने में एक बार विद्यालय आते हैं और अपनी महीने भर की हाजिरी पर साइन करके चले जाते हैं इतना ही नहीं किसी किसी स्कूल में तो यह भी देखने को मिला है कि विद्यालय का समय जो शासन द्वारा सुबह 10-30 बजे से शाम 4-00 बजे तक निर्धारित किया हुआ है वहीं शिक्षकों ने अपनी सुविधानुसार समय को परिवर्तित करके अपराहन 12-30 से दोपहर 3-30 बजे निर्धारित किया हुआ है इस संबंध में जब पुष्पांजलि टुडे संवाददाता विवेक पाण्डेय जी ने जिला शिक्षा अधिकारी हरी भवन तोमर जी से बातचीत करने की कोशिश की तो जिला शिक्षा अधिकारी ने इस विषय पर चुप्पी साध ली और किसी भी प्रकार की टिप्पणी करने से मना कर दिया हमारे संवाददाता ने जब पुनः इस विषय पर जिला शिक्षा अधिकारी से संपर्क करना चाहा तो उन्होंने समय नहीं दिया।

विजिट किए गए स्कूलों में प्रमुख हैं

1- शासकीय माध्यमिक विद्यालय ग्राम नवरा साई भारौली कला जिला भिण्ड मध्य प्रदेश।
2- शासकीय माध्यमिक विद्यालय ग्राम नारीपुरा धराई भिण्ड मध्य प्रदेश।
3- शासकीय प्राथमिक विद्यालय ग्राम नारीपुरा धराई भिण्ड मध्य प्रदेश।
4- शासकीय प्राथमिक विद्यालय कल्याणपुरा भिण्ड मध्य प्रदेश।

मलखान सिंह तोमर एनएसएस.के राष्ट्रीय एकता शिविर में करेंगे मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व

● पुष्पांजली टुडे, केशव पंडिज जी, अम्बाह

अम्बाह स्नातकोत्तर महाविद्यालय अम्बाह के बी.ए. तृतीय वर्ष के छात्र और राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक मलखान सिंह तोमर भारत सरकार क्षेत्रीय निदेशालय नई दिल्ली राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय हिसार ,हरियाणा में दिनांक 16 दिसम्बर 22 दिसम्बर 2021 तक आयोजित होने वाले राष्ट्रीय एकता शिविर में जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर की ओर से मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व करेंगे। मलखान सिंह की इस उपलब्धि पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शिवराज सिंह तोमर,जीवाजी विश्वविद्यालय के एनएसएस कॉर्डिनेटर प्रो रविकांत अदालतवाले, एनएसएस के जिला संगठक डॉ. शशिवल्लभ शर्मा, महाविद्यालय के रासेयो कार्यक्रम अधिकारी डॉ. रक्षा कम्ठान, प्रो.नेहा श्रीवास्तव,प्रो. पंकज सिंह भदौरिया एवं महाविद्यालय एवं रासेयो परिवार ने बधाई दी।

दक्षिण भारत में गिरवी ज्वैलर्स व्यापारियों की पुलिस प्रशासन द्वारा प्रताडना के स्थाई सामाधान हेतू केन्द्र सरकार को सौंपा ज्ञापन

● पुष्पांजली टुडे,नारायणलाल सैणचा ब्यूरो सीफ बेंगलूर

चैन्नई। दक्षिण भारत में सराफा व्यापारियों की पुलिस प्रशासन द्वारा प्रताडना के स्थाई सामाधान हेतू केन्द्र सरकार को ज्ञापन सौंपा। दक्षिण भारत के सर्राफा व्यापारियों का कानून की आड़ में पुलिस द्वारा उत्पीड़न बद्स्तूर जारी है ।दक्षिण भारत की पुलिस भा.द.स.की धाराएँ 411 और 414 का दुरूपयोग करते हुए सर्राफा व्यापारियों का उत्डीड़न करती है ।इस संदर्भ में पहले भी भारतीय उद्योग व्यापार मंडल बी.यू.वी.एम.के माध्यम से केन्द्र सरकार को ज्ञापन दिया जा सुका है ।मगर इस पर अभी कोई कार्यवाही नही हुई है ।यहाँ पर यह बताना मुनासिब होगा कि लाइसेंस धारी है।और कानून मापदण्डों के अनुरूप अपना कारोबार करते है ।इस संदर्भ में सरकार से अनुरोध है कि इस विषय पर भारतीय उद्योग व्यापार मंडल द्वारा केन्द्र सरकार को पत्राकार के माध्यम से यह अपील की गई। वर्तमान कानूनों में संशोधन कर एक ऐसा प्रावधान रखा जाए ताकि आरोपी चोरों की चल-अचल संपत्ति को जब्त कर व्यापारियों को होने वाले नुकसान की भरपाई की जाएँ। साथ ही चोरी के मामलों में व्यापारियों से पुलिस द्वारा पूछताछ के दौरान मानवीय दृष्टिकोण अपनाया जाएं ताकि किसी भी सर्राफा व्यापारियों के स्वाभिमान को ठेस न पहुंचे।

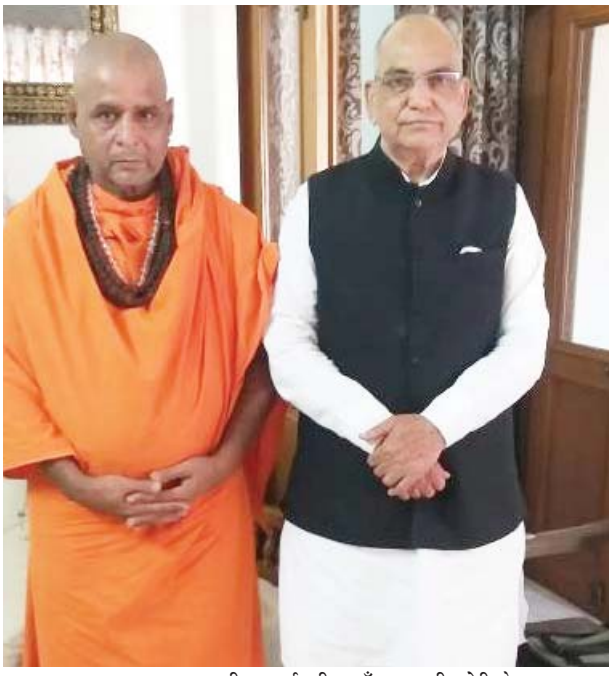

महाराणा प्रताप की स्मृति में राजस्थान प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

● पुष्पांजली टुडे, नारायणलाल ब्यूरो, मैसूर

मेवाड़ के वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की स्मृति में राजस्थान प्रीमियर लीग - 8 क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन रेलवे क्रिड़ा मैदान में किया गया द्य सर्व प्रथम गत दिनों कनूर में हेलीकॉप्टर दुर्घटना में वीरगति को प्राप्त हुए सीडीएस बिपिन रावत सहित बारह सेना के जवानों के लिए दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई द्य इस प्रतियोगिता में 6 टीमों ने भाग लिया द्य आखिरी मैच आशापुरा वॉरियर्स और माली वॉरियर्स के बीच खेला गया द्य माली वॉरियर्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 43 रन का लक्ष्य रखा द्य आशापुरा ने 5 विकेट से मैच जीतकर खिताब अपने नाम किया द्य ट्रॉफी व पारितोषिक के लाभार्थी समाजसेवी बनूर डॉ. महेंद्र सिंह राजपुरोहित रहे द्य अर्जुनराम पुरोहित द्वारा विजेता टीम को ट्रॉफी प्रदान की गई द्य गौतम प्रसादी के लाभार्थी वरदाराम माली व हनुमान पटेल रहे द्य इस दौरान आशापुरा टीम के कप्तान नितिन राजपुरोहित,किशन

राजपुरोहित, वरदाराम माली, निर्मल,मंगल, संदीप,अर्जुन, विक्रम, गोपाल पटेल,हनुमान पटेल सहित बड़ी संख्या में दर्शक एवं खिलाड़ी मौजूद रहे द्य ग्राउंड स्पॉन्सर चेतन गिरी भक्त मंडल रहे।

युवा समाजसेवी नेता उपेंद्र परमार ने अपने 500 से अधिक वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान करके अपना जन्मदिन मनाया

● पुष्पांजली टुडे,ग्वालियर

आज वार्ड क्रमांक 7 के पीएचई कॉलोनी मैं युवा नेता उपेंद्र परमार के जन्मदिन के उपलक्ष में 500 से अधिक वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री प्रधुम्न सिंह तोमर ऊर्जा मंत्री मध्यप्रदेश शासन रहे कार्यक्रम की अध्यक्षता सुरेंद्र सिंह तोमर राष्ट्रीय अध्यक्ष क्षत्रिय महासभा विशिष्ट अतिथि धर्मेंद्र सिंह तोमर गुड्डू भैया पार्षद महेश गौतम जी पूर्व पार्षद वार्ड क्रमांक 11 सत्येंद्र सिंह भदोरिया प्रदेश अध्यक्ष क्षत्रिय महासभा प्रदीप रत्नाकर पूर्व पार्षद शीतल अग्रवाल वरिष्ठ कांग्रेस नेता ओमकार भदोरिया वरिष्ठ नेता भाजपा

अशोक शर्मा वरिष्ठ नेता सहित वार्ड क्रमांक सात के 500 से अधिक वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान किया गया इस अवसर पर उपेंद्र परमार के साथ उनके युवा साथी ने इस कार्यक्रम में भाग लिया उपेंद्र परमार ने समस्त वरिष्ठ नागरिकों को साल और पुष्पमाला पहनाकर जन्मदिन को मनाया साथ ही शुभ अवसर पर समस्त वरिष्ठ नागरिकों से आशीर्वाद प्राप्त किया इस अवसर पर काफी स्थानीय साथी उपस्थित रहे।साथ ही कार्यक्रम में स्वल्प आहार करके कार्यक्रम का समापन किया गया। साथ ही कार्यक्रम में मंच का संचालन वरिष्ठ समाजसेवी श्री शैलेश सिंह कुशवाह जी ने किया और अंत मे उपेन्द्र परमार द्वारा सभी का आभार प्रकट किया गया।

स्वच्छता हम सभी की जिम्मेदारी, स्वयं करें अपने आसपास साफ सफाईः प्रद्युम्नसिंह तोमर

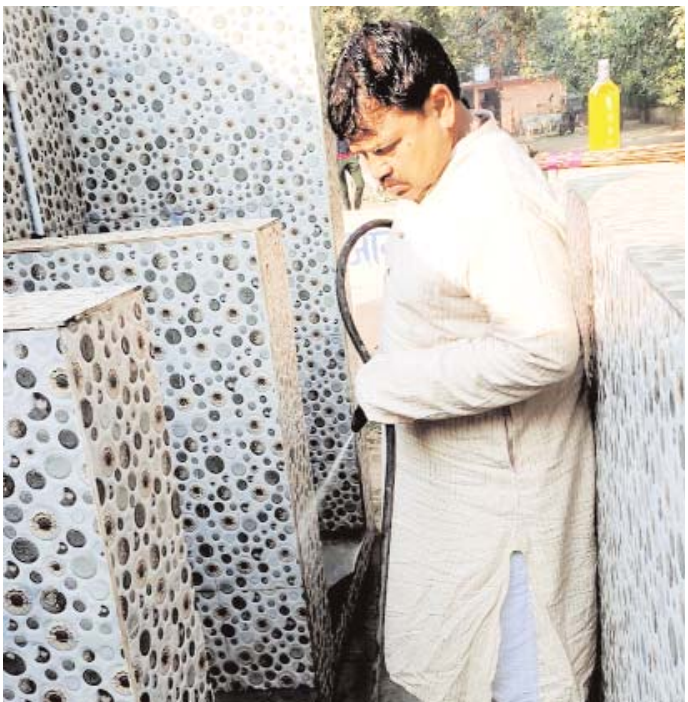

ग्वालियर प्रदेश सरकार के ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने रविवार को सिविल अस्पताल हजीरा में साफ सफाई व्यवस्था का निरीक्षण किया तथा जहां भी गंदगी दिखी स्वयं श्रमदान कर सफाई की। इस अवसर पर ऊर्जा मंत्री ने कहा कि स्वच्छता हम सभी की जिम्मेदारी है तथा अपने आसपास की साफ-सफाई हमें स्वयं करनी चाहिए, साथ ही दूसरों को भी स्वच्छता के लिए प्रेरित करना चाहिए। उल्लेखनीय है कि प्रदेश सरकार के ऊर्जा मंत्री स्वच्छता के प्रति बहुत ही संवेदनशील है। जहां भी उन्हें गंदगी दिखाई देती है वह स्वयं ही सफाई में लग जाते हैं। इसके साथ ही दूसरों को भी हमेशा स्वच्छता के प्रति प्रेरित करते हैं। रविवार को ऊर्जा मंत्री ने सिविल अस्पताल हजीरा में साफ सफाई व्यवस्था का निरीक्षण किया। अस्पताल में स्वच्छता व्यवस्था प्रथम दृष्टया हमेशा से बेहतर दिखी तो ऊर्जा मंत्री ने स्वच्छता व्यवस्था के लिए कार्यरत कर्मचारियों की प्रशंसा करते हुए फूल माला पहनाकर उनका सम्मान किया तथा अस्पताल के भ्रमण के दौरान जहां भी गंदगी दिखी स्वयं ही उन्होंने श्रमदान कर सफाई व्यवस्था संभाली। ऊर्जा मंत्री के साथ ही बड़ी संख्या में उपस्थित कार्यकर्ताओं एवं आम नागरिकों ने भी श्रमदान कर अस्पताल में सफाई की।

भारत में हर युवा की ऊर्जा का सबसे बड़ा स्रोत हैं स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद एक ऐसे युगपुरुष थे जिनका रोम-रोम राष्ट्रभक्ति और भारतीयता से सराबोर था। उनके सारे चिंतन का केंद्रबिंदु राष्ट्र और राष्ट्रवाद था। भारत के विकास और उत्थान के लिए अद्वितीय चिंतन और कर्म इस तेजस्वी संन्यासी ने किया। उन्होंने कभी सीधे राजनीति में भाग नहीं लिया किंतु उनके कर्म और चिंतन की प्रेरणा से हजारों ऐसे कार्यकर्ता तैयार हुए जिन्होंने राष्ट्र रथ को आगे बढ़ाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। इस युवा संन्यासी ने निजी मुक्ति को जीवन का लक्ष्य नहीं बनाया था। बल्कि करोड़ों देशवासियों के उत्थान को ही अपना जीवन लक्ष्य बनाया। राष्ट्र और इसके दीन-हीन जनों की सेवा को ही वह ईश्वर की सच्ची पूजा मानते थे।

सेवा की इस भावना को उन्होंने प्रबल शब्दों में व्यक्त करते हुए कहा था- 'भले ही मुझे बार-बार जन्म लेना पड़े और जन्म-मरण की अनेक यातनाओं से गुजरना पड़े लेकिन मैं चाहूंगा कि मैं उस एकमात्र ईश्वर की सेवा कर सकूं, जो असंख्य आत्माओं का ही विस्तार है। वह और मेरी भावना से सभी जातियों, वर्गों, धर्मों के निर्धनों में बसता है, उनकी सेवा ही मेरा अभीष्ट है।' सवाल यह है कि स्वामी विवेकानंद में राष्ट्र और इसके पीड़ितजनों की सेवा की भावना का उद्गम क्या था? क्यों उन्होंने निजी मुक्ति से भी बढ़कर राष्ट्रसेवा को ही अपना लक्ष्य बनाया। अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस से प्रेरित स्वामी विवेकानंद ने साधना प्रारंभ की और परमहंस के जीवनकाल में ही समाधि प्राप्त कर ली थी किंतु विवेकानंद का इस राष्ट्र के प्रति प्रारब्ध कुछ और ही था इसलिए जब स्वामी विवेकानंद ने दीर्घकाल तक समाधि अवस्था में रहने की इच्छा प्रकट की तो उनके गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस ने उन्हें एक महान लक्ष्य की ओर प्रेरित करते हुए कहा- 'मैंने सोचा था कि तुम जीवन के एक प्रखर प्रकाश पुंज बनोगे और तुम हो कि एक साधारण मनुष्य की तरह व्यक्तिगत आनंद में ही डूब जाना चाहते हो, तुम्हें संसार में महान कार्य करने हैं, तुम्हें मानवता में आध्यात्मिक चेतना उत्पन्न करनी है और दीनहीन मानवों के दुःखों का निवारण करना है।'

स्वामी विवेकानंद अपने आराध्य के इन शब्दों से अभिभूत हो उठे और अपनें गुरु के वचनों में सदा के लिए खो गए। स्वयं रामकृष्ण परमहंस भी विवेकानंद के आश्वासन को पाकर अभिभूत हो गए और उन्होंने अपनी मृत्यशैया पर अंतिम क्षणों में कहा- 'मैं ऐसे एक व्यक्ति की सहायता के लिए बीस हजार बार जन्म लेकर अपने प्राण न्योछावर करना पसंद करूंगा।' जब 1886 में पूज्य रामकृष्ण परमहंस ने अपना नश्वर शरीर त्यागा तब उनके 12 युवा शिष्यों ने संसार छोड़कर साधना का पथ अपना लिया, लेकिन स्वामी विवेकानंद ने दरिद्र-नारायण की सेवा के लिए एक कोने से दूसरे कोने तक सारे भारत का भ्रमण किया। उन्होंने देखा कि देश की जनता भयानक गरीबी से घिरी हुई है और तब

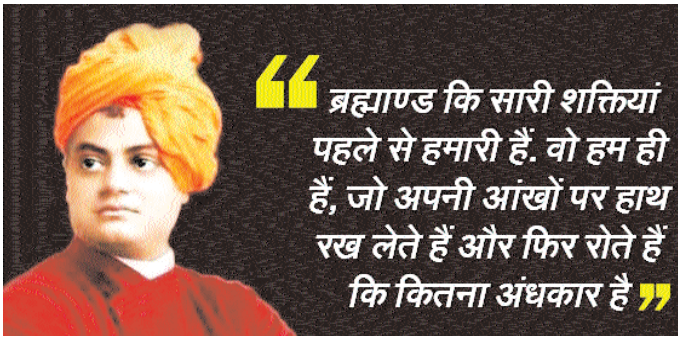

उनके मुख से रामकृष्ण परमहंस के शब्द अनायास ही निकल पड़े- 'भूखे पेट से धर्म की चर्चा नहीं हो सकती।' किसी भी रूप में धर्म को इस सबके लिए जवाबदार माने बिना उनकी मान्यता थी कि समाज की यह दुरावस्था (गरीबी) धर्म के कारण नहीं हुई बल्कि इस कारण हुई कि समाज में धर्म को इस प्रकार आचरित नहीं किया गया जिस प्रकार किया जाना चाहिए था।' अपने रचनात्मक विचारों को मूर्तरूप देने के लिए 1 मई 1879 को स्वामीजी ने रामकृष्ण मिशन एसोसिएशन की स्थापना की और इसकी कार्यपद्धति इस प्रकार निश्चित की गईङ्क वास्तव में विवेकानंदजी ने रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन नाम से दो पृथक संस्थाएं गठित कीं यद्यपि इन दोनों संस्थाओं में परस्पर नीतिगत सामंजस्य था तथापि इनके उद्देश्य भिन्न किन्तु पूरक थे। रामकृष्ण मठ समर्पित संन्यासियों की श्रृंखला तैयार करने के लि?ए थी जबकि दूसरी रामकृष्ण मिशन जनसेवा की गतिविधियों के लिए थी। वर्तमान में इन दोनों संस्थाओं के विश्वभर में सैंकड़ों केंद्र हैं और ये संस्थाएं शिक्षा, चिकित्सा, संस्कृति, अध्यात्म और अन्यान्य सेवा प्रकल्पों के लिए विश्वव्यापी व प्रख्यात हो चुकी हैं शिकागो संभाषण के द्वारा सम्पूर्ण विश्व को भारत के विश्वगुरु होने का दृढ़ सन्देश दे चुके स्वामी जी को पश्चिमी मीडिया जगत ÷साइक्लोनिक हिन्दू÷ के नाम से पुकारने लगा था। इन महान कार्यों की स्थापना के बाद स्वामी जी केवल पांच वर्ष ही जीवित रह पाए और मात्र चालीस वर्ष की अल्पायु में उनका दुखद निधन हो गया किन्तु इस अल्पायु के जीवन में उन्होंने सदियों के जीवन को क्रियान्वित कर दिया था। इस कार्य यज्ञ हेतु उन्होंने सात बार सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया था और पाया था कि जनता गहन अंधकार में भटकी हुई है। उन्होंने भारत में व्याप्त दो महान बुराइयों की ओर संकेत किया- पहली महिलाओं पर अत्याचार और दूसरी जातिवादी विषयों की चक्की में गरीबों का शोषण। उन्होंने देखा कि कोई नि?यति के चक्र से एक बार निम्न जाति में पैदा हो गया तो उसके उत्थान की कोई आशा नहीं रखती थी। उस समय तो निम्न जाति के लोग उस समय सड़क से गुजर भी नहीं सकते थे जिससे उच्च जाति के लोग आते-जाते थे। स्वामीजी ने जाति प्रथा की इस भीषण दुर्दशा को देखकर आर्त स्वर में कहा था- 'आह! यह कैसा धर्म है, जो गरीबों के दुख दूर न कर सके।'

क्रिएटिव राइटिंग के जरिए बनाएं लेखन के क्षेत्र में कॅरियर

रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में किसी औपचारिक शिक्षा की विशेष आवश्यकता नहीं है। आपकी कल्पना, अवलोकन और रचनात्मकता के साथ लिखने की क्षमता ही आपके भविष्य के मार्ग प्रशस्त करती है। हालांकि अंग्रेजी साहित्य या पत्रकारिता और संचार में एक शैक्षिक पृष्ठभूमि आपके कॅरियर की राह को आसान बनाती है। ऐसे बहुत से लोग होते हैं, जिन्हें लिखना बहुत पसंद होता है। लेखन की कई विधाएं हैं, इन्हीं में से एक है क्रिएटिव राइटिंग। लेखन के क्षेत्र की यह विधा बेहद कलात्मक है। इस क्षेत्र से जुड़े लोग वास्तव में रचनात्मक लेखक हैं, जिन्हें लोग उपन्यासकार, कवि, गीतकार आदि विभिन्न नामों से जानते हैं। क्रिएटिव राइटर्स के पास लेखन में जादुई शक्ति होती है और अपने काम के माध्यम से, वे पाठकों को प्रभावित कर सकते हैं और उन्हें परेशान, घृणित, मंत्रमुग्ध या खुश कर सकते हैं। आमतौर पर लोग इस काम को आसान मानते हैं, जबकि लेखन बनाना एक लंबी प्रक्रिया है जिसमें बहुत अधिक शोध और कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है। अगर आप भी लेखन में अपनी रूचि रखते हैं तो इस क्षेत्र में अपने कदम बढ़ा सकते हैं-

क्या है क्रिएटिव राइटिंग

रचनात्मक लेखन वह लेखन है जिसमें एक लेखक का उद्देश्य गद्य और काव्य छंदों के माध्यम से अपनी भावनाओं, भावनाओं, कल्पनाशील विचारों और

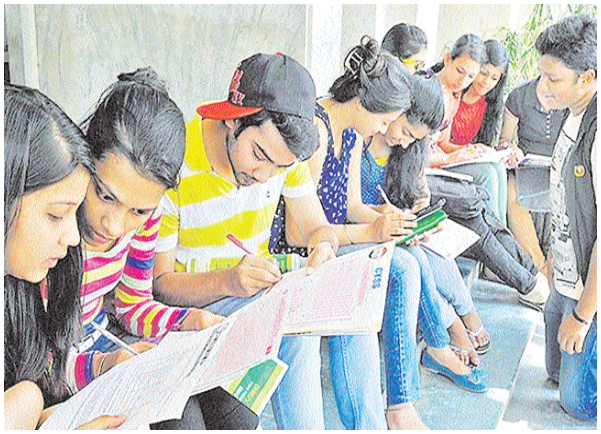

विचारों को व्यक्त करना है। विभिन्न तरह के लेखन जैसे उपन्यास, कविता, कहानी, नाटक, आत्मकथा, पटकथा लेखन, कॉपी लेखन आदि को रचनात्मक लेखन कहा जाता है। रचनात्मक लेखन एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें प्राकृतिक दुनिया के चित्र बनाने के लिए बहुत अधिक कल्पना, अवलोकन और एक जन्मजात क्षमता की आवश्यकता होती है। विभिन्न विषयों और शैलियों पर लेख पढ़कर एक अच्छा लेखक बन सकता हैय हर तरह से जीवन का अनुभव करना और बहुत सारे मुहावरों, लहजों और स्थानीय भावों को सीखना और सुनना। वैसे तो क्रिएटिव राइटिंग कुछ लोगों को जन्मजात उपहार में मिलती हैं, लेकिन रचनात्मक लेखन में कोर्स करके कोई भी अपने लेखन कौशल में सुधार कर सकता है।

इसे भी पढ़ें- लॉग टर्म कोर्स की बजाय रोजगार पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं आज के युवा

योग्यता

कॅरियर एक्सपर्ट कहते हैं कि रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में किसी औपचारिक शिक्षा की विशेष आवश्यकता नहीं है। आपकी कल्पना, अवलोकन और रचनात्मकता के साथ लिखने की क्षमता ही आपके भविष्य के मार्ग प्रशस्त करती है। हालांकि अंग्रेजी साहित्य या पत्रकारिता और संचार में एक शैक्षिक पृष्ठभूमि आपके कॅरियर की राह को आसान बनाती है। वैसे भारत में कुछ संस्थान रचनात्मक लेखन में शार्ट टर्म कोर्स कराते हैं और इन पाठ्यक्रम में आवेदन करने के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता हायर सेकंडरी या 10+2 होनी चाहिए। इन पाठ्यक्रमों की न्यूनतम अवधि एक वर्ष है।

कक्षा 12वीं परीक्षा के दौरान विदेश में पढ़ाई के लिए बेस्ट टिप्स

अपने मनचाहे विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने और वहां अपने समय का अधिकतम लाभ उठाने की संभावनाओं को बेहतर बनाने के लिए आपके लिए संस्थान के दृष्टिकोण के साथ-साथ दिए जाने वाले पाठ्यक्रमों से परिचित होना भी महत्वपूर्ण है।

विदेश में पढ़ाई करना जीवन भर का अनुभव हो सकता है, लेकिन इसमें पैसा भी खर्च हो सकता है। विदेश में अध्ययन की लागत की भरपाई करने का रहस्य यह याद रखना है कि आप विदेश में अध्ययन करने के लिए जो भुगतान करते हैं वह मन की शांति और सहजता के लिए है। विदेश में अध्ययन कार्यक्रम आपको आवास खोजने में मदद करने, विदेशी विश्वविद्यालयों में नामांकन में मदद करने या यहां तक कि आपकी वीजा प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए अतिरिक्त शुल्क लेते हैं। इनमें से कुछ या सभी कार्यों को स्वयं करके आप विदेश में अपने अध्ययन के अनुभव को बहुत आसान बना सकते हैं।

भारत में कोविड-19 के प्रकोप की दूसरी लहर के कारण केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) कक्षा 12 की परीक्षाओं को हाल ही में स्थगित करने से आपकी विदेश में अध्ययन करने की योजनाएँ शायद बाधित हो गयी होंगी। लेकिन इस स्थिति से पैदा हुई परेशानिओं और

तनाव को अपने ऊपर हावी न होने दें। यहां कुछ टिप्स दिए गए हैं जिनका पालन करके आप इस साल 12वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा के बाद विदेशी विश्वविद्यालयों में उच्च अध्ययन के लिए खुद को तैयार कर सकते हैं।

उन पांच देशों की एक शॉर्टलिस्ट बनाने पर विचार करें जहां आप विदेश में अध्ययन करना चाहते हैं। इसके बाद उन देशों में सार्वजनिक विश्वविद्यालय की वेबसाइटों की जाँच करें कि क्या ट्यूशन की लागत आपके लिए अनुकूल है। इसके अलावा इन देशों में रहने की लागत को भी ध्यान में रखें।अपने मनचाहे विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने और वहां अपने समय का अधिकतम लाभ उठाने की संभावनाओं को बेहतर बनाने के लिए आपके लिए संस्थान के दृष्टिकोण के साथ-साथ दिए जाने वाले पाठ्यक्रमों से परिचित होना भी महत्वपूर्ण है। कई विश्वविद्यालय अभी विशेष कार्यक्रमों की पेशकश कर रहे हैं और आपको समान नामों वाले कुछ पाठ्यक्रम मिल सकते हैं, लेकिन बहुत अलग पाठ्यक्रम और नौकरी की संभावनाओं के साथ। इसलिए अच्छी तरह से ये पता करें कि कौन सा कार्यक्रम आपके लिए सबसे उपयुक्त है।आप उन विश्वविद्यालयों में प्रवेश परामर्शदाताओं से बात करने के बारे में भी सोच सकते हैं, जिनके लिए आप आवेदन करने में रुचि रखते हैं, ताकि आप यह बेहतर तरीके से समझ सकें कि वहां अध्ययन करने का क्या मतलब होगा।अपनी पसंद के विश्वविद्यालय का चयन करने में वर्तमान छात्रों और पूर्व छात्रों से अधिक उनके अध्ययन के अनुभव पर सलाह लेने के लिए कौन बेहतर हो सकता है? उनके विचार और अनुभव से आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि स्कूली जीवन कैसा होता है। f

डायबिटीज के मरीजों के लिए फायदेमंद हैं ये फल और सब्जियां

डायबिटीज़ यानि शुगर की बीमारी आजकल बहुत आम हो गई है। बच्चे से लेकर बूढ़े तक, हर उम्र के लोग इस बीमारी की चपेट में आ रहे हैं। डायबिटीज में मरीज का ब्लड शुगर लेवल तेज़ी से बढ़ जाता है। डायबिटीज़ के मरीजों को अपने खानपान का ख़ास ख्याल रखना चाहिए। डायबिटीज़ के मरीजों को मीठा, तला-भुना, और ज़्यादा कैलोरी वाली चीज़ें खाने से परहेज करना चाहिए। लोगों में यह आम धारणा होती है कि डायबिटीज में वे बेझिझक फलों और सब्जियों का सेवन कर सकते हैं, जबकि ऐसा नहीं है। कुछ ऐसे फल और सब्जियां भी होते हैं जो डायबिटीज़ के मरीजों के लिए बहुत नुकसानदायक होते हैं। डायबिटीज़ के मरीजों को अधिक मीठे फलों के साथ-साथ स्टार्च वाली सब्जियों से परहेज करना चाहिए। इन फलों और सब्जियों में कार्बोहायड्रेट की मात्रा ज़्यादा होती है जिससे ब्लड शुगर लेवेल बढ़ जाता है। आज के इस लेख में हम आपको बताएंगे की डायबीटीज़ के मरीजों को कौन से फलों और सब्जियों का सेवन करना चाहिए-

अमरूद

अमरूद ना सिर्फ खाने में स्वादिष्ट होता है बल्कि यह हमारी सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद है। इसमें विटामिस सी, विटामिन ए, फॉलेट, पोटैशियम जैसे कई

पोषक तत्व मौजूद होते हैं। अमरूद का ग्लाइकैमिक इंडेक्स लो होता है जो ब्लड शुगर को कंट्रोल में रखने में मददगार होता है। डॉक्टर्स के मुताबिक डायबिटीज के मरीज अमरुद का सेवन कर सकते हैं।

जामुन

डायबिटीज़ के मरीजों के लिए बेस्ट फ्रूट माना जाता है। जामुन के सेवन से ब्लड में शुगर के लेवल को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। डॉक्टर्स के मुताबिक जामुन के बीजों का पाउडर बनाकर खाने से डायबिटीज के मरीजों को फायदा होता है।

कीवी

डायबिटीज के मरीजों के लिए कीवी का सेवन बहुत फायदेमंद होता है। इसमें विटामिन ए, विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट्स की भरपूर मात्रा होती है जो ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने में मददगार होते हैं। यह ब्लड शुगर या ग्लूकोज को एकदम से बढ़ने से रोकता है।

सेब

यह तो हम सब जानते हैं कि सेब हमारी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होता है। डॉक्टर्स हर किसी को सेब खाने की सलाह देते हैं। डायबिटीज के मरीजों के लिए भी सेब बेहद फायदेमंद होता है। सेब में सॉल्युबल और इनसॉल्युबल फाइबर होत जो ब्लड शुगर लेवल को नियंत्रण में रखने में मददगार होता है।

संतरा

संतरा भी डायबिटीज के मरीजों के लिए बहुत फायदेमंद माना जाता है। संतरा में भरपूर मात्रा में फाइबर, विटामिन सी, फोलेट और पोटेशियम होता है जो डायबिटीज में राहत दिलाने का काम करता है।

सेहतमंद रहने के लिए डायबिटीज के रोगी इस तरह बनाएं आहार चार्ट

आज के समय में मधुमेह यानी डायबिटीज होना आम बात है। जब ब्लड में शुगर का लेवल ज्यादा होता है तो ये बीमारी होती है। ऐसे में बार-बार प्यास लगने, पेशाब आने और ज्यादा भूख लगने जैसी समस्या होनी शुरू हो जाती है। इस बीमारी के चलते व्यक्ति का अग्न्याशय सही से इंसुलिन का उत्पादन नहीं कर पाता है। वहीं, अगर इस तरह के समस्या ज्यादा समय तक रहती है तो रोगी कई तरह की बीमारियों को न्योता दे सकता है।

चिकित्सकों के अनुसार मधुमेह के रोगियों के लिए शारीरिक गतिविधि और पोषण के साथ ही एक सेहतमंद रहन-सहन का होना खास हिस्सा है। इसके अलावा रोगी स्वस्थ खान-पान अपनाकर और सक्रिय रहकर खुद-ब-खुद रक्त ग्लूकोज लेवल को लक्ष्य सीमा में रख सकता है इसके लिए आपको शारीरिक गतिविधियों, सेहतमंद भोजन और मधुमेह की दवाइयों में ठीक संतुलन बनाने की जरुरत है। मधुमेह रोगी कब, कितना और क्या खाता है, ये सभी उनके रक्त ग्लूकोज को लेवल में रखने के लिए अपनी खास भूमिका निभाते हैं।

हालांकि मधुमेह के रोगियों के लिए शारीरिक तौर पर ज्यादा सक्रिय रहना और अपने भोजन में बदलाव करना, शुरुआत में थोड़ा कठिन हो सकता है, लेकिन थोड़े समय बाद आप इन बदलावों को अपने लाइफस्टाल में जोड़कर सेहतमंद बने रह सकते हैं। वहीं,

आज हम आपको मधुमेह आहार, भोजन और शारीरिक गतिविधियों के बारे बताने जा रहे हैं जिन्हें अपनाकर आप इस समयस्या से राहत पा सकते हैं, आइए जानते हैं...

हेल्थ एक्सपर्ट्स कहते हैं कि मधुमेह के रोगी अपने पसंद का हर खाद्य पदार्थ का सेवन कर सकते हैं, लेकिन उन्हें छोटे भाग खाने या कम आनंद लेने की जरुरत हो सकती है। आपको अपने आहार में भोजन की योजना की रूपरेखा में सभी खाद्य समूहों से अलग-अलग तरह के स्वस्थ खाद्य पदार्थ खाने हैं।

मधुमेह आहार चार्ट

- मधुमेह के आहार में अगर सब्जियों की बात करें तो आप टमाटर, गाजर, ब्रोकोली, साग और मिर्च शामिल करें, ये सभी सब्जियां नॉनस्टार्च मानी जाती हैं। जबकि स्टार्ची सब्जियों में आप मक्का, आलू और हरी मटर शामिल करें।
- फलों में आप तरबूज, संतरा, सेब, जामुन, अंगूर और केला शामिल करें।
- अनाज में दिन के समय न्यूनतम आधा साबुत अनाज होना चाहिए. इसमें आप चावल, गेहूं, जई, जौ, कॉर्नमील और क्विनोआ शामिल कर सकते हैं।
- प्रोटीन में आप दही, पनीर, मूंगफली, अंडे, बिना त्वचा का चिकन, मछली, दुबला मांस, मांस के विकल्प, जैसे टोफू का सेवन कर सकते हैं।
- सरसों के तेल, कैनोला और जैतून के तेल का आप इस्तेमाल कर सकते हैं।

चेहरे पर जमा चर्बी कुछ ही दिनों में हो जाएगी छूमंतर

कहते हैं कि चेहरा हमारी पहचान होता है। जबकि हम किसी से मिलते हैं तो सबसे पहले उसका चेहरा ही देखते हैं। यही वजह है कि लोग अपने चेहरे की ज्यादा देखभाल करते हैं। लेकिन कई बार चेहरे पर जमा फैट हमारे चेहरे की सुंदरता को खराब कर देता है। खासतौर पर मोटे गाल, डबल चिन और आई बैग्स चेहरे की खूबसूरती को कम कर देते हैं। वैसे तो शरीर के किसी एक हिस्से से चर्बी घटाना कठिन होता है, खासतौर पर चेहरे पर जमा चर्बी। लेकिन आप अपनी लाइफ स्टाइल में कुछ बदलाव करके चेहरे पर जमा जिद्दी फैट को कम कर सकते हैं। आज के इस लेख में हम आपको फेशियल फैट दूर करने की कुछ आसान टिप्स देने जा रहे हैं-

फेशियल एक्सरसाइज करें

खूब पानी पिएँ

पानी पीना हमारे शरीर के लिए कितना फायदेमंद है यह तो आप जानते ही होंगे। पानी पीने से शरीर में जमा हानिकारक पदार्थ और अतिरिक्त वसा बाहर निकलते हैं। अगर आप चेहरे पर जमा चर्बी घटाना चाहते हैं तो खूब पानी पिएँ। इससे आपका मेटाबॉलिज्म बूस्ट होगा और फैट कम करने में मदद मिलेगी।

नमक का सेवन कम करें

अगर आप फेशियल फैट को घटाना चाहते हैं तो नमक का सेवन कम करें। दरअसल नमक में मौजूद सोडियम के कारण शरीर में पानी ठहरने लगता है जिसे वॉटर रिटेंशन कहते हैं। इसके कारण शरीर को डिटॉक्स करने में परेशानी होती है और हमारे शरीर में फैट जमा होने लगता है। इसके साथ ही हो सके तो सूप और सलाद में ऊपर से कच्चा नमक डालकर ना खाएं।

फेशियल करवाएं

वैसे तो महिलाएं चेहरे की खूबसूरती बढ़ाने के लिए फेशियल करवाती हैं। लेकिन इससे चेहरे पर जमा चर्बी को दूर करने में भी मदद मिलती है। दरअसल फेशियल के दौरान मसाज से चेहरे में खून का संचार बढ़ता है और फेस पर जमा फैट बर्न होता है।

रिफाइंड कार्ब्स का कम सेवन करें

अगर आप शरीर में जमा चर्बी को घटाना चाहती हैं तो रिफाइंड कार्ब्स का सेवन कम करें। रिफाइंड कार्ब्स जैसे ब्रेड, कुकीज, पास्ता, पेस्ट्री और मिठाइयां खाने से शरीर और चेहरे पर फैट जमने लगता है।

भरपूर नींद लें

फेशियल फैट को कम करने के लिए बहुत जरूरी है कि आप भरपूर नींद लें। नींद पूरी ना होने के कारण शरीर में स्ट्रेस लेवल बढ़ता है जिससे हमारा ब्लड सर्कुलेशन प्रभावित होता है। नींद पूरी न होने के कारण शरीर में फैट जमा होने लगता है। इसलिए रात में कम से कम 6 से 8 घंटे की नींद लें।

स्किन की कई समस्यों का रामबाण इलाज है लहसुन

जहसुन की मदद से स्ट्रेच मार्क को दूर किया जा सकता है। इसे उपयोग करने वाले ज्यादातर लोगों का मानना है कि अगर आपकी त्वचा पर स्ट्रेच मार्क हो रहे हैं तो आप इसका इलाज लहसुन से कर सकते हैं। इसके लिए जैतून के तेल को पहले गर्म करें। लहसुन को बहुत गुणकारी माना जाता है, यह न सिर्फ सब्जियों का स्वाद बढ़ाने के लिए उपयोग में आता है बल्कि यह सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद होता है। लहसुन का इस्तेमाल ज्यादातर सामान्य सर्दी, हल्की खांसी और संक्रमण से बचाव के लिए किया जाता है। इससे इम्यूनिटी सिस्टम को भी मजबूत बनाया जा सकता है। इतना ही नहीं, इसकी मदद से स्किन का भी ख्याल रखा जा सकता है। दरअसल, लहसुन से त्वचा का ख्याल रखा जा सकता है। हालांकि, इसके बारे में कम लोगों को ही जानकारी है। अगर आप भी इन्हीं में से एक हैं जो लहसुन से स्किन को होने वाले फायदों के बारे में नहीं जानते हैं, तो आइए आपको लहसुन से स्किन के 7 समस्याओं का रामबाण इलाज बताते हैं...

मुंहासों से मिलेगा छुटकारा

ब्यूटी एक्सपर्ट्स कहते हैं कि चेहरे पर हो रहे मुंहासे हमारी खूबसूरती पर भी काफी बुरा असर डालते हैं। ऐसे में इनसे जल्द से जल्द छुटकारा पा लेना चाहिए। वहीं, लहसुन से मुंहासों को सही किया जा सकता है। इसके लिए 4 से 5 लहसुन की कलियां लें और इसे मिक्सी में पीस लें। इसके बाद इसमें एक छोटा चम्मच दही और एक बड़ा चम्मच शहद का मिलाकर पेस्ट बना लें। अब इसे मुंहासों पर लगाने के 15 मिनट बाद चेहरे को पानी से धो लें। इस तरह से रोजाना करने से कुछ ही दिनों में आपके मुंहासे दूर हो जाएंगे। आप चाहें तो रोजाना खाली पेट लहसुन की एक कली का सेवन कर सकते हैं। इससे भी आपकी स्किन को फायदा होगा।

स्ट्रेच मार्क करें दूर

लहसुन की मदद से स्ट्रेच मार्क को दूर किया जा सकता है। इसे उपयोग करने वाले ज्यादातर लोगों का मानना है कि अगर आपकी त्वचा पर स्ट्रेच मार्क हो रहे हैं तो आप इसका इलाज लहसुन से कर सकते हैं। इसके लिए जैतून के तेल को पहले गर्म करें। इसमें करीब 3 लहसुन की कलियां या उसका रस मिलाकर हल्का ब्राउन होने तक भूने। इसके बाद ठंडा होने के लिए छोड़ दें।जर आने लगेगा और फिर ये मार्क दूर हो जाएंगे।

व्हाइटहेड और ब्लैकहेड

चेहरे पर व्हाइटहेड और ब्लैकहेड की समस्या होने से खूबसूरती पर काफी बुरा असर पड़ता है इससे छुटकारा पाने के लिए लहसुन की मदद ली जा सकती है। इसके लिए लहसुन की एक कली और आधे टमाटर को पहले पीसकर एक मिश्रण तैयार कर लें। इसके बाद इसे अपने चेहरे पर 10 मिनट के लिए लगाकर रखें और फिर पानी से फेस को धो लें।

गोल्डन सिटी के नाम से मशहूर राजस्थान का जैसलमेर

रा र मरूस्थल के बीच बसा राजस्थान का जैसलमेर शहर अपनी पीले पत्थर की इमारतों और रेत के धोरों पर ऊँटों की कतारों के लिए विश्व विख्यात है। 'गोल्डन सिटी' के नाम से लोकप्रिय जैसलमेर पाकिस्तान की सीमा के निकट है और यह शहर एक तरह से भारत के सीमा प्रहरी के रूप में कार्य करता है। जैसलमेर का सबसे प्रमुख आकर्षण है जैसलमेर का क़िला, जिसे सोनार किला (द गोल्डन फोर्ट) के नाम से भी जाना जाता है। जैसलमेर की कला, संस्कृति, किले, हवेलियाँ और सोने जैसी माटी और यहाँ की रेत के कण-कण में सैंकड़ों वर्षों के इतिहास की गाथाएं पर्यटकों को यहां बार-बार खींच लाती हैं।

राजस्थान पर्यटन विकास निगम जैसलमेर शहर से लगभग 40 किलोमीटर दूर स्थित मनोरम बालू के टीलों का भ्रमण करने के लिए परिवहन की शानदार व्यवस्था करता है। इन मनोरम टीलों की यात्रा किए बिना जैसलमेर की यात्रा अधूरी ही मानी जाएगी। तेज हवाओं के कारण यहां बड़े-बड़े रेत के ढालू बने हुए हैं जो मृगमरीचिका की भांति दिखाई देते हैं। ये टीले बहुत खतरनाक हो सकते हैं क्योंकि हवाओं के साथ ये रेत के टीले अपना स्थान बदलते रहते हैं और यह भी प्रकृति का एक अद्भुत चमत्कार-सा दिखाई देता है। इन रेतीले टीलों पर सूर्य निकलने और सूर्यास्त होने का दृश्य आपकी स्मृति पटल पर हमेशा के लिए अंकित हो जाएगा। पूर्णतः शांत वातावरण में रेत के छोटे-छोटे पहाड़ों के पीछे से आग के लाल-लाल चक्र का दृश्य कभी भी नहीं भूला जा सकता है। सूर्यास्त के बाद एक रहस्यपूर्ण खामोशी-सी छा जाती है। शाम को ये टीले सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए एक शानदार पृष्ठभूमि का काम देते हैं। एक अस्थायी मंच पर लोक नर्तक कार्यक्रम करते हैं और कुछ ही मिनटों में सुंदर स्वरों और संगीत का जादू सबको वशीभूत कर लेता है। अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकारों को यहां प्रदर्शन के लिए चुना जाता है। रेगिस्तान की आत्मा खुले दिल से अतिथियों का स्वागत करती है। व्यावसायिक लंगाओं, मंगनियारों के मोहक लोक संगीत और घेर, धप, छाड़ी, मोरिया, घूमड़ और त्रेहटालू जैसे आकर्षक नृत्य लोगों

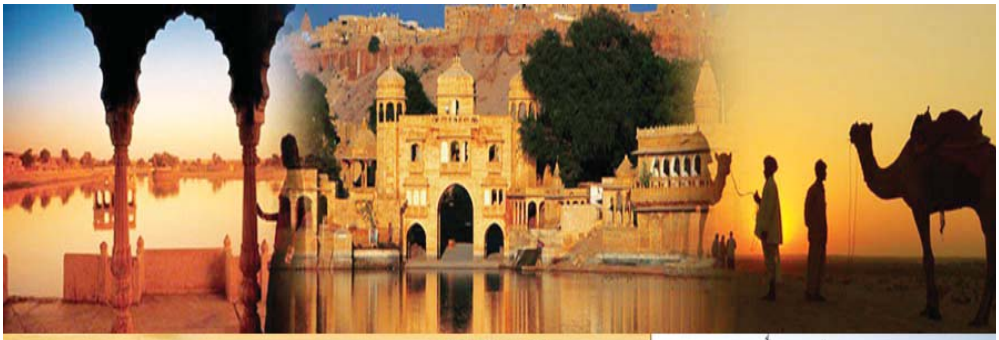

को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। जब कालेबेलिया नर्तकों के नृत्य की घोषणा होती है तो चारों ओर तालियों की गड़गड़ाहट सुनाई देने लगती है। फुर्तीली युवा लड़कियों द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य बिजली की तरह असर करता है और सबको मंत्रमुग्ध कर देता है। कालेबेलिया नृतकों ने जहां कहीं भी नृत्य प्रदर्शन किया है सबने इसकी खूब सराहना की है। मिस्र के बेले नृतकों की भांति ये संपेरे दिल मोह लेते हैं। इनकी गति, लय और कला कौशल उत्कृष्ट और मोहक होते हैं।

राजस्थान पर्यटन विकास निगम किले के ठीक नीचे स्थानीय पूनम स्टेडियम में बड़े पैमाने पर कुछेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन करता है। यहां का वातावरण बहुत ही आकर्षक लगता है और कार्यक्रम देखने के लिए अपार जनसमूह उमड़ पड़ता है। विविध रंगों से सजे ऊंटों की परेड़ देखने लायक होती है। सबसे ज्यादा मजा राजस्थानी पगड़ियों को देखकर आता है जो चमकदार पीले, संतरी, गुलाबी और लाल रंगों की होती हैं और बड़े शानदार ढंग से सिर पर बांधी जाती हैं। काफी तेज नृत्य करने के बावजूद ये नीचे नहीं गिरती हैं। सफेद जैकेट और लंबे घाघरे पहने घेर नृतकों का नृत्य बहुत अच्छा होता है। ऊंटों की दौड़, ऊंटों की कलाबाजियां, ऊंट सवारी प्रतियोगिता, रस्साकशी, पगड़ी बांधने की प्रतियोगिता और सबसे शानदार मूंछ रखने का पुरस्कार ऐसे खेल-तमाशे हैं जो सबको अच्छे लगते हैं।

ऐश्वर्या से लेकर मानुषी तक, जब खूबसूरती की दुनिया में परचम लहराने के बाद

बॉलीवुड में आईं ब्यूटी क्वींस

21 साल के बाद भारत ने एक बार फिर मिस यूनिवर्स का खिताब जीत लिया है। पंजाब की हरनाज संधू मिस यूनिवर्स बन गई हैं। हरनाज ने टॉप 3 में अपनी जगह बनाई थी और साउथ अफ्रीका और पराग्वे को पीछे छोड़ते हुए ये खिताब जीत लिया है। 21 साल बाद किसी भारतीय सुंदरी ने यह खिताब हासिल किया है। साथ ही वे मिस यूनिवर्स का

खिताब जीतने वाली तीसरी भारतीय सुंदरी भी बन गई हैं। हरनाज से पहले 2000 में लारा दत्ता और 1994 में सुष्मिता सेन ने भारत को मिस यूनिवर्स का खिताब दिलाया था। ऐसे में ये देखना दिलचस्प होगा कि क्या वह भी पिछली ब्यूटी क्वींस के जैसे बॉलीवुड का रुख करती हैं। नजर डालते हैं ऐसी ही ब्यूटी क्वींस पर जिन्होंने बॉलीवुड में कदम तो रखा लेकिन कुछ को सफलता तो कुछ को असफलता हासिल हुई।

मानुषी छिल्लर

2017 में चीन में हुए कॉम्पिटिशन में मानुषी 118 कंटेस्टेंट्स में से मिस वर्ल्ड चुनी गईं थीं। हरियाणा में जन्मी मानुषी अब बॉलीवुड में जगह बनाने जा रही हैं। वह अगले साल रिलीज होने वाली फिल्म पृथ्वीराज से डेब्यू करने वाली हैं। इस फिल्म में वह अक्षय कुमार के अपोजिट नजर आने वाली हैं। फिल्म में वह संयोगिता के किरदार में दिखेंगी।

ऐश्वर्या राय

1994 में मिस वर्ल्ड का खिताब ऐश्वर्या राय ने मिस वर्ल्ड का खिताब अपने नाम किया था। 20 साल की उम्र में मिस वर्ल्ड बनीं ऐश्वर्या उस वक्त आर्किटेक्चर की स्टूडेंट थी। मिस वर्ल्ड बनने के बाद उन्होंने बॉलीवुड में अपना करियर बनाने की सोची। उन्होंने 1997 में और प्यार हो गया से बॉलीवुड में डेब्यू किया था। इसके अलावा उन्होंने आ अब लौट चलें, हम दिल दे चुके सनम , ताल, जोश, मोहब्बतें, धूम 2, गुरु' सहित अन्य फिल्मों में काम किया है। 2007 में वह अभिषेक बच्चन से शादी कर चुकी हैं जिसके बाद उनकी एक बेटी हुई जिसका नाम आराध्या है। ऐश्वर्या का बॉलीवुड में करियर शानदार रहा लेकिन शादी के बाद उन्होंने फिल्मों में काम करना कम कर दिया। वह 2018 में आई फिल्म फन्ने खां में दिखाई दी थीं। फ़िलहाल ऐश्वर्या मणि रत्नम की फिल्म पोन्नियिन सेलवन में काम कर रही हैं।

सुष्मिता सेन

1994 में सुष्मिता फिलीपींस में हुई 43वीं मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता की विजेता बनी थीं। मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता में सुष्मिता से पहले किसी भी भारतीय महिला को यह खिताब नहीं मिला था। जबकि इसे पहले 41 बार यह प्रतियोगिता हो चुकी थी।

प्रियंका चोपड़ा

2000 में प्रियंका चोपड़ा जब मिस वर्ल्ड बनी थीं, तब उनकी उम्र महज 18 साल थी। उन्होंने मिस वर्ल्ड बनने के बाद बॉलीवुड में करियर बनाने की सोची। प्रियंका ने 2003 में फिल्म हीरो से बॉलीवुड में डेब्यू किया। हालांकि इस फिल्म में उनके काम को नोटिस नहीं किया गया। इसके बाद उन्होंने अंदाज, एतराज, मुझसे शादी करोगी, कृष, डॉन, बर्फी, गुंडे जैसी कई फिल्मों में काम किया। प्रियंका अब ग्लोबल स्टार बन चुकी हैं और उनके टैलेंट का डंका हॉलीवुड में भी बज रहा है।

लारा दत्ता

साल 2000 में मिस यूनिवर्स का खिताब जीतने के तीन साल बाद लारा दत्ता ने फिल्म अंदाज से अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की थी। इसके बाद वह मुंबई से आया मेरा दोस्त, खाकी, मस्ती, आनः मैन एट वर्क, नो एंट्री, भागमभाग, पार्टनर, हाउसफुल, बेलबॉटम जैसी फिल्मों में नज़र आ चुकी हैं। बॉलीवुड में उनका करियर अब तक एवरेज साबित हुआ है।

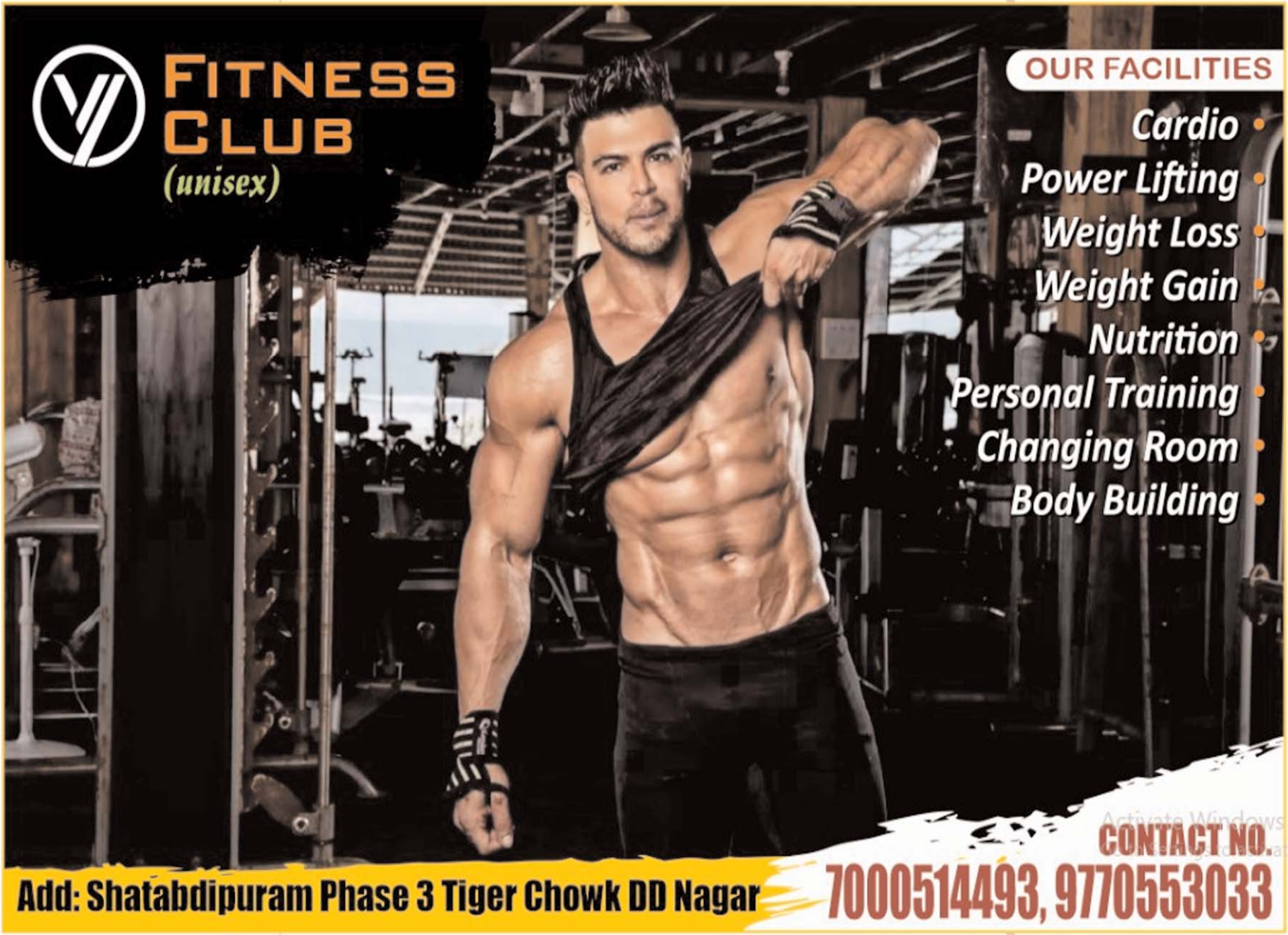

FITNESS
CLUB
(unisex)
OUR FACILITIES
Cardio
Power Lifting
Weight Loss
Weight Gain
Nutrition
Personal Training
Changing Room
Body Building
CONTACT NO.
7000514493, 9770553033
Add: Shatabdipuram Phase 3 Tiger Chowk DD Nagar

पुष्पांजली

जनकल्याण फाउंडेशन

बेटी आगे बढ़ेगी, तो देश आगे बढ़ेगा
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, समाज को प्रगति के रास्ते ले जाओ

जिस घर में होता है बेटी का सम्मान वह घर होता है स्वर्ग समान

पुष्पांजली जनकल्याण फाउंडेशन से जुड़े सभी साथियों को नूतन वर्ष 2022 की

हार्दिक शुभकामनाएं

कार्यालय :- जी एस प्लाजा गोले का मंदिर ग्वालियर मध्यप्रदेश

हेल्पलाइन: 0751-4050784, वाट्सएप: 9425665944

Website :- www.pushpanjalijkfoundation.com, Email :- pushpanjalijkfoundation@gmail.com

DHOLERA

India's First Greenfield Smart City

SPECIAL CHRISTMAS OFFER

DHOLERA NEAR BY RESIDENTIAL PLOT

Bulk Quantity

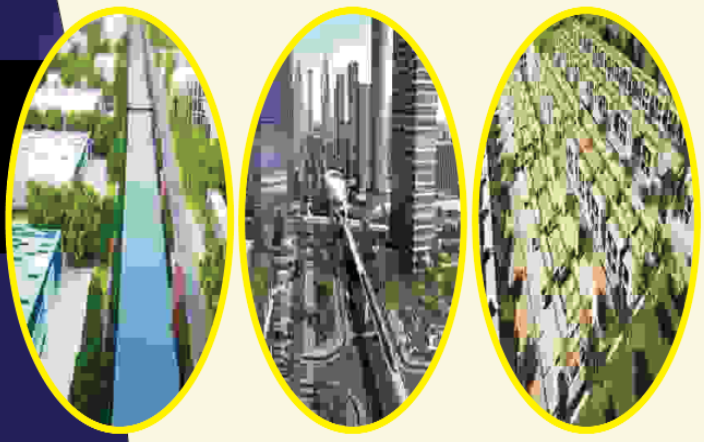

PURCHASE 10 PLOTS

GET FREE - 3 PLOTS

Somya Proparty

90 sq. Yard SBA
(810 SQ. Ft)

Plot Only 1.5 Lack

Mob. 9713253992
Mob. 6269453267

कार्यालय - 101 जे.एस, कॉम्पलेक्स, रीजनल पब्लिक स्कूल के पास सूर्य मंदिर रोड, गोले का मंदिर ग्वालियर (म.प्र.) 474005

C.S. BHADORIYA
LABOUR SUPPLER & CONTRACTORE
छोटे सिंह भदौरिया
संचालक
Ranji Gandha Enclab, Gola Ka Mandir, Gwalior
CONT- 9755383340

MASTER INFRA LINK Pvt. Ltd.
AMIT BHADORIA, ANJANA BHADORIA
(Director) Supplier, Contractor
work in - Construction (Road, Building)
Optical Fiber (Jio, Airtel, TATA)
Address: C-124, Phase-I, Shatabeli Puram,
Near Glory Villa, Gwalior (Mp)
E-mail : - Contact@masterinfralink.com, webs- masterinfrolink.com
9111199005, 9755588777

ग्राम पंचायत लेपा, भिडौसा, सांगोली से
जनपद पंचायत वार्ड क्र. 25
जनपद सदस्य पद हेतु
सरल, सहज, शिक्षित, कर्मठ युवा प्रत्याशी
जनसेवक विपिन तोमर
(भिडौसा) धर्मचौक
जनसेवक
विपिन तोमर (भिडौसा धर्मचौक)
मो. 9713253992
सुपौत्र- श्री नरेन्द्र सिंह तोमर
(बाबा नारायण दास)
सुपुत्र- श्री लाखान सिंह तोमर
नेता नही सेवक चुने
जन्मभूमी की सैवा
का मौका दें
विपिन तोमर

ब्रम्हाणी हॉस्पीटल
अपील :
कोरोना अभी गया नहीं है कृपया मास्क जरूर लगाएं
गाइडलाइन का पालन करें
अपने आसपास स्वच्छता रखें,
सतर्कता ही बचाव है।
सर्वसुविधाजनक
विशेष सुविधाएं
* 24 घण्टे मेडीकल ऑफीसर एवं एन.एल.सी. सुविधा उपलब्ध
* आधुनिक गहन चिकित्सा कक्ष (आईसीयू) एवं वेंटिलेटर, वाईपेप, सी. पेप।
* स्ट्रोक यूनिट फालिस के मरीजों के लिये।
* न्यूरो सर्जरी एवं न्यूरोलॉजी की सुविधा
* सर्व सुविधायुक्त ऑपरेशन थियेटर
* महिलाओं से संबंधित सभी तरह के ऑपरेशन एवं सुरक्षित प्रसव की सुविधा
डॉ. ब्रजेश सिंह राजपूत
(संचालक)
महावीर सिंह भदौरिया
ब्राह्मणी सिविल टेक प्राइवेट लिमिटेड
अपील : कोरोना से बचाव के लिए मास्क लगाकर रखें, सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें, घर में रहें स्वस्थ रहें।
माँ वैष्णोपुरम, गदाईपुरा ग्वालियर मध्य प्रदेश
7354900036, 8889437489